पुस्तक मिलने का पताः—

१—गुप्ता एण्ड कम्पनी टोहाना, एस० पी० रेलवे

२—बड़े २ नगरों के पुस्तक विक्रेता ।

मुद्रक—

कृष्णा प्रिंटिङ्ग प्रेस,

चर्खे वालान,

देहली ।

* भूमिका *

अच्छे और बुरे

नेक और बद, पापी तथा धर्मात्मा, न्यायी और अन्यायी दयालु तथा क्रूर, सच्चे और झूठे मनुष्य किसी विशेष जाति या विशेष देश में ही नहीं होते, किन्तु प्रत्येक जाति तथा देश में दोनों प्रकार के मनुष्य होते हैं, इस समय विद्यमान हैं, तथा भविष्य में भी होते रहेंगे। किसी देश वा किसी जाति का नवीन से नवीन तथा प्राचीन से प्राचीन इतिहास अवलोकन कीजिए, उसमें सैकड़ों हजारों उदाहरण इस प्रकार के मिलेंगे जो मेरे इस कथन की पुष्टि करेंगे।

हिन्दुओं का सब से प्राचीन इतिहास रामायण है, इसमें विशेषतः दो जातियों का वर्णन है। जिनमें एक का नाम आर्य्य दूसरी का राक्षस है। आर्य्य के अर्थ श्रेष्ठ और राक्षस के अर्थ अधर्मी तथा भ्रष्ट चरित्र हैं। महाराजा रामचन्द्रजी आर्य्य जाति के थे तथा रावण राक्षस जाति से था। यद्यपि राक्षस का अर्थ उपरोक्तानुसार अधर्मी तथा भ्रष्ट चरित्र है, परन्तु इसी राक्षस जाति में नहीं, राक्षस देश मे नहीं, राक्षस नगर में नहीं,

किन्तु राक्षसों के उसी वंश में उसी वीर्य से जिससे कि रावण जैसा अन्यायी तथा भ्रष्ट चरित्र-पुरुष उत्पन्न हुआ, विभीषण जैसे ईश्वर भक्त तथा धर्मात्मा मनुष्य का अवतार हुआ, परन्तु दोनों की प्रकृति में पृथ्वी आकाश का भेद दोनों का आचार व्यवहार एक दूसरे के बिल्कुल प्रतिकूल, विभीषण रावण को उसके कुकर्मों से रोकता है, जिसका परिणाम यह होता है कि उसको अत्यन्त निरादर तथा अपमान के साथ न केवल घर से न केवल लङ्का से वरन् अपने राज्य से ही निकाल दिया जाता है।

हिन्दुओं की दूसरी ऐतिहासिक पुस्तक महाभारत है, जिस में कौरव तथा पांडव के युद्ध का वर्णन है। इस युद्ध का वास्तविक कारण हिन्दू जाति के बच्चे २ को मालूम है जिसके पुनः वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। इस भयंकर रक्त पात का कारण महाराजा धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन था, जो कौरव वंश में था, जिसने अपनी चालाकियों और प्रपंचों तथा ऐयारियों से अपने सगे ताऊरे भाई अर्जुन की स्त्री को द्यूत क्रीडा में जीत लिया और भरी सभा में उसको वस्त्रहीन करने का घृणित प्रयत्न करता था। इसी दुर्योधन का सगा भाई विकर्ण उसको इस पापवृत्ति से रोकता था, अतः उसको भी वही फल मिला जो रावण द्वारा विभीषण को प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनास्थल राजस्थान में पृथ्वीराज और

जयचन्द प्रताप तथा मानसिंह के ऐसे २ किस्से मौजूद हैं जिनसे विदित होता है कि जयचन्द पृथ्वीराज का तथा मानसिंह प्रताप का अन्त तक प्राणघातक शत्रु बना रहा और शक्ति भर कोई उपाय उनको नष्ट करने का न छोड़ा। यद्यपि वह न केवल स्वजातीय थे, वरन् परस्पर सम्बन्धी भी थे।

गुरु गोविन्दसिंह जी आनन्दपुर दुर्ग में यवन सेना का सामान कर रहे हैं, औरङ्गजेबी सेना चहुं ओर से दुर्ग को घेरे हुए है, खाद्य पदार्थ जितने भी दुर्ग में थे, सब निपट चुके थे, भूख से दुखी होकर केवल ४२ सिक्खों के अतिरिक्त सब ने गुरु जी का साथ छोड़ दिया, ऐसी दशा में गुरुजी ने विपत्ति देखकर अपनी माता श्रीमती गजरी को अपने दोनों सुकुमार पुत्रों जोरावरसिंह व फतेसिंह सहित अपने प्राचीन रसोइया गङ्गाराम ब्राह्मण के साथ उसके मकान को भेज दिया, जिसके कि दुर्ग टूटने पर माता जी तथा बच्चों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। कुछ जवाहरात तथा धनमार्गव्यय तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपनी माता को दे दिया, गङ्गा तीनों को अपने साथ अपने घर ले गया। बच्चों का तो कहना ही क्या, दिन भर की थकी मांदी माता जी भी सो गईं, कृतघ्न तथा बेईमान गंगू ने सब धन अपने अधिकार में कर लिया तथा प्रातःकाल उठ कर चोर २ का हल्ला कर दिया, माता जी समझ गईं कि चोर आदि कोई नहीं आया,

यह सब माया इसी की है, एक दो बात गँगू से पूछी तो झट बिगड़ पड़ा कि यह मेरी सेवा का आपने बहुत अच्छा पुरस्कार दिया, इस प्रकार दुःख तथा कष्ट सहे, राजकीय अपराधियों को अपने घर में शरण दी, अब इसका यह पुरस्कार मिला है, कल को यदि कोई भेद खोल दे तो मैं तो सपरिवार मरवा डाला जाऊं, मुझे यह शुभचिन्तकपन नहीं चाहिये, जितना नहाये उतना ही फल पाये, मैं स्वयं ही जाकर थाने में सूचना दे देता हूं। अस्तु उसने थाने में जाकर सूचना देकर उनको पकड़वा दिया।

दोनों बच्चों का पंजाब प्रांतीय कचहरी में विचार हुआ। काज़ियों से परामर्श किया गया, वहां केवल या तो इस्लाम धर्म ग्रहण करो, अथवा प्राणों से हाथ धोने के सिवा कोई न्याय था ही नहीं, अतः दोनों से पूछा गया कि इसलाम चाहते हो अथवा मृत्यु; उत्तर मिला मृत्यु। दो पठान जिनके पिता का गोविंदसिंह ने युद्ध में बध किया था उनको कहा गया कि तुम्हारे पिता के हन्ता के पुत्र तुम्हारे अधिकार में दिये जाते हैं तुम स्वेच्छानुसार उन्हें मार कर अपने मृतक पिता का बदला लो। शेर दिल पठान उत्तर देते है कि हमारे मृतक पिता को इनके पिता ने मारा है न कि इन अनाथ बालकों ने, हम यदि बदला चुकायेंगे तो इनके पिता से तथा वह भी रणक्षेत्र में, न कि अनाथ निर्दोष बालकों से जो न केवल शस्त्रहीन हैं वरन् जिनके पैर भी

शृंखलाओं से बंधे हुए हैं। यह बदला नहीं किंतु कायरता तथा लज्जाजनक कार्य है। इस पर चारों ओर से दोनों पठानों की वीरता तथा बालकों की निर्भीकता की पूरी २ प्रशंसा होने लगी जो सूबाध्यक्ष सरहिंद को क्रोधानल में घी का काम कर गई और उसने दोनों बालकों के वध की आज्ञा दे दी, नवाब शेरमुहम्मद खां रईस वालिये रियासत मालेरकोटला ने कहा कि इन लघुवयस्क बालकों का क्या दोष है, जिसका दोष है, उसको दण्ड देना उचित है, अच्छा हो यदि इन्हें स्वतन्त्र कर दिया जाये। सम्भव है सूबा सरहिंद नवाब के परामर्श को मान लेता और दोनों निर्दोष बालक बच जाते मगर दीवान सचानन्द ने जो वहीं बैठा हुआ था। तथा जिसकी गोबिन्दसिंह के वंश से शत्रुता थी कहा कि सर्प मारना तथा उसके बच्चों का पालन करना बुद्धिमानों का काम नहीं क्योंकि भेड़िये का बच्चा अन्त में भेड़िया ही होगा। सूबा सरहिंद तो बहाना ढूंढ हो रहा था, तत्काल आज्ञा दी कि दोनों बालकों को जीवित ही दीवार में चिनवा दिया जाय, सुतरां ऐसा ही हुआ।

उपरोक्त घटनाओं से मुझे अपने पाठकों पर केवल यह प्रकट करना है कि अच्छे व बुरे तथा नेक व बद मनुष्य न केवल जाति विशेष या एक देश में ही उत्पन्न होते हैं और न किसी दुष्ट मनुष्य के कर्मों का उसकी समस्त जाति को प्रति भू माना जा

सकता है, गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों को असहाय तथा निर्दोषजान कर दो मनुष्य उनके बन्धन मुक्त करानेकी प्रार्थना करतेहैं दोनों ही हिन्दू । क्या शेख सादीसाहब के कथन चूं अज क़ौमे यके बेदानिश करद न किरा मंजिलत मानद न मारा को दृष्टिगोचर करते हुये यह लोकोक्ति की जावे, क्योंकि दो हिन्दुओं ने गुरु गोबिन्दसिंहके पुत्रोंके बधका परामर्श दिया,इसलिये समस्त हिन्दू जाति या न्यूनसे न्यून ब्राह्मण तथा क्षत्रिय जाति घृणा योग तथा वध योग्य है, यदि दो चार काजियों ने हकीकतराय का वध करवाया तो समस्त यवन जाति घृणा के योग्य है, नहीं कदापि नहीं, मेरा ऐसे विचार वाले मनुष्यों से बिल्कुल मतभेद है,जिनका यह विचार है कि स्वधर्मावलम्बी पाप करता हुआ भी पापी नहीं या जो यह कहते हैं कि स्वधर्मावलम्बी को कोई कर्म करते अपनी आख से देख भी लो तो समझो कि यह तुम्हारे नेत्र का दोष है ऐसा मनुष्य किसी जाति अथवा देश की उन्नति करने के स्थान में अवनति कर देते हैं। सिद्धान्त तो यह है कि ऐसे मनुष्य सर्वदा अपने दोषों तथा पापोंको अपने तथा अपनेसामने तथा संसार के दोषों को अपने में गुप्त रखें, जिस से वह अपनी त्रुटियों का देखता हुआ किसी समय उनको सुधारने का प्रयत्न करे, न कि अन्य पुरुषों के दोषों को सामने रखते हुए उनका स्वभाव केवल दूसरों पर दोषारोपण करने तक ही रहजाय एक बात और वर्णन करने योग्य है जिसके बिना यह भूमिका अधूरी रह जाती है, वह यह कि जब और जहां राज्य प्रबन्ध

में धर्म सम्बन्धी बातें आवश्यक से अधिक रखदी जाती है, तो वहां प्रायः इस प्रकार की घटना घट जाया करती हैं जैसा कि पाठकों को इस प्रकार के आगामी पृष्ठों से ज्ञात होगा। मिर्जा-अमीरवेग काजियों के मत से सहमत नहीं, नाजिम लाहौर हकीकतराय को मुक्त करना चाहता है, समस्त यवन (थोड़े से काजियों के अतिरिक्त उसकी निर्दोषता की शपथ खाते हैं) किंतु धर्म के ठेकेदारों ने किसी की बात न चलने दी, यहां तक कि तत्कालीन सम्राट शाहजहां को भी साहस न हुआ कि हकीकतराय वधिकों को प्रकट रूप से दण्ड देसके अस्तु युक्ति पूर्वक उन को दण्ड देकर मृतक हकीकतराय के संबन्धियों के आंसू पूछे। यह किस लिये ? केवल इस कारण से कि राज्य पर धर्म का आवश्यकता से अधिक आतंक छा रहा था और धर्म के ठेकेदार अपने मुख से निकले हुये वाक्यों को ईश्वरीय वचन से कम न मानते थे, अर्थात् दूसरे शब्दों में उनकी आज्ञा भंग करना ईश्वरीय आज्ञा को उल्लंघन करना था। किंचित मात्र भी किसी ने उनकी आज्ञा की अवहेलना की, तुरन्त उसके विषय में काफ़िर मुर्तद, विधर्मी, पिशाच आदि की उपाधि लगादि गई तथा नर्क के द्वार पर लेजाकर बांध दिया। परिमित पृष्ठ इतने पर्याप्त नहीं कि उस पर एक बृहत ग्रन्थ लिखा जा सकता है न केवल भारतवर्ष किंतु योरुप का इतिहास भी इन धर्म के ठेकेदारों की करतूतों से खाली नहीं।

मैंने इस पुस्तक के लिखने में न किसी धर्म का पक्ष लिया

तथा न किसी धर्म से प्रभावित होकर ही लिखा है किन्तु वास्तविक घटनाओं को एकत्र कर दिया है आशा है, जिन भावों से प्रभाविक होकर मैंने इस पुस्तक को लिखा है पाठकगण भी उसी भाव से यह पुस्तक पढ़ेंगे।

आपका सेवक—

यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी।

❀ ओ३म् ❀

संगीत हक़ीक़तराय

दृश्य १ सीन १

स्यालकोट में मुल्ला जी का मकतब

मुल्लाजी—तमाम लड़के हाज़िर हैं ?

मीर जमाअत—हां मियांजी सबके सब हाज़िर हैं।

मुल्लाजी—पहले खुदावन्द ताला की हम्द व सना में एक मनाजात पढ़ो फिर सबक़ पढ़ाऊंगा।

मीर जमाअत*—बहुत अच्छा मियांजी पहले मनाजात× कहलवाइये।

(मियांजी मनाजात पढ़ते हैं और पाछे २ तमाम लड़के बोलते हैं)

खुदावन्द मालिक कोनों मकां,
किये जिसने पैदा जमी आसमां।
वह मुनसिफ वह आदिल व क़ादिर अलीम,

---

*मानीटर×प्रार्थना।

वह बरतर वह आला रहीमो करीम।
वह खालिक वह राज़िक वह आला सिफ़ात,
है क़ब्ज़े में जिसके सभी कायनात।
वह अफ़ज़ल वह अकमल व आली जनाब,
बरोज़े क़यामत करेगा हिसाब।
वह अक़दस हैं मालिक है कोनों मकां,
किये अपनी रहमत के दरिया रवां।
हिदायत को उम्मत के भेजे रसूल,
क़यामत के दिन हो शफ़ाअत कबूल।
है हम्दो सना सब उसी पर तमाम,
उसी को है सिजदा उसी को सलाम।

मुल्ला--बोलो लड़को आमीन !

तमाम लड़के--आमीन, आमीन, आमीन।

[भागमल*का हक़ीक़तराय को लेकर दाखिल होना]

भागमल—आप के इस बरखुरदार को अपनी खिदमत में लीजिये, और इल्म की रोशनी से इसका दिल मुनव्वर कीजिये।

*भागमल हक़ीक़तराय के पिता का नाम।

मुल्ला–सुब्हान अल्लाह ! लायक वालदैन का यह पहला फ़र्ज़ कि औलाद को लिखा पढ़ा कर इस लायक बनाये कि वह अपनी रोज़ी खुद कमाने लायक हो जाये। लाला साहब इल्म का खज़ाना एक ऐसा मुस्तकि़ल और महफू़ज़ खज़ाना है, जिसका न चोर का खटका है, न डाकू का खौफ़—बस्ती होवे चाहे उजाड़ बेशक सोवे खुले किवाड़—तुरफा यह है कि दौलत जो जितना ही उसको खर्च करो उतनी ही घटती है मगर इल्म की दौलत जिस कदर खर्च करो उस से ज्यादा बढ़ती है। अलावा अज़ीं बेइल्म आदमी न तो अपने आपको जान सकता है न अपने खुद को पहचान सकता है, क्योंकि —

"बेइल्म नतवां खुदारा शिनख्त*"

भागमल—बिलकुल बजा है मियांजी आप का फ़र्माना (मिठाई का थाल और कुछ रुपये पेश करके) यह बच्चों के लिये कुछ मिठाई और आपके आजके पान तम्बाकूके लिए कुछ नजराना है, इसे कबूल कीजिए।

मुल्ला—(मिठाई का थाल अपनी तरफ खींच कर औररुपये

*बिना विद्या परमात्मा को नहीं जान सकते।

जेब में डालकर)सेठ साहब इस तकलीफ की क्या जरूरत है इसे तो रहने ही देते तो अच्छा था, क्योंकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंतो यह काम महज रिफा आम के लिये लिल्लाह करता हूं, वरना खुदा न ख्वास्ता मैं कोई रोटियोंसे तो भूखा नहीं मरता हूं।

भागमल—नहीं मियांजी! यहतो अच्छी तरह जानता हूं कि आपको किसी से लेने देनेकी ग़र्ज़ है मगर हमारा भी तो आपकी खिदमत करना फर्ज़ है, औरसचपूछो तो हम आपके अहसानका बदला देही क्या सकते हैं।

मुल्ला—साहब ज़ादे का क्या नाम है।

भागमल—हक़ीकतराय।

मुल्ला—आ बेटा हकीकतराय तुझे बिसमिल्ला कराऊं।

हक़ीकतराय (क़ायदा हाथ में लेकर) हाजिर हूं मियांजी।

मुल्ला—कहो बेटा बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हक़ीकतराय—बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुल्ला—कहो आलिम।

हक़ीकतराय—आलिम।

मुल्ला—बे, पे, ते, टे, से।

हक़ीकतराय—बे, पे, ते, टे, से।

मुल्ला—जीम, चे, हे, खे।

हक़ीक़तराय—जीम, चे, हे, खे।

मुल्ला—जाओ बेटा अपना सबक़ याद कर लो आगे फिर पढाऊंगा।

हकीकतराय—बहुत अच्छा मियां जी।

मुल्ला—तीसरी जमाअतके लड़को! सवाल लिखो, एक शख्स एक दिन में १५ कोस की मसाफ़त तै करता है तो बताओ, २५ दिन में कितना सफ़र तै करेगा। चोथी जमाअत के लड़को आओ अपना सबक़ पढ़ो।

लड़के—पढ़ाओ मियां जी।

मुल्ला—पढ़ोः—

थके दीदम आज अरसये रोदबार।
कि पेश आमदम बर पिलंगे सवार॥
चुनाँ हौल जां हाल बन मन नशस्त।
कि तरसीदनम पाय रफतन बिबस्त॥

हक़ीकतरात—मियां जी मुझे सबक पढ़ा दीजिये।

मुल्ला—और जो अभी पढ़ाया था।

हक़ीकतराय—वह तो याद कर लिया।

मुल्ला—सारा?

हक़ीकतराय—जी हां सारा।

मुल्ला—अच्छा सुनाओ।

हक़ीक़तराय-अलिफ, बे, पे, ते, टे, से, जीम, चे, हे, खे,

दाल, डाल, जाल रे, ड़े, ज़े, ज़े, सीन, शीन, स्वाद, ज़्वाद, तोये, ज़ोये, एन, गैन.. वगैरा २।

मुल्ला-(हैरान होकर)अरे हकीकत मैंने तो तुझे इतना सबक नहीं पढ़ाया था यह तूने कहां से याद कर लिया, क्या तू पहले घर पढ़ता रहा है ?

हकीकतराय नहीं मियांजी, घर पर तो मैंने कभी नहीं पढ़ा. मेरे पास बैठे हुये दूसरे लड़के पढ़ रहे थे, मैंने सुन २ कर सारा सबक याद कर लिया।

मुल्ला-शाबाश बेटा तू बड़ा होनहार और जहीन है, मुझे कामिल इतमीनान और पूरा यकीन है कि तू बहुत जल्द पढ़ जायगा। और इन्शा अल्ला ताला थोड़े दिनों में ही तरक्की के जीने पर चढ़ जायेगा। अब मकतब का वक्त हो चुका जाओ सबको छुट्टी।

तमाम लड़के—मियांजी सलाम, मियांजी सलाम, मियां जी सलाम।

मुल्ला-खुदाको सलाम, खुदाको सलाम, खुदा कोसलाम !

दूसरा दिन

मुल्ला-कल का सबक तमाम लड़कों को अच्छी तरह याद है ?

तमाम लड़के—हां मियांजी याद है।

मुल्ला-अच्छा खड़े होजाओ और अपना * कलका सबक

सुनाओ। (एक लड़के को इशारा करके) मुम्ताज़ अली, बता यह क्या लफ्ज़ है।

मुम्ताजअली—कौनसा मियां जी।

मुल्ला—अबे जो मेरी दो उंगलियों के दर्मियान है।

मुम्ताजअली—दायें हाथ की उंगलियों के या बायें हाथ की।

मुल्ला—अबे उल्लू, जो हाथ मेरा किताब पर है उसकी उंगलियों के दर्मियान।

मुम्ताजअली-(मुल्ला के हाथ की उंगलियां टटोल कर) मियां जी! आपके हाथ की उंगलियों के दर्मियान तो कोई लफ्ज नहीं।

मुल्ला—अबे गधे मेरी उंगलियों के दर्मियान किताब पर जो लफ़्ज है वह बता।

मुम्ताजअली—मियांजी यह किताब किस की है।

मुल्ला—करमईलाही की।

मुम्ताजअली—तो मियां जी जिसकी किताब है उसी से पूछिये, दूसरेकी किताब के लफ्जों का मुझे क्या पता

मुल्ला—(धक्का देकर) चल नालायक दूर हो। नूरउद्दीन तू आ।

नूरउद्दीन क्या इर्शाद है।

मुल्ला—तुझे कल का सबक याद है।

नूरद्दीन-बिलकुल।
मुल्ला-बता यह मेरी उंगलियों के पास क्या है।
नूरद्दीन-अंगूठा।
मुल्ला—अबे अंगूठे के बच्चे, यह क्या लफ्ज है।
नूरद्दीन—कौनसा मियां जी।
मुल्ला—जिस पर मैंने उंगली रक्खी हुई है।
नूरद्दीन—यह गोल २ मियां जी।
मुल्ला-हां यह गोल गोल।
नूरद्दीन—मियां जी रोटी होगी।
मुल्ला-चल बूदम बेदाल, रोटीका बच्चा, इल्मुद्दीन तू आ
इल्मुद्दीन—इर्शाद जनाब।
मुल्ला—ला अपनी किताब
इल्मुद्दीन—लीजिये मियां जी।
मुल्ला—सुना अपना सबक़।
इल्मुद्दीन—आबे ज़र।
मुल्ला—इसके माजी कर।
इल्मुद्दीन—मियां जी मानी तो मुझ को आते नहीं।
मुल्ला—कल जो तुझको बताये थे।
इल्मुद्दीन—किसनें बतलाये थे।
मुल्ला-अबे हमने बतलाये थे या नहीं।
इल्मुद्दीन-हां मियांजी! आपने तो बतलाये थे।

मुल्ला—तो फिर तूने याद क्यों नहीं किये।

इल्मुद्दीन-मियांजी मैंने तो इसलिये याद नहीं किए कि कल भी मियांजी ने माने बतलाये थे आज भी मियां जी बतलायेंगे, किताब पढ़ना मेरा काम है मानी करना मियांजी का काम है।

मुल्ला-(कान पकड़ कर) अबे हरामखोर! तू हमेशा लहव व लअब में अपना वक्त बरबाद करता है, कभी अपना सबक भी याद करता है।

इल्मुद्दीन—हाय मियां जी मर गया।

मुल्ला-(लात मार कर) चल खर एक तरफ होकर मर, फहीमुद्दीन तू आ।

फहीमुद्दीन-हां मियां जी।

मुल्ला-तेरह और बीस कितनें हुए?

फहीमुद्दीन-सत्रह मियां जी।

मुल्ला-तेरी ऐसी की तैसी, अबे अहमक! बीस तो असल हैं तेरह इसमें और जमा किये, हो गये उलटे सत्रह?

फहीमुद्दीन-मियांजी यह तो बहुत लम्बा है, इतनी मीजान तो मुझे आती नहीं।

मुल्ला—अच्छा बता, दो और पांच कुल कितनें हुए।

फहीमुद्दीन—मियाँ जी मालूम नहीं।

मुल्ला–अबे गधे यूं समझ कि दो कबूतर तो हमने तुझे एक दफे दिये और ५ दूसरी दफे और चार तीसरी दफे तो कुल कबूतर तेरे पास कितने हो गये।

फहीमुद्दीन–(उगलियों पर गिन कर) मियांजी कुल तेरह कबूतर मेरे पास हो गये।

मुल्ला—लाहौल वला कुव्वत लानत तेरी शक्ल पर।

फहीमुद्दीन–मियां जी दो कबूतर आपने मुझे एक दिए और पांच एक, सात हुए और चार एक, सात और चार (उंगलियों पर गिन कर) आठ, नौ, दस ग्यारह और……

मुल्ला—अबे और के बच्चे बस ग्यारह हुए।

फहीमुद्दीन–मियांजी दो कबूतर मेरे पास पहले से मौजूद हैं उनको क्या बिल्ली खा गई।

मुल्ला—चल गधूस तू भी गधों की सफ में, कमालखां तू आ और अपनी किताब ला।

कमालखां—हाजिर हूं जनाब।

मुल्ला—सुना अपना सबक और खोल अपनी किताब।

कमालखां—करीमा बबख्शाए बरहालेमा।

कि हस्तम असीरे कमन्दे हवा।

मुल्ला—शाबाश क्या कहने कर इसके माने।

कमालखां–करीमबख्श बुरे हाल में है, ऐ मनीहा तू हस्ती है तुझे हया नहीं आती।

मुल्ला–नऊज़ बिल्ला ? अरे जाहिलों के गुरू घन्टाल. उधर बैठ अभी उतारता हूं तेरी खाल। अफ़जलबेग !

अफ़जलबेग—मियांजी सलाम अलेक।

मुल्ला–हमने तुमको कल फरमाइश की थी ? अपना सबक खूब घोट कर लाना याद है या नहीं ?

अफ़जलबेग–हां मियांजी आपके हुक्म की कल ही तामील की गई।

मुल्ला खूब घोट कर लाया है।

अफ़जलबेग—हां मियांजी खूब घोट कर।

मुल्ला—अच्छी तरह पक्का करके।

अफ़जलबेग—हां मियांजी अच्छी तरह पक्का करके।

मुल्ला—अच्छा सुना।

अफ़जलबेग—मियांजी मैं अपना सबक उठा लाऊं।

मुल्ला—कहां से।

अफ़जलबेग—वहीं जहां मैं बैठा हुआ हूं।

मुल्ला—आ लें आ।

अफ़जलबेग—(एक रकाबी आगे करके) लीजिये मियांजी, देखिये।

मुल्ला—(रक़ाबी पर से रूमाल हटाकर) अबे गधे के बच्चे यह क्या है ?

अफ़ज़लबेग—सबक मियां जी ।

मुल्ला—अबे पाजी यह कैसा सबक है ।

अफ़ज़लबेग–मियां जी कल जो आपने फरमाया था कि अपना सबक खूब घोटकर और पक्का करके लाना । चुनाचे मैंने घर जाते ही किताब को बारीक कतर कर कूंडी में डाल कर सोटे के साथ इतना घोटा इतना घोटा कि हमारा वह घिस गया कूंडी और सोटा, फिर उसको हँडियेमें डाला, चूल्हेपर चढ़ाकर खूब उबाला अच्छे मैं रात को बैठे २ थक गया मगर सबक देख लीजिये कच्चा है या पक गया ।

मुल्ला–(झुंझला कर) अबे नामाकूल मजहुल ! उल्लू के पट्ठे गधे की झूल ! ! कर शिताबी, उठा यहां से अपने सबक की रकाबी* ।

---

*यहां से आगे कुछ घटनायें हकीकतराय के विवाह तथा शिक्षा के विषय में हमने विस्तार भय से छोड़ दी है, क्योंकि उनका असल किताब से कोई विशेष सम्बन्ध न था ।

दृश्य १ सीन २

वही मकतब

मुल्ला—तमाम लड़के खड़े हो जाओ और अपना २ सबक सुनाओ।

लड़के—हाज़िर हैं मियां जी।

मुल्ला—इलमुद्दीन सुना अपना सबक़ कल का।

इल्मुद्दीन—आवे ज़र पानी का सोना।

मुल्ला—अबे उल्लू! पानी का सोना नहीं सोने का पानी आगे चल जहालत की निशानी।

इल्मुद्दीन—कफ़ेदस्त।

मुल्ला—इसके मानी भी कर।

इल्मुद्दीन—(सर खुजाता हुआ) चुप।

मुल्ला—अबे कुन्दये नातराश, तेरा जाये सत्यानाश तूने मेरा बड़ा खून पिया, तीन दिनों में एक सबक या नहीं किया।

इल्मुद्दीन—(गर्दन खुजला कर) मियां जी किया था।

मुल्ला—किया था तो फिर मर इसके मानी तो कर।

इल्मुद्दीन—(खामोश)

मुल्ला—अबे जाहिल कफ के माने क्या हैं।

इल्मुद्दीन—बलगम मियांजी।

मुल्ला—लाहौल वला कुव्वत! अरे नाहिजार तुझ पर खुदा की मार, हकीकत तू बतला।

हकीकत—हथेली।

मुल्ला—शाबाश, फहीमुद्दीन तू बतला दस्त के मानी।

फहीमुद्दीन—पतला पाखाना।

मुल्ला—तोबा २ हत्त तेरा खाना खराब, हकीकत तू बतला

हकीकतराय—दस्त के मानी हाथ।

मुल्ला—लगा इन गधों के एक २ लात, चल आगे पढ़।

इल्मुद्दीन—सरेमन··सरेमन··सरेमन··सरेमन।

मुल्ला—सरेमन तो सुन लिया अब आगे मर इसके कुछ मानी भी कर।

इल्मुद्दीन—सर के मानी··सर के मानी··सर के मानी

मुल्ला—कमालखाँ तू बता।

कमालखाँ—मन भर का सर।

मुल्ला—तेरी ऐसी की तैसी, हकीकत कर इसके मानी।

हकीकतराय—मेरा सर।

मुल्ला—बिल्कुल सही, अरे जाहिलो अब भी समझे या नहीं।

इल्मुद्दीन—हां मियां जी समझे।

मुल्ला—क्या समझे ?

इल्मुद्दीन—हकीकत का सर।

मुल्ला—अरे अहमक हकीकतराय का सर नहीं, मेरा सर।

इल्मुद्दीन—बहुत अच्छा आपका सर।

मुल्ला-(झुँझला कर) ओ बेतमीज़ शैतान ! इतनी खुल गई तेरी जबान ? पकड़ अपने कान।

इल्मुद्दीन—(कान पकड़ कर) नहीं मियांजी मैं भूल गया आपका सर नहीं है बल्कि मेरा।

मुल्ला—हां यूं मर और सीधी तरह मानो कर हकीकत तू आ और इसके मानी बता।

हकीकतराय—फरमाइये मियांजी ?

मुल्ला—शनीदम कि मरदाने राहे खुदा,
दिल दुश्मनां हम न करदन्द तङ्ग।
तुरा कय मयस्सर शवद ईं मुकाम,
कि बादोस्तानत खिलाफस्तो जङ्ग।

हकीकतराय—मैंने सुना है कि खुदा के रास्ते के मरद यानी खुदा तर्स इन्सान दुश्मनों का दिल भी तङ्ग नहीं करते, यानी अपने दुश्मनों को भी नहीं सताते तुझको यह मुकाम यानी दर्जा कब मयस्सर होसकता

है, क्योंकि तेरा दोस्तों के साथ ही लड़ाई और झगड़ा है।

मुल्ला—जिन्दाबाद ! इसके मानी कर—

तू पाक बाशबिरादर मदार अज कस बाक।
कि जिनन्द जमाये नापाक रा माजरां बरसंग॥

हक़ीक़तराय-ऐ भाई तू पाक यानी सच्चा रह और किसी से मत डर क्योंकि नापाक कपड़े को ही धोबी पत्थर पर मारते हैं।

मुल्ला—मरहबा इसके मानी कर—

रास्ती मूजिबे रजाये खुदास्त।
कस नदीदम कि गुम शुद अज राहे रास्त॥

हक़ीक़तराय-सच्चाई खुदा का खुश नूदी का बाइस है, मैंने किसी को नहीं देखा कि सीधे रास्ते गुम होगया हो

मुल्ला-जजाकअल्लाह ! इसके मानी कर—

राहईं अस्त रू अज तरीकत मताब।
बिनह गाम कालें कि ख्वाही बयाब॥

हक़ीक़तराय-सीधा रास्ता यह है कि सचाई से मुंह न फेर इस पर कदम जमा और जो मकसद तू चाहता है हासिल कर।

मुल्ला-(लड़कोंसे मुखातिब होकर)अरे बेहयाओ जरा इधर

तो आओ, कुछ शर्म करो अगर गैरत है तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो, देखा एक हिन्दू लड़का कैसी दकीक फारसी के कथा सलीस बामुहावरा बिलतशरीह मानी कर रहा है, और तुम्हें एक मामुली से लफ्ज के मानी करते हुए रोना पड़ रहा है। (ऊपर को देखकर) ओहो जुहर की नमाज पढ़ने का वक्त होगा. मैं नमाज पढ़ने जाता हूं। और अभी वापिस आता हूं। तमाम लड़के अपना २ सबक पढ़ते रहें ऐसा न हो कि एक दूसरेसे लड़ते रहें और बजाय पढ़ने के दङ्गा करते रहें।

(मुल्ला चला गया)

कम्मइलाही—यार फहीमुद्दीन! तमाम दिन बैठ २ कमर टूट गई पढ़ते २ आंख फूट गईं, मुश्किल से उस इजराईल से कुछ देर के लिये छुटकारा हुआ है। आओ जरा दो चार छलांगें लगायें, खेलें कूदें और दो घड़ी अपना दिल बहलायें।

फहीमुद्दीन—बिलकुल ठीक है और अबतो छुट्टी का वक्त भी नजदीक है, डालो सुसरी किताबों को भाड़ में।

तमाम लड़कों का गाना

आओ २ दोस्तो खेलेंगे हम तुम मैदान में,

पहला लड़का—मुश्किल से मुल्ला दफ़ा अब हुआ है।
अल्लाह ने हमको मौका दिया है॥

तमाम लड़के—वाह २ आजाओ सारे चौगान में।
ओहो, गये मियांजी अगले जहान में॥ आओ...

दूसरा लड़का—चूल्हे में डालो यह तख्ती व बस्ता।
उछलो व कूदो लो जंगल का रस्ता॥

आओ २ खुशी के सामान में।
क्यों पड़े रंज गम के मकान में॥

तमाम लड़के—ओहो आओ ऐ दोस्तो......

तीसरा लड़का—जावे जहन्नुम में मुल्ला व मकतब।
पल भर न ठहरें हम तो यहां अब॥

तमाम लड़के—वाह वा आई है जान जान में।
डालो किताबें जुजदान में॥ ओहो ओहो...

चौथा लड़का—लिखेंगे पढ़ेंगे तो होगी खराबी।
खेलें कूदें तो मिलेगी नवाबी॥

तमाम लड़के—वाह२गाड़ेंगे झंडे तूफानमें॥आओ आओ

हकीकतराय—(सबक याद करता हुआ):—

(शेर) अगर रोजी बदानिश बरफ़ुजूदे,
जिनादां तङ्ग तर रोजी न बूदे।
बनादां आं चुनां रोजी रसानद,
कि दानां अन्दरां हैरां बिमानद।

अगर रोजी अक्ल पर ही होती तो नादानसे ज्यादा तंग रोजी वाला यानी बेरिज्क कोई न होता, नादान को (वह खुदा) इस तरह से रोजी पहुंचाता है कि अक्लमंद उसमें हैरान हो जाता है।

फिवरतहुसैन—जब तमाम लड़के खेल रहे हैं तो हकीकत क्यों पढ़ रहा है क्या इसे बुखार चढ़ रहा है। इसे भी साथ मिलाओ, अगर हील हुज्जत करे तो दो चपत लगाओ वरना आते ही मियांजीके कान भरेगा और हमारी उल्टी सीधी शिकायत करेगा।

अजीमुद्दीन—सुबह दो लफ्जों के मानी बताकर इस का दिमाग ही आसमान पर चढ़ गया, इस ने समझ लिया कि मैं ही सब कुछ पढ़ गया।

फ़हीमुद्दीन—अब भी तो इसका यही मतलब है कि दो चार लफ्जोंके माने याद करलूं, फिर तमाम लड़कों के दो

चार चपत लगा कर अपना दिल शाद करलूं।

फ़ितरतहुसैन—क्यों बे हक़ीकृत ! जब तमाम लड़के खेल रहे हैं तो तू क्यों पढ़ता है।

हक़ीक़तराय—शौक़ से खेलें तुम्हें मना कौन करता है।

फ़ितरहुसैन—नहीं तुझे भी हमारे साथ खेलना पड़ेगा।

हकीकतराय—मैं नहीं खेलूंगा मियांजी आकर लड़ेगा।

फ़ितरतहुसैन—मियांजी लड़ेगा तो सबको लड़ेगा न कि तुझ अकेले को "हमां या रां दोज़ख, हमां यारां बहिश्त।

अलीमुद्दीन—बिल्कुल ठीक है 'मर्ग अम्बाहजेरतेदारद'"

हक़ीक़तराय—यह भी कोई ज़बरदस्ती है मैं नहीं खेलता।

फ़ितरतहुसैन—अरे मियां तू इसको गर्दन से पकड़ कर क्यों नहीं धकेलता।

अलीमुद्दीन—(हक़ीक़तराय का हाथ खींच कर) तू हमारे साथ क्यों नहीं चलता, क्या खेलते हुए भी तेरा दम निकलता है।

हक़ीक़तराय—अलमुद्दीन ! तुम मुझे ख्वाह म ख्वाह तंग न करो वरना दुर्गाभवानी की कसम है मियां जी से तुम्हारी शिकायत कर दूंगा।

फ़ितरतहुसैन—ऐसी की तैसी तेरी उस दुर्गा भवानी हराम जादी की जिसकी तू कसम खाता है काफ़िर कहीं का जमाने सिर पर चढ़ता आता है।

हकीकतराय—जरा जबानको संभालो और दुर्गाभवानीकी शान में ऐसे बेहूदे कलमात न निकालो, वरना कोई नया गुल खिल जायेगा और इस बद जबानी का मजा मिल जायेगा।

तमाम लड़के—हरामजादी, हरामजादी, हरामजादी जौनसा तुझे गुल खिलाना हो खिलाले और जितना जोर लगाना हो लगाले।

हकीकतराय—बेहतर है कि अपनी जबानको काबू में कीजिये वरना यही अल्फाज अपनी फातमाके लिये समझलीजिये

फितरतहसैन—तैश में आकर अरे काफिर बदजात रसूलजादी की शान में ऐसे बेहूदा कलामात।

हकीकतराय—यह एक मुसल्लिमा बात है कि अपनी इज्जत अपने हाथ है, अगर तुम दूसरोंके बुजर्गोंको अहतराम करते हो तो गोया अपने बुजुर्गों को नेक-नाम करते हो, बरखिलाफ इसके अगर तुम दूसरोंके बुजुर्गों को शाइस्ता अलफाज में याद करते हो, तो दूसरे लफ्जों में खुद अपने बुजुर्गों की इज्जत बरबाद करते हो:—

चाहता है गर कोई दुनिया में अपना नेक नाम,
उसको वाजिब है करे वह दूसरों का अहतराम,

गालियां दे दूसरों को और फिर चाहे इनाम,
उसको चाहिये समझले गुम्मद में है मेरा क़याम,
बोलना चहिये वहां पर समझ कर इन्सान को,
वरना जो बोलेगा वह सुनना पड़ेगा कान को,

फ़ितरतहुसैन-देखते हो क्या खड़े बस पकड़लो शैतान को,
नोंच लो इसकी जबां ले जाओ कब्रिस्तान को,
इस क़दर जुरअत बढ़ी है एक मुश्ते खाक की,
मार कर सुरमा बनादो हड्डियां नापाक की।

तमाम लड़के-(हक़ीक़तराय को मारते हुए)क्यों बे मुरतिज बेदीन! तेरा सत्यानाश, खुन मक़बूल की दुख्तर नेक अख्तर की शान में ऐसी बेहूदा बकवास! काफ़िर जब बोले जब कुफ़्र ही बोले।

इल्मुद्दीन—पकड़ लो कान से।

फ़हीमुद्दीन—मार दो जान से।

कमालखां—फोड़ दो बेईमान का भेजा।

फ़ितरतहुसैन—खालो काफ़िर का कलेजा।

मुल्ला-(आकर)-अरे अख्शान उश्शया तीन!. यह क्या ऊधम मचाया है कैसी महशर बरपा कर रक्खी है?

हक़ीक़तराय-(रोता हुआ)मियांजी तमाम लड़कों ने मार मार कर मेरा सत्यानाश कर दिया।

फ़ितरहुसैन—और तूने न सिर्फ हमारा बल्कि तमाम मुसलमानों का कलेजा पाश २ कर दिया।

मुल्ला—क्या बात है करो बयान सच २ सामने हमारे।

फ़ितरहुसैन-अजी हजरत ! इस बेईमान ने रसूलजादी को गाली निकाली, हम सिर्फ आप के खौफ से खामोश रहे वरना इसे जान से मार देते।

इल्मुद्दीन-बेशक अगर आप का खौफ़ न होता तो इस का सिर उतार देते।

मुल्ला—हैं ! रसूलजादी को गाली ?

फ़ितरहुसैन-जी हां जनाबआली ! रसूलजादी को गाली!!

मुल्ला-क्यों हक़ीकत क्या सच है यह बात जो कि इन लड़कों ने कहीं सामने हमारे ?

हक़ीकतराय-मियांजी पहले फितरतहुसैन दुर्गाभवानी की शान में मुंह आया बकता रहा, मगर मैं फिर भी इसके मुँह की तरफ तकतारहा, जब दुबारा तिबारा वही लफ्ज़ कहा गया तो फिर मुझ से भी खामोश नहीं रहा गया, मैंने बेशक फातहा को गाली दी लेकिन पेशकदमी इन्होंने की।

फ़ितरतहुसैन-बस हजरत या तो हमारा इन्साफ कीजिये, वर्ना हमारा सलाम लीजिये। इसकी साहूकारी से

इसे गर्ज होगी या आपको, हमइसको समझें न इसके बाप को। आपके पास पढ़ने आये हैं न कि एक काफिर से गालियां खाने, और अपने पैगम्बरों की इज्जत उतरवाने।

मुल्ला—मगर हकीकत की जो शिकायत है इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है ?

फितरतहुसैन–(लड़कों से) चलोरे चलो काजीके पास यहां कैसा इन्साफ है, मियाँजी खुदही इस्लामके खिलाफहैं।

मुल्ला-क्योंबे हकीकत के बच्चे ? तेरा अगरकुछ तनाजा था तो साथ लड़कोंके, क्योंदी तूनेगाली रसूलजादीको ?

हक़ीक़त–मियांजी इनका अगरकुछ झगड़ाथा तोमेरे साथ था, इन्होंने पहिले दुर्गाभवानी को गाली क्यों दी।

मुल्ला····(गाना बहर कव्वाली)

अरे बीबी को गाली दे, हुई जुअरत यह काफर को,
यह इतमीनान रख दिलमें नजिन्दा जायगा घर को।
कहां वह जात अकदस और कहां वह खाक की मुट्ठी,
है क्या निस्बत भला बीबीसे इक नाचीज पत्थर को।
लगगये इस तरह से कुफ्फार के गर हौसले बढ़ने,
आज कोसा है बीबी को तो कल कोसे पैगम्बर को।

अभी तक तो खुदा का फ़ज़्ल है इस्लाम के शामिल,
फ़ना करदें जरा सी देर में सारे शहर भर को।
कहर नाज़िल अभी हो जाये तुझपर और तेरे घर पर,
अगर मुंह से पुकारूं एक दफ़े अल्लाह अकबर को।
तुझे किस हौसले पर यह हुई जुरअत अरे मुशरिक,
नहीं तू जानता शायद मुसलमानों के खंजर को।
चखाता हूं मजा तुझको तेरी इस बद जबानी का,
करूंगा पेश काजी के कटाऊंगा तेरे सर को।

नाटक

अरे काफ़िर नाहिन्जार ! तूने क्यों की ऐसी बेहूदा गुफ़्तार तूनेतो सारे इस्लाम की इज्जत खाक में मिलादी कहां एक नाचीज पत्थर का बुत और कहां मुहतरिम रसूलजादी ! "चेनिस्बत खाक रा बाआलमे पाक" शुक्र कि इन्होंने अपने गुस्से को थामलिया और ज़रूरत से ज्यादा जब्त से काम लिया, वर्ना अजब नहीं था कि तेरी यह नापाक जबान हलक से निकालते, या तुझ को जान से ही मार डालते।

हक़ीक़तराय का गाना (बहर कव्वाली)

खुदा ही जानता है कौन मोमिन कौन काफ़िर है,
हरएक इन्सान अपनी समझमें अफ़जल व बरतर है,
हर एक को अपना दीन और मजहब प्यारा है,

किसी का कोई हादी है किसी का कोई रहबर है ॥
हमारी और तुम्हारी मन्जिले मकसूद वाहिद है ॥
जोहै माबूद मुसलिम का वही हिन्दू का दिलवर है ॥
बताते आप बुत पत्थर का जिस दुर्गा भवानी को ॥
नजर में आपकी पत्थर मेरी नजरों में ईश्वर है ॥
फकत है फेर लफजों का असलियत एक है लेकिन ॥
महादेव हिन्दुओं का जो वही अल्लाह अकबर है ॥
मुबारिक आप को होवे मुहब्बत दीन अपने की ॥
मुझे अपना धर्म प्यारा जान अपनी से बढ़कर है ॥
मदीना और काशी यह नुकामाते मुकद्दस हैं ॥
न वह स्थान ईश्वर का न वह अल्लाह का घर है ॥
यहां पत्थर वहां पत्थर न पत्थर से बचे तुम भी ॥
वहां पर संगे असवद ह यहां पर सङ्गमरमर है ॥

नाटक

इस पर भी अगर पेशकदमी मेरी तरफसे हुई हो ता बिलाशक मेरा कसूर, और जो सजा आप दें मुझे मंजूर, जिन्होंने बारबार इश्तआल दिलाकरमेरे जजबातको भड़काया उनको तो आपने बेकसूर ठहराया औरतमाम इलजाम मेरे ही जिम्मे लगाया, आपको ऐसा नहीं चाहिये,

बल्कि इस मामले पर अच्छी तरह गौर फरमाइये जो कसूर वार हो उस को सजा का मस्तुजिब ठहराइये।

मुल्ला-चुप रह पलीद ! अरे काफ़िर-जादे, तेरी यह जुअरत कि एक पत्थर के बुत की हिमायत में इतने मुसल-मानों के मौजूद होते हुये रसूलज़ादी को गालियां सुनादे ! इस जुर्म का खामियाजा तू अकेला ही नहीं उठायेगा, तू कत्ल होगा और तेरे मां बाप को जेल खाने भेजा जायगा, । शेख शादी शीराजी रहमतुल्ला अलेह का कौल :—

जनाने बारदार ऐ मर्द होशियार।
अगर वक्ते विलादत मार जायन्द ॥
अजां बहतर ब नज़दीके खिरदमन्द।
कि फरजंन्दान नाहमवारी ज़ायन्द ॥

चूंकि तेरे कसूर के वह भी एक हद तक जिम्मेवार हैं, इस लिये तेरे साथ ही वह भी सजा के सजावार हैं :—

कि वल्दुद जिन्होंने औलाद ऐसी नाहिन्जार।
है यह वाजिब कर दिया जाये उन्हें भी संगसार ॥
ताकि ऐसी आइन्दा औलाद ही पैदा न हो।
चोर को मारो न उसके मार दो मां बाप को ॥

हकीक़तराय–ज़हे किस्मत ! अगर तक़दीर में इसी तरह लिखा है और परमेश्वर को इसी तरह मंजूर है, तो सरे तसलीम खम है जो मिज़ाजे यार में आये" उसके हुक्म के आगे सिर हिलाने की किस की मक़दूर है, मगर इन्साफ़ इसी को कहते हैं, अदालत इसी का नाम है ?–

धन्य इस इन्साफ़ को और धन्य हज़रत आपको।
जुर्म तो बेटा करे और क़ैद हो मां बाप को ॥
गर अदालत आप जैसे मुन्सिफों के हाथ है।
चँदरोज़ा चाँदनी आखिर अँधेरी रात है ॥

मुल्ला—लड़को ले जाओ इस नजिस को सामने हमारे से और करो बन्द बीच एक कोठरी के और लगा दो कुफ्ल एक मजबूत आगे उसके, ताकि जाये न भाग ये पाकर मौका, करूंगा इसको पेश काजी के और दिलाऊंगा इसे तहक़ीक़ सजाये मौतः—

हो गया मुजरिम ये साबित देखली मैंने किताब
बन्द करदो कोठरी में इसको ले जाकर शिताब ॥
पेश काजी के करूंगा सख़्त दिलवाऊं सजा।
मिलेगा इस्लाम की तौहीन का इसको मजा ॥

तमाम लड़के–(हक़ीक़त को चारों तरफ से घेर कर) चल बे शैतान ? वरना अभी निकाल देंगे जान, अ

धुला कहां है तेरी दुर्गा हराम जादी जिसने तेरी जान मुसीबतमें फँसादी।

हकीकतराय—परमेश्वर का खौफ करो और उसके कहर से डरो। अरे बेदरदो ! तुमबेशक मेरे जिस्मके टुकड़े२ करदो मगर इस बदजुबानी और दरीदा दहानी से बाज आओ और मुझको एक बेबस और बेकस समझ कर अपनी ताकत का जोम न दिखाओ, क्योंकि शेख सादी साहब का ही यह कौल है:—

तिर्स अज आहे मलहूमां कि हँगामे दुआ कर्दन,
इजाबत अजदरे हक बहरे इस्तकबाल मी आयद।

लड़के—(धक्के देकर) चल, चल आगे हो अब यहां खड़ा अपनी किस्मत को न रो।

दृश्य २ सीन १

भागमल का मकान

×कौरां—गाना

आज मेरा लाड़ला मकतबसे पढ़कर आयेगा।
आयेगा घर में तो रोशन मेरा घर हो जायेगा
दिलन चाहताथा कि पलभर नजरसे ओझलकरू'।
बिन हकीकतराय मेरा कौन दिल बहलायेगा॥
है मगर उसकी उम्र कुछ लिखने पढ़ने की यही।
इस वक्त को पढ़ना उसके काम आगे आयेगा॥
अहा अबतो उसकी छुट्टी का समय भी होगया।
अब मुझे वह चांदसो अपनी शक्ल दिखलायेगा॥
मैं बलायें लूंगी उसकी गोद में अपनी बिठा।
मैं करूंगी प्यार वह अपना सबक बतलायेगा॥
*लक्ष्मी बेटी तू जा जल्दी से कर पानी गरम।
आते ही मेरा हकीकतराय पहले न्हायेगा॥
सुबह से बैठी हुई हूं मुन्तजिर दहलीज में।
क्या खबर वह और कब तक इन्तजार करायेगा॥

×हकीकतराय की माता का नाम *हकीकत की स्त्री का नाम

मामता मां की भी है कैसी बनाई राम ने।
देख लूं जब तक न उसको कुछ न मुख को भायगा

नाटक

छुट्टी का वक्त आगया मगर मेरा हकीकतराय अभी तक मकतब से नहीं आया, आज वह जबसे मकतब में गया है मेरादिल बुरी तरहसे बेचैन हो रहा है, कहीं दूर नहीं गया वही मकतब जहां हर रोज पढ़ने जाता है, मगर राम जाने आज मेरा दिल क्यों घबरा रहा है बाहर दिल नहीं लगता घर खाने को आरहा है। दिल यही चाहता है कि अपने हकीकत को हरवक्त छाती से लगाये रक्खूं, और एक पल के लिये भी आंखों से दूर न करूं, हाय २ मां की मामता भी ईश्वर ने क्या बनाई है।

ईश्वरदास—(घबराया हुआ) चाची जी! चाचा जी घर हैं या दुकान पर?

कौरां—वह तो अभी तक घर नहीं आये, तुम्हें मकतब से छुट्टी हो गई।

ईश्वरदास—हां मकतब से छुट्टी हो गई।

कौरां—तो मेरा हकीकत अब तक कहां रहा?

ईश्वरदास—क्या बताऊं कि हकीकत कहां रहा, चाचाजी को दुकान परभी देखआया, मगर वह वहां भी नहीं

मिले जल्दी बताओ कि उन्हें कहां ढूंढूं ?

कौरां-(हैरान होकर) बेटा ईश्वर जल्दी बताओ यह क्या मामला है, तेरा चहरा उड़सा क्योंरहा है मेरा हक़ीक़तराय खैरियत से तो है ?

ईश्वरदास—खैरियत कैसी भाई हकीकत तो मौतके मुंह में आ गया।

कौरां—(छाती में दुहत्तड़ मार कर) हाय मैं! मर गई, बेटा जल्दी बता मेरे हक़ीक़त पर क्या मुसीबत पड़ गई, मेरा इकलौता लाल किस बला में गिरफ़तार हो गया मेरे कलेजे के टुकड़े को किस जालिम की नजर खा गई ?

ईश्वरदास-चाचाजी! आज मकतब के मुसलमान लड़कों और भाई हक़ीक़त में कुछ तकरार होगया, आखिर बढ़ते २ बात का बतंगड़ा और राई का पहाड़ हो गया। मसलमान लड़कों ने दुर्गा भवानी को गाली दी, भाई हकीकत के मुंह से उनकी फातहा की निस्बत वही लफ्ज निकल गया, बस फिर क्या था उन्हें तो रोने के लिये धूंये का बहाना मिल गया, पहले तो मार २ कर दिल के बुखारात निकाले और फिर कर दिया मियां जी के हवाले। उन्होंने भी मुसलमान लड़कों

का कहा माना और बजाय इन्साफ करने के भाई हकीकत को ही मुजरिम गर्दाना, और उसकी मुश्कें बांध कर कोठरी में कैद कर दिया, कल को बड़े काजी का फातवा साथ शामिल करके उसको हाकिम के रोबरू पेश किया जायगा।

कौरां (गाना बतर्ज—कैसा गजब है)

तक़दीर फूटी, किस्मत ने लूटी, गर्दिश ने मारी पछाड़।
दिल पर हैं आरे, सर पर हमारे, टूटा है गमका पहाड़ ॥
इसी नगर में किसी से किया न वैर विरोध।
क्या कारण जो कर रहा मुल्ला इतना क्रोध ॥
बैठे बिठाये बस्ते बसाये हम को रहा क्यों उजाड़।
तक़दीर फूटी......

पूंजी सारी उमर की यह इकलौता लाल।
बिन कसूर बच्चा मेरा होगा हाय हलाल ॥
ऐसा जब्र हो, क्योंकर सब्र हो, डालूंगी सीस को फाड़।
तकदीर फूटी......

आंखों से अंधी हुई दिल पर चले कटार।
हाय लोगो मैं लुट गई आज सरे बाजार ॥

रोऊं चिल्लाऊं, किसके पास जाऊं गिरती खाये पछाड़ ।
तकदीर फूटी······

जो मैं ऐसा जानती ये मुल्ला यमदूत ।
मक़तब मैं नहीं भेजती कभी मैं अपना पूत ॥
पैरों पे मारी खुद ही कुल्हाड़ी, खुद ही लिया घर बिगाड़ । तकदीर फूटी······

नाटक

हाय २ अब क्या करूं ? किधर जाऊं, किससे कहूं, किसको बुलाऊं, ? मेरा दिल आज पहले ही घबरा रहाथा चित्तमें खुद ब खुद ही एक ख्याल आ रहा था एक जा रहा था। मुझे क्या खबर थी कि मेरी बेचैनी यह रंग लायेगो, और ऐसी मनहूस खबर सुनने में आयगी । हाय मेरे कलेजे का टुकड़ा, मेरी आंखों का प्यारा, मेरे बुढ़ापे की डंगोरी, मेरी जिन्दगी का सहारा, मेरा प्यारा मेरा दुलारा हक़ीकत जालिमों के हाथ से यूं मार खाये, लेकिन बेदर्द मुल्ला को जरा भी रहम न आये ? हाय २ मगर सामने होती तो अपना कलेजा फाड़ कर वहां आतों का ढेर कर देती, बेटा ईश्वर तू जल्दी जा और कहीं से अपने चचा को ढूंढ कर ला ।

ईश्वरदास—चाची जी मैं अभी चाचा जी को ढूंढ कर

लाता हूं आप घबरायें नहीं, रोने धोने से कुछ नहीं बनेगा, अगर मियां जो नहीं तो हाकिमतो सुनेगा।

चला गया

लक्ष्मी—हैं, माता जी! आप क्यों रो रही हैं, क्यों इस क़दर परेशान हो रही हैं? अभी तो आपने मुझे पानी गरम करने के लिये भेजा था, मैं तो आग सुलगा रही थी कि आप के रोने का शब्द कान में पड़ा, क्या बात है खैर तो है।

कौरां-बेटी खैर कैसी मेरे बुढापे और तेरे सुहाग के सूरज को ग्रहण लग गया।

लक्ष्मी-हैं, हैं, माताजी आपने क्या कहा, मेरा तो दम ठिकाने नहीं रहा, आखिर मामला क्या है।

कौरां-बेटी मामला क्या है, तक़दीर का घाटा है और अपनी जड़ोंको अपने हाथ से काटा है। न हक़ीक़त को पढ़ने बिठाती, न ये मुसीबत आज हम पर आती। ब्याज के लालच में मूल भी खाबैठी यानी पढ़ाई के लोभ में अनपढ़ से भी हाथ धो बैठी और सब कुछ लुटा कर बिल्कुल कंगाल हो बैठी।

लक्ष्मी—माता जी आप की बातें सुन कर मेरी हैरानी

बढ़ रही है, ये किस्मा क्या है, मकतब मदर्सों में तो तमाम दुनियां ही पढ़ रही है

कौरां—तमाम दुनियां का क्या कहना है, ये तो अपनी २ प्रारब्ध का लहना है। जिस मुल्ला को हमने घर खिलाया, उसी ने मेरे हकीकत के लिये मौत का हुक्म लगाया।

लक्ष्मी—मौत का हुक्म ? ये क्यों !

कौरां—कहते हैं कि मकतब के लड़कों से हकीकत की कुछ तकरार हो गई बढ़ते बढ़ते आपस में गाली गुफ्तार हो गई, मुसलमान लड़कों ने दुर्गाभवानी को गाली निकाली उधर हकीकत ने उनकी फातहा कोस डाली। मामला मुल्ला के पेश हुआ तो उसने भी हकीकत को मुजरिम करार कर दिया और उसके लिये मौत का हुक्म देकर हमें जीते जी मार दिया।

लक्ष्मी (गाना)

हाय अचानक कैसा सदमा पड़ा जिगर पर हाय २,
कितने दिन हुये घर से लाये कब सुहाग के लाड लडाये,
कितने शगुन मनाये हाय ! हाय अचानक···
हाथौं की नहीं मंहदी छूटी, पैदा होते ही किस्मत फूटी,
रोऊँ किस दर जाय हाय ! हाय अचानक···

आई थी किस बुरे मुहूरत, दिल भर के नहीं देखी सूरत,
चल दिये पांव चुराय हाय ! हाय अचानक···
मुझे बताकर कोई ठिकाना, दिलचाहे फिर जिधरकोजाना,
कौन उमर कटवाय हाय ! हाय अचानक···
तुम बिन सारा जगत अँधेरा, न मैं किसी को न कोईमेरा,
धीरज कौन बंधाये हाय ! हाय अचानक...
मैं दुखियारिन दीन अभागन कितनेदिन रह चुकी सुहागन
सब सुख धूल मिलाये हाय ! हाय अचानक···

नाटक

कौरां—मत रो मेरी लाडली, मत रो मत परेशान हो, मत अपने प्राण खो, अभी तक मामला मुल्ला के हाथ है, अगर वह मान जाय तो क्या बड़ी बात है। तेरे सुहाग पर से सब कुछ न्यौछावर कर दूंगी, यहां तक कि अपने सिरकी चादर मुल्ला के कदमों में धर दूंगी, घर बार लुटा दूंगी अपना सर कटा दूंगी अपना सर्वस्व नाश करा लूंगी, मगर जिस तरह भी हो सकेगा तेरे सुहाग पर आंच न आने दूंगी।

(भागमल का रोते व सिर पीटते हुये आना)

भागमल—लुट गया-लोगो मैं लुट गया।
कौरां-ऐ तुम तमाम दिन न मालूम कहां फिरते हो कुछ

घर बार की खबर है, मकतब में जाकर जरा अपने हकीकत की तो खबर लो।

भागमल—मकतब में हो आया और ब तेरा मुल्ला की जान को रो आया।

कौरां—फिर उसने क्या कहा ?

भागमल—बहुतेरी खुशामदें करलीं, मगर नहीं मानता, ऐसा तोताचश्म हो गया गोया हमें बिल्कुल ही नहीं जानता। यही कहता है कि अगर तुम अपनी बेहतरी चाहते हो तो हरगिज मेरे पास न आओ, ऐसा न हो कि हकीकत के साथ ही तुम भी धरे जाओ चूंकि यह दीन मजहब का मामला है, इसलिये इस में दखल न देने में ही तुम्हारा भला है।

कौरां—क्या जरूर सज़ा देगा ?

भागमल—अगर सिर्फ सजा ही देता तो भुगत लेते, जो कुछ दण्ड चट्टी करता भर देते, मगर वह तो हमारे सब अहसान भूला बैठा है और हकीकत की जान लेने पर तुला बैठा है।

कौरां—(सिर पीट कर) हाय हाय क्या मेरे घर का चिराग़ यूं गुल हो जावेगा और मेरी गोद का खिलौना मेरी आंखों के सामने मौत की गोद में सो जायगा।

भागमल (गाना)

कैसी बुरी तरह से क़िस्मत ने आज मारा।
मिटने को है जहां से नामो निशां हमारा॥
यह पाप किस जनम का आगे हमारे आया।
मेरी प्रारब्ध ने घर से मुझे उजाड़ा॥
किस २ का तरफ़ देखूं किस २ को दूं तसल्ली।
तीनों को जिन्दगी का था एक ही सहारा॥
थी उम्र भर का मेरी बस एक ही कमाई।
इसके ही आसरे से था कर रहा गुज़ारा॥
भेजा था मदरसे में पढ़ने को इल्म बेटा।
ऐसा पढ़ा कि हम से ही कर गया किनारा॥
मैं आप दो पिसर को मकतब में छोड़ आया।
निज पाँव पर है मारा मैंने ही ख़ुद कुल्हाड़ा॥
निरोग भागमल का क़िस्मत का डूबा सूरज।
गरदिश में आ रहा है तक़दीर का सितारा॥
अबतक न कुछ खबर थी मुझको चढ़े छिपे की।
बैठा जहां वहीं पर दिन खो दिया है सारा॥

(भागमल व कौरां के रोने पीटने की आवाज सुनकर मोहल्ले के मर्द औरतों का जमा हो जाना।)

दीनदयाल–भागमल जी ! सुख तो है ? क्यों रो रहे हो, किस लिये इतने व्याकुल हो रहे हो ?

भागमल–चौधरी जी क्या बताऊं, मेरी किस्मत फूट गई और मेरे बुढ़ापे की डंगोरी हाथ से छूट गई।

दीनदयाल–जरा चित्त टिकाओ, आखिर कोई बात तो बताओ ?

भागमल–कुछ बात हो तो बताऊं, आज मुल्ला जी की अदम मौजूदगी में मकतब के लड़कों ने हकीकत के साथ कुछ झगड़ा डाल दिया, उन्होंने दुर्गा भवानी को गाली दी उसने उनकी फातमा के लिये कुछ मुंह से निकाल दिया। मियां जी आया तो उस पर भी मज़हबी जनून सवार हो गया, और बजाय इन्साफ करने के मुसलमान लड़कों का तरफ़दार हो गया, और हकीकत की जान लेने को तैयार हो गया।

दीनदयाल–फिर क्या हुआ दो चार थप्पड़ मार दिये होंगे उस्तादों की मार का गिला नहीं किया करते।

भागमल–चौधरी जी ? थप्पड़ों का कौन गिला करता है, मैं जानता हूं कि इस किस्म का दण्ड सैकड़ों दफा मिला करता है। इतना क्या अगर इससे भी

ज्यादा होता तो मैं अपनी क़िस्मत को न रोता, मगर उसने लड़कोंकी तकरीर को मज़हबी मुकद्दमा बना दिया और हक़ीक़त के लिये मौत का हुक्म सुना दिया।

दीनदयाल—हैं लड़कों की तकरार और मौत की सजा?

भागमल—हां मौत की सजा।

दीनदयाल-ऐसा क्या अंधेर मच रहा है, आखिर किसी का राजपाट भी है या नहीं।

रतनचन्द-चौधरी जी! इस बात को रहने दो, राजपाट का तो नाम ही न लो, इन काज़ी लोगों का राज पर कुछ ऐसा रोब छा रहा है, कि हर एक छोटा बड़ा इनके नाम से थर्रा रहा है, यहां तक कि बादशाह तक को भी कठपुतली की तरह नचा रहे हैं। वह वह कार्रवाइयां कर रहे हैं कि परमेश्वर की पनाह है, खास कर हिन्दू कहलाना तो इस जमाने में सब से बड़ा गुनाह है।

दीनदयाल-अगर यह बात सच है तो महा अनर्थ है, मगर रोना धोना तो बिल्कुल व्यर्थ है। अगर वह कहने सुनने से मान जाय तो चलो उसकी खुशामद

करलें मिन्नत समाजत से मानता हो तो उसके पैरों में सिर धरलें। अगर कुछ लालच करता हो तो भाई वह भी दे डालो, वक्त पड़े पर जिस तरह हो सके अपना काम निकालो।

भागमल—मैं अपना सारा जोर लगा चुका, तुम्हारे बगैर कहे सुने ही यह बातें आज़मा चुका, यानी मुल्ला के पास जा चुका, और अपनी सारी सरगुजिश्त सुना चुका। खुशामद करली पैरों में पगड़ी धरली दण्ड जुरमाना सब कुछ कबूला, मगर वह बेरहम अपनी जिद को न भूला।

दीनदयाल—आखिर क्या कहा।

भागमल—बस एक ही जवाब कि मेरे कुछ अख्तयार नहीं, क्योंकि रसूलजादी की तौहीन का मुजरिम बरूए शरै किसी नरमी या रिआयत का हकदार नहीं मैंने अपना फतवा तो दे दिया है, कल बड़े काजी के पेश किया जायगा और उसका फतवा और शामिल करके हाकिम के सुपुर्द कर दिया जायगा।

दीनदयाल—जब वह अपनी जिद पर बदस्तूर मौजूद है, तो अब उसके पास जाना बिल्कुल बेसूद है, रात

काढलो कल बड़े काज़ी के पास चलेंगे परमेश्वर ने चाहा तो इसका इन्साफ लेकर टलेंगे।

भागमल—अच्छा चौधरी जी! शायद आपके चरणों के प्रताप से ही मेरा लाल बच जाय, और मेरे घरका बुझता हुआ चिराग फिर बच जाय, वरना मैं तो बिल्कुल निराश हो बैठा, और अपने इकलौते लाल से हाथ धो बैठा।

दृश्य २ सीन २

काज़ी की कचहरी

काज़ी एक मुकल्लफ मसनद पर बैठा हुआ है, इर्द गिर्द शहर के दूसरे छोटे बड़े क़ाज़ी अपनी २ किताबें हाथ में लिये बैठे हैं, कचहरी का कमरा तमाशाइयों से भरा हुआ है, मुलजिमों के कटहरे में मज़लूम हक़ीक़तराय पा-बजोलां खड़ा हुआ है, इर्द गिर्द मुसल्लह सिपाहियों का दस्ता है

सरिश्तेदार—सरकार बज़रिये काज़ी मरहूमअली साहब मुअल्लम मकतब:—

बनाम

हक़ीकतराय वल्द भागमल जात खत्री उम्र ११ साल साकिन स्यालकोट जुर्म जेर दफ़ा बरूये शरे तौहीन मज़हब इस्लाम।

ब अदालत जनाब काजी मुहम्मद सुलेमान
साहब शाही मुफ़्ती दाम जिल्लकुम,

जनाब आली:—

कल जब कि फ़िद्वी बग़रज़ अदाय नमाजमकतबसे ग़ैरहाजिर था तो मकतब के लड़कों का आपस में कुछ तनाजा हो गया, जिसपर मुलजिम मजकूर ने निहायत बेबाकी और दीदा दिलेरी से हज़रत रशूलजादी की शान बेपायान में इन्तिहाइ फोहश कलामी से काम लिया,नीज फ़िद्वी के दर्याफ़्त करने पर हज़रत बीबी साहबा यग़फ़ूरा का निहायत हिकारत और बे ईज़ती से नाम लिया, चूंकि मुलज़िम मज़कूर से बरूये शरै मुहम्मदी सजाये मौत के जुर्म का इर्तिकाब हुआ है,लिहाज़ा बगरज हुसूलफतवा मुलज़िम को हाजिर अदालत करके मुल्तमिस हूं कि आंहजरत अपना फ़तवा सादिर फरमाकर मुलजिमको हाकिम शहर के सुपर्द फरमावें। नीज नियाजमन्द का यह अर्ज कर देना भी बे महल न होगा कि यह कमतरीन और आं हजरत मय दीगर

क़ाजियाने शहरके बहैसियत पेशवायान दीन इस्लाम इस मुकद्मे में मुद्दई खास हैं और दीगर अहले इसलाम मुद्दई आम, इसलिए आं हजरत की मुकद्दमे हजा में अपनी तवज्जह खास तौर पर मबजूल फरमानी चाहिये।

अ..............................जी

फ़िदवी क़ाजी महरमअली अफी अन्हा मुअज्जम

क़ाजी सुलेमान–इस मुक़द्मे के मुतालिक मुल्ला साहब का जो फ़तवा है वह भो पढ़कर सुनाओ।

सरिश्तेदार–"चूंकि मुलजिम हकीकतराय ने दी है रसूल जादी को गाली और की है तौहीन इसलाम की, लिहाजा देता हूं निस्बत में इसके फ़तवा सजायेमौत का। ऐ पर नहीं है किताब शरै की में कम इससे सजावास्ते इसके, नीजहै खतरा यह भी कि अगर न दी गई इसको सजा करारवाकई तोहो जायगा गल्बा कुफ़्फ़ार का ऊपर इसलाम के।'

तमाम काजी–(एक ज़बान होकर) बिल्कुल ठीक है मुल्ला साहिब का फ़तवा, यहतो बिल्कुल खफ़ोफ़ और कम से कम सजा है, अगर शरै कि किताब को बग़ौर और बिलतशरीह देखा जाय तो यह मुक़द्मा महज मुलजिम की ज़ात तक ही महदूद नहीं रहता, बल्कि

अपनी नौईत और मुलजिम के जुर्म के लिहाज से इसमें बहुत कुछ ईजादो की गुञ्जायश है।

काजी सुलेमान-हक़ीक़तराय ! क्या तेरा कोई सवाल है या तुझे जुर्म इकबाल है ?

हक़ीक़तराय-न इनकार है न इकबालहै, न किसीसे बहस है न किसी पर सवाल है, इकबाल इसलिये नहीं कि बिलकुल बे कसूरहुं, इनकार इसलिये नहीं कि मैं हर तरह माजूर हूं। एक काज़ी ने तो वह गुल खिलाया कि मुझको कज़ा के दरवाजे परला लटकाया। जहां चारों तरफ काजियों का हजूम है, वहां की निस्बत तो परमेश्वर ही को मालूम है हजरत मेरी गुस्ताखी मुआफ हो, मेरी इतनीही इलतिजा हैकि इस मुकदमे में पूरा पूरा इन्साफ हो:—

हजरत मैं अर्ज क्या करूं कि बे शऊर हूं,
खुद कीजिये इन्साफ मैं हाजिर हजूर हूं !
मुलजिम नहीं मुजरिम नहीं हूं व कसूर हूं,
इतना कसूर है कि मैं हिन्दू जरूर हूं।
होता है इस कसूर के बदले जो सर कलम,
हाजिर है सिर यह लीजिये किस्सा करो खतम।

काज़ी-क्या तूने रसूल जादी की शान में तौहीन आमेज

कलमान इस्तेमाल नहीं किये ?

हकीकतराय—किये और जरूरकिये लेकिन कब ? जबकि पहले मुसलमान लड़कों ने दुर्गा भवानीको गालियां देकर मुझे इश्तआल दलाया, उस वक्त बेशक मैं भी वही कलमा जबान पर लाया।

तमाम काज़ी—देखिये हज़रत ! बरसरे इजलास कर रहा है इसलामकी तौहीन, अबतो होगया जनाब को यकीन।

क़ाज़ी सुलेमान—जब तुझे अपने जुल्मपै खुद इकबालहै तो तेरे मुजरिम होने में क्या शक है।

हकीकतराय—मगर मुसलमान लड़कों को मेरी मजहबी तौहीन करने का क्या हक़ है।

क़ाज़ी—यहतो तेरा बिल्कुल फिजूल और ग़ैर मुताल्लिका सवाल है, (सरिश्तेदार से) लिखो मुजरिम को अपने जुर्म से इकबाल है।

तमाम क़ाज़ी—बस ठीक है बिल्कुल बजा है।

हकीकतराय—यह तो मुझको पहलेही उम्मेद थी जब अदालत ही मुलजिम के इस कदर बरखिलाफ है तो वहां कैसा इन्साफ है।

क़ाज़ी—बस जबान को बन्द करो वरना तौहीन अदालत का दूसरा मुकदमा और दायर हो जायगा।

हक़ीकतराय—पहले में ही कौनसी कम सजा मिली है जो दूसरे का वक्त आयेगा—

लूट नहीं घरसे ऊपर और जान से ऊपर मार नहीं।
तुम अपना शौक़ करो पूरा मुझे इससेभी इन्कार नहीं॥
क़ानून नहीं इन्साफ नहीं सरकार नहीं दरबार नहीं।
मुद्दई बना जब मुन्सिफ़ही वहां सुनताकोई पुकार नहीं॥
क्या सबूतदूं और किसकोदूं और किसपर कोई सवाल करूँ।
मैं मुजरिम सा बत होगया इन्कार चाहे इकबाल करूँ॥

क़ाजी—तेरी तर्ज गुफ्तगू से साफ जाहिर होता है कि तू आला दर्जे का जवां दराज है और परले सिरे का बेबाक है, इसलिये मुल्ला साहब के फैसले के साथ मुझे कुल्ली इत्तफाक है। इनका फतवा मञ्जूर और तेरे लिये मौत की सजा बहाल है।

तमाम काजी—बस ठीक है बिल्कुल बजा है।

हक़ीकतराय—

कराने के लिये इन्साफ इस दरबार में आये।
सरे तसलीम खम है जो मिजाजे यार में आ॥

काजी—इन्साफका तक़ाजा तो यहीथा मगर तेरी कमसिन मुझको रहम के लिये मजबूर करती है, तेरी जान बच सकती है और इसकी सिर्फ एक ही सूरत है।

तमाम काजी–बस हजरत आपका पहला फ़ैसला बिल्कुल ठीक है, अब इसमें मजीद तरमीम की क्या जरूरत है।

हकीकतराय–इन्साफ तो हो चुका अब रहम की बारी आई है, जान हर एक इन्सान को अज़ीज है, वह भी फरमा दीजिये कौनसी तजवीज है ?

काजी–वह तजवीज न सिर्फ़ तेरे लिये बचाव की तदबीर है, बल्कि तेरी जिन्दगी और आकबत के लिये एक आला तकसीर है। वह यह है कि तू अपने दिल की तारीकी को दूर करे यानी राह कुफ्र को छोड़कर मुसलमान होना मंजूर करेः—

कुफ्र का जो मैल है दिल से तेरे धुल जायगा।
आज ही तेरे लिये जन्नत का दर खुल जायगा॥
बदल जायेगा अगर तेरा कुफ्र इस्लाम से।
हम तो क्या कांपेगी इजराईल तेरे नाम से॥

तमाम काजी–यह भी बिल्कुल ठीक है बिल्कुल बजा है।

हकीकतराय–मुआफ कीजिये हजरत मैं आपकी इस इनायत से फायदा नहीं उठा सकता, हँस कभी कव्वे की खुराक नहीं खा सकता :—

अपने मजहब पै हर एक शख्स बहाल अच्छा है।
लाख नाकिस हो मगर घर का ही माल अच्छा है॥

मुझको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त सारी,
दिल को बहलाने को केवल यह ख्याल अच्छा है।

काजी-(तैश में आकर) अरे काफ़िर बेतमीज ! नापाक ग़लीज !! मलऊन शैतान !!! बालिस्त भर का लड़का और गज भर की जबान, अरे बेहया ! तू अपनी औक़ात को इतना भूल गया।

(हक़ीक़तराय के माता पिता का रोते पीटते आना)

भागमल-दुहाई है काजी साहब की दुहाई है।

काजी—यह कैसा शोर हो रहा है और कौन शख्स रो रहा है।

चोबदार—हजूर ! यह मुलज़िम के वालदैन हैं जो अपने बेटे की जुदाई से बेचैन हैं

काजी—बुलाओ उन कुफ्फार को, ताकि समझायें इस मुरदार को।

भागमल—काजी साहब आपकी दुहाई है, आपकी पनाह है मेरा बच्चा बिलकुल बेगुनाह है।

कौरा-(हक़ीक़तराय को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखकर) हाय हाय मेरे लाल, मैं किन आंखों से देखूं तेरा यह हाल ! मेरे बच्चे ! जिन हाथों में कल कङ्गना बंधा था आज उनको हथकड़ियों से जकड़ रक्खा है,

जिस लाल को किसी की नजर तक न लगने देती थी, आज उसे यमके दूतों ने पकड़ रखा है आह! जिस कलेजे के टुकड़े को दिन में दस२ दफे खिलाती थी चार२ दफे नहलाती थी, रातों बैठकर पंखा हिलाती थी ताकि मेरे हकीकत को कोई मच्छर न सताये, मेरे बछड़े को नींदमें बाधा न आये (कलेजे में मुक्का मार कर)हाय २ मेरे लाल ने तमाम रात भूखे प्यासे काल कोठरी में गुजारी, कलेजे की भट्टी जल रही है, जिगर पर छुरी चल रही है, आंखों में अन्धेरा छा रहा है, तमाम जहान सुनसान नजर आ रहा है, (हकीकतराय की तरफ बढ़कर) हाय मेरे बच्चेके मुंह पर कितनी गर्द पड़रही है, आ बेटा तेरा मुंह पूँछ दूँ।

क़ाजी–मक्कार औरत! क्या मक्र दिखला रही है, क्यों फैल मचा रही है, फिजूल वावेला बेफायदा बकवासमत आने दो इसको मुलजिम के पास।

सिपाही–(धक्के देकर) हट हट चुड़ैल, क्यों मचाती फैल।

कौरां—डरो डरो परमेश्वर से डरो, और इतना जुल्म न करो। मेरे जिगर का टुकड़ा है, मेरे पेट का अण्डा है नौमहीने तक अपने जिगर का खून पिलाया है, पाल

पोस कर इतना बड़ा किया है, इसकी जरासीबेकरारी से कई २ रातें आंखों में गुजार दीं, जरा उदास देखो तो खाना पीना हराम होगया, हाय२ आज मैं हाथ लगाने की भी हकदार नहीं रही, उठाकर नहीं ले जाती, कहीं छुपाना नहीं चाहती अगर आपका मुलाजिम है, तो मेरा भी बेटा है, नौ महीने पेट में और कल तक मेरी गोद में लेटा है, अगर जरा कलेजे से लगा लूंगी, तो क्या उठा लूंगीः—

उठाये दुख हजारों तब कभी यह लाल पाया था।
इसी के वास्ते अपना जिगर तब काट डाला था।
पिसर मेरा था लेकिन आजतुम उसको सम्भाले हो,
करो कुछ रहम आखिर तुम भीतो औलाद वाले हो।

क़ाज़ी—ज्यादा बकवास करने को क्या जरूरत है, हमने कह दिया कि इसके जिन्दा रहने की सिर्फ एक ही सूरत है। अब वह जाने और इसका काम, ख्वाह मौत कबूल करे ख्वाह इसलाम।

तमाम काजी—बस ठीक है बिल्कुल बजा है।

हक़ीकतराय–मत रो मेरी जननी! मत रो अपने कलेजेको थाम ले सब्र से कामले और परमेश्वर का नाम ले जहां सुनवाई न हो वहां फरियाद कैसी, जहांइन्साफ

न हो वहां याद कैसी। इन्हें अपनी मनमानी कार्रवाई करने दे और अपने ज़ुल्म के प्याले को अच्छी तरह भरने दे :—

फरियाद वहां पर वृथा है इन्साफ नहीं जहां दाद नहीं
कहना सुनना बेसूद जहां कानून नहीं मर्याद नहीं
वहां रहमकी ख्वाहिश नामुमकिनजिस जगहखुदाकीयादनहीं
यह हाल किया एक काजी ने और यहांतो कुछ तादाद नहीं
तू रो रो कर इनके आगे क्यों अपना मान गंवाती है।
तू तो क्या इनको आज के दिन नहीं नजर खुदाई आती है

कौरां—बख्शदे मेरे बच्चे की जान को बख्शदे अपने सदके अपने लाल के सदके अपनी जवानी के सदके अपनी जान और माल के सदके खुदा का वास्ता है रसूलकी दुहाई है, दुखिया भिखारिन तेरे दरवाजे पर भीख मंगने आई है तेरे आगे पल्ला पसारती हूं और तेरे टोपी वाले का सदका उतारती हूं। घर बार संभाल ले, धन माल सब अपने घर में डाल ले इस नगरी में रहूं तो तेरी गुनाह गार और जो कुछ तू कहे सो करने को तैयार, मगर जिस तरह हो सके मेरे बच्चे की जान बख्श दे।

काजी—अरी बुढ़िया जहर की पुड़िया ? तू मुझ को हराम

खाना सिखाती है और रिश्वत देकर अपने बेटे को छुड़ाना चाहती है ? अरी बे अक़ल ! जरा शऊर कर और इन ख्यालातों को दिल से दूर कर, अगर इस की जान बचाना चाहती है तो इसको मुसलमान होने पर मजबूर कर।

तमाम काज़ी–बस ठीक है बिलकुल बजा है, यह भी क़ाज़ी साहब की ख़ास नजर इनायत है जो तुम्हारे लिये इस कदर रियायत है।

भागमल–काज़ी साहब मेरी गुस्ताखी मुआफ़ कीजिये, महरबानी फर्माकर पहले इस मुक़द्दमे को साफ़ कीजिये खुदा ने आपको हकूमत अता की है यह तो ख्याल फ़रमाइये कि मेरे बेटे ने क्या खता की है।

काज़ी- खता ! अभी तुम को यह भी नहीं पता ! जो शख्स रसूलजादी की शान में बकवाश करे, वह अपने जिन्दा रहने की भी आश करे !

भागमल–हजरत ! बच्चों की क्या लड़ाई कैसी तकरार, सुबह को लड़े शाम को यार। इस पर भी पेश कदमी इसने नहीं की बल्कि पहले मुसलमान लड़कों ने दुर्गा भवानी को गाली दी।

काजी—अरे जाहिल। कहाँ एक फ़र्ज़ी नाम और वह भी

बे बुनियाद, और कहां बीबी साहिबा रसूल अल्लाह की औलाद ! :—

इन्हीं बातों पै तू अपने पिसर को नेक कहता है।
जो एक बुत को व बीबी फातमा को एक कहता है।

भागमल—मेरा आप के साथ बहस करना बेसूद है मगर जो आपकी नजरों में हकीर है वह मेरा माबूद है:-

है तुम्हें अख्त्यार उसको बुत कहो पत्थर कहो,
खाक मिट्टी कुछ कहो मिट्टी से भी बदतर कहो।
कौन कहता है तुम्हें वहां सिर झुकाने के लिये,
है जुल्म गर गालियां दो दिल दुखाने के लिये।

काजी—यह जाये-अदालत है न कि मैदाने मनाजरा अपनी बकवास बन्द करो, मेरे दोनों फैसलों में जो तुम्हें मंजूर हो पसन्द करो।

भागमल—(हकीकत से) बेटा हकीकत ! मेरी आंखों के उजाले ! तू मुसलमान होकर ही अपनी जान बचाले तू जिन्दा रहे मुसलमान ही सही, हमें कुछ सुख न देगा तो हमारे कुल का निशान ही सही:—

उठेगी आग दिल में देखकर तुझको बुझालेंगे,
तेरा मुख चूम लेंगे और कलेजे से लगा लेंगे।
मुसलमां तेरे होने से अगर इसलाम रह जाये,

तो इनका काम बन जाये मेरा भी नाम रह जाये ।

हकीकतराय—ऐसी जि दगी जो कुल के माथे पर कलंक का टीका साबित हो, परमेश्वर करे दुश्मनोंको भी न प्राप्त हो । मैं दुनियां के लिये धर्म को नहीं छोड़ सकता, मौत के खौफ से सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकता:—

मैं जिन्दा रहा तो आपके किस काम आऊंगा,
करूंगा फर्ज पूरा कौनसी खिदमत बजाऊंगा ।
बजाये सुख पहुंचाने के तुम्हें उल्टा जलाऊंगा,
यह बदनामी का टीका कुल के माथे पर लगाऊंगा ।
धर्म को त्याग कर जीना नहीं यह जिन्दगानी है,
इन्हें अमृत हो मुझको तो जहर यह मुसलमानी है ।

कौरां—बेटा ! तू कल का बच्चा किस जमाने की बातें कर रहा है, आजकल कैसा धर्म और किसका धर्म, अब तो वह जमाना है जिसमें धर्म का नाम लेना ही महापाप माना है, इन विचारों को दिल से दूर कर और जिस तरह काजी साहब कहें वही मंजूर कर ।

हकीकतराय—माताजी यह सख्त गलती है, और तू क्षत्राणी होकर के उलटे मार्ग पर चलतीहै, मैं ऐसी जिन्दगीका हरगिज रवादारनहीं बहिस्त तोक्या बहिश्त की बाद-शाहतभी मिलेतो भी अपना धर्म छोड़नेको तैयारनहीं

कौरां (गाना)

चाहे कुछ भी न रहे बेटा तेरी जान रहे,
फिर भी सब कुछ रहा तेरे अगर प्राण रहे।
तेरी खिदमत की नहीं मुझको जरूरत कोई,
सामने आंखों के हर वक्त व हर आन रहे।
एक ही लाल था और वह भी चला हाथों से,
मेरे जीने के बता कौन से सामान रहे।
छोड़ दे जिद को इसी में है भलाई सबकी,
हुक्म हाकिम भी रहे तुझ पै भी अहसान रहे।
तेरी दुलहन को मैं क्या कह के तसल्ली दूंगी,
कौनसा आसरा है जिसमें वह गलतान रहे।
कल की ब्याही को भला कैसे सब्र आयेगा,
खेलने हंसने के दिल में सभी अरमान रहे।
कोई सुख दुनियां का देखा नहीं विचारी ने,
कौन ले उसकी खबर कौन निगाहबान रहे।
मैं यह समझूंगी मेरा कुल का निशां बाकी है,
तू हकीकत न रहे अबदुलरहमान रहे।
ठोकरें खायेगा गलियों में जनाज़ा वरना,
किसी को मेरी शकल की भी न पहचान रहे।

हक़ीकतराय (गाना)

कोई परवाह नहीं जान रहे या न रहे,
जिन्दगी का कोई सामान रहे या न रहे।
हिन्दू रह कर ही जियें हिन्दू रह करके मरें,
हो गये जब कि मुसलमान रहे या न रहे।
कोई अफ़सोस नहीं धर्म पै गर मरता हूं,
चार दिन दुनियां में महमान रहे न रहे।
मुसलमां हो भो गया मरना तो फिर भी होगा,
जिस्म की कैद में ये प्राण रहे या न रहे
पूरे करने दे इन्हें हौसले दिल के अपने,
कल को यह काजी सुलैमान रहे या न रहे।
धर्म को छोड़ नहीं सकता मैं काजी साहब,
कोई इनसान महरबान रहे या न रहे।
दीन इस्लाम को चमकालो जमाने भर में,
हाथ में फिर यह शमादान रहे या न रहे।
आज है वक्त तेरा दिल में जो आये करले,
मुमकिन है कल तेरी शान रहे या न रहे।
तू रहे दुनियां में जिन्दा तेरी औलाद रहे,
मेरे मां बाप की सन्तान रहे या न रहे।

सामने अल्लाह के पहचानना होगा मुझको,
देखले फिर तुझे पहचान रहे या न रहे।

नाटक

भागमल—बेटा हक़ीक़त! मैं मानता हूं कि धर्म कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसको आसानीसे छोड़ दिया जाय कोई गिरी पड़ी या मामूली वस्तु नहीं जिसको लापरवाही से तोड़ फोड़ दिया जावे, परन्तु किया क्या जाये ज़माना नाज़ुक है वक्त ख़राब है ताक़त वाले का सबकुछ बनता है कमजोर पर सारा अताब है यहां तो छींके नाक कटती है, और तू धर्मकी माला रटता है। जैसा वक्त देखे वैसा काम निकाले, बावला न बन मुसलमान ही होकर अपनी जान बचा ले।

हक़ीकतराय—कुछ परवाह नहीं पिताजी! कुछ परवाह नहीं ज़माना नाज़ुक हो वक्त ख़राब हो, हज़ारों मुसीबतें हों लाख अज़ाब हों। एक धर्मही है जो इन मुसीबतों को पछाड़ सकता है, धर्ममें ही वह ताक़त है जो पाप को जड़ से उखाड़ सकता है मुसीबत हो तो धर्म की कसोटी है, यही तो सदाक़त की जान है, यहीं तो साबित क़दमी का इम्तिहान है, इसी जगह पर अस्ल और नक़्ल की पहचान है।

यूं कहने को तो सब ही धर्म को प्यारा बताते हैं।
लगे तकरीर करने तो ज़मी सर पर उठाते हैं॥
बहस में अच्छे अच्छों को सदा नीचा दिखाते हैं।
उछलते हैं अकड़ते हैं नहीं फूले समाते हैं॥
इधर के और उधर के सैकड़ों प्रमाण देते हैं।
मगर उनका धर्म है जो धर्म पर जान देते हैं॥

क़ाज़ी–नादान लड़के! क्यों जिद करता है और ख्वाह-मख्वाह हराम मौत मरता है। दीन इस्लाम की रोशनी से अपने दिल को मुनव्वर कर, एक खुदा को अपना माबूद और उसके रसूल को अपना हादी तसव्वर कर बहिस्त में जगह पायेगा और खुदा की हर एक रहमत का दरवाजा तेरे लिये खुल जायगा।

हक़ीकतराय–मुआफ कीजिए हजरत! मुआफ कीजिये, आप इसे हराम मौत कहते हैं मगर हक़ीकतके लियेतो यही हकीकी शहादत है, अपने धर्म की उलफत है, अपने परमेश्वर की इबादत है, अगर दिलको नूरानी या तारीकी का इस्लाम परही इनहिसार है, या बहिस्त और दोजख का इसी पर दारोमदार है तो गुस्ताखी मुआफ, बावजूद पैदायशी मुसलमान होने केभीआप के दिलमें वह नूर न हुआ और तो क्या यही मामूली

सा तअास्सुब का मर्ज भी दूर न हुआ। अगर इसी का नाम नूर इस्लाम है, तो मेरा तो इसे दूर ही से सलाम है, यह बहिश्त भी आपके लिये ही मुबारिक है, दूसरे की मदद का लिया हुआ बहिश्त हर हाल में हानिकारक है, क्योंकि :—

हक्का कि बा अकूबत दोजख बराबर अस्त।
रफ़तन बिपाया मरदिये हमसाय दर बहिश्त॥

क़ाज़ी—मैं तेरी तरफ नहीं देखता बल्कि तेरे इन बूढ़े मां बाप की तरफ़ देखता हूं, इनकी जईफी का और तेरी बीबी की नौजवानी का ख्याल आता है, सोच ले और सोच ले।

हक़ीकतराय—न मेरी तरफ देख, न मेरे मां बाप और बीबी की तरफ़ देख, अगर कुछ दिखाई देता है तो उस खुदा की तरफ़ देख :—

कि जिसके आगे जरूर एक रोज मेरा तेरा हिसाब होगा।
तू आज जितने सवाल करता है उतना ही लाजवाब होगा।
वकील होगी मेरी शहादत गवाह मेरा आफताब होगा।
किताब होगी यह तेरी खञ्जर कत्ल मेरा एक बाबहोगा॥
लहूके धब्बोंकी मिस्ल होगी मिस्ल पै नम्बर जुल्मके होंगे।
सुफह २ पर जबर सितमके निशान तेरी कलमके होंगे॥

क़ाज़ी—नाम तो तेरा हक़ीक़त ज़रूर है मगर दरअस्ल तू हक़ीक़त से कोसों दूर है न सीने में सदाक़त है न दिल में नूर है, अब भी कहदे कि मुझे मज़हबेइस्लाम मंज़ूर है वरना अदालत अपना फ़ैसला सुनाने पर मजबूर है:—

हक़ीक़त नाम है लेकिन नहीं समझा हक़ीक़त को।
तू उल्टा चल रहा है छोड कर राहे तरीक़त को।
कुफ़्रको छोड़दे और पाक करले अपनी नीयत को।
गुनाह धुल जायेंगे सब मान अहकामे शरीअत को।
यहां और आक़बत दोनों जहां में सुर्खरू होगा।
नहीं तो समझ ले तलवार होगी और तू होगा।

हक़ीक़तराय—न मुझे इस्लाम दरकार है न आपका शरीअत से वास्ता है, मैं जिस जगह खड़ा हूं मेरे लिये वही सीधा रास्ता है, सुनलो और फिर सुनलो कि धर्म जान के साथ है:—

तुम्हारे हाथ में खञ्जर यहां है आत्मिक शक्ति।
तुम्हारे पास जन्नत है यहां है राम की भक्ति॥
यह वह दिल है कि जिसमें जोत परमेश्वरकी है जगती
करो तुम लाख कोशिश जोंक पत्थरमें नहीं लगती॥

तुम्हें इतनी तो ताकत है कि मेरे सिर को उड़वादो
बहादुर तुमको मैं समझूँ धर्म मेरा जो छुड़वादो ॥

काजी (गाना बहर तवील)

है उसी वक्त तक तेरा यह हौसला,
तूने जब तक न देखी कजा की शकल।
आया जल्लाद तलवार जब सूंत कर,
आ जायेगा उसी दम ठिकाने अकल।
है उसी वक्त......

मौत वह चीज है कि जिसे देख कर,
अच्छे अच्छों के जाते हैं कसबल निकल।
यह हक़ीकत तेरी तो हक़ीकत है क्या,
तू रहा कौनसे हौंसले पर उछल।
है उसी वक्त......

भूल जायेगा बातें बनानी सभी,
जब खड़ी सामने दे दिखाई अजल।
सांस लेना भी दुश्वार हो जायेगा,
और घी की तरह जायेगा तू पिघल।
है उसी वक्त......

वक्त से पहले बातें बनाते सभी,

रोते देख हज़ारों बवक्ते कतल ।
मौत वह चीज है कि जिसे देख कर,
शेरनी का भी इसक़ात* होता हमल ।
है उसी वक्त...
रहम आता मुझे तेरे मां बाप पर,
हो गया होता वरना कभी का कतल ।
फैसला है अभी तक मेरे हाथ में,
जिन्दगानी के हैं तेरे दो चार पल ।
है उसी वक्त...
सोच ले सोच ले और फिर सोच ले,
वरना रोयेगा हाथों को अपने मसल ।
हाथ से तेरे मौका निकल जायगा,
बेवकूफी न कर बे अक़ल तू सम्भल ।
है उसी वक्त...
छोड़ जिदको न अपना हिमाकत दिखा,
मान अब भी खयालात अपने बदल ।
फैसला वरना मसूख होगा नहीं,
चाहे "यशवन्तसिंह" देवे आकर दखल ।
है उसी वक्त...

*गर्भपात

हकीकतराय (गाना बहर तवील)

क्या डराता है मुझको मियां मौत से,
तू हकीकत की समझा हकीकत नहीं ।
तेरा इस्लाम तुझको मुबारिक रहे,
मैं समझता यह राहे तरीकत नहीं ।
क्या डराता है......

मौत का खौफ बिल्कुल नहीं है मुझे,
और जन्नत की हूरों की हाजत नहीं ।
आये दिल में सो बेशक करो फैसला,
इन दिलासों की मुझको जरूरत नहीं ।
क्या डराता है......

आज अरमान दिल के निकालो सभी,
फिर मिलेगी यह अन्धी हकूमत नहीं ।
छोड़ जाना अधूरा न इस्लाम को,
वरना होगी तुम्हारी शफाअत नहीं ।
क्या डराता है......

सुर्खरू होके जाना यहां से जरा,
सामने रब्ब के हो निदामत* नहीं ।

* लज्जा

रह गई तेरी करतूत में जो कसर,
बख़्शे जाओगे फिर ता क़यामत नहीं।
क्या डराता है···

यह समझले कि है हज्ज अकबर यही,
और इस जैसी कोई इबादत नहीं।
बस यहां से गया और जन्नत मिली,
कोई देनी पड़ेगी शहादत नहीं।
क्या डराता है···

जल्द कर जल्द कर देर क्यों कर रहा,
हाथ आयेगी फिर ऐसी साअत नहीं।
तुझे जन्नत मिले धर्म मेरा बचे,
क्यों समझता इसे तू ग़नीमत नहीं।
क्या डराता है···

चाहे बच्चा हूं कमसिन हूं नादान हूं,
बात करने की भी तो लियाक़त नहीं।
जान देने की ताक़त है "यशवन्तसिंह"
पर धर्म छोड़ देने की ताक़त नहीं।
क्या डराता है···

कौरां (गाना बहर तवील)

लाल मेरे ज़रा देख मेरी तरफ़,
लाश गलियों में मेरी न बेटा रुला।
किस तरह से करूंगी हाय मैं सबर,
हाथ से चल दिया एक ही लाड़ला॥
लाल मेरे……

मेरी सारी उमर की कमाई था तू,
और तू ही मुझे यों दगा दे चला।
किस तरह से मैं सीने पै पत्थर धरूं,
देख किसको सबर आये मुझको भला॥
लाल मेरे……

मैंने तेरी कमाई की आशा तजी,
आतिशे ग़म से न मुझको बेटा रुला।
लाऊँ आखें कहां से मैं ऐसी बता,
जो बवक्ते क़त्ल तेरा देखें गला॥
लाल मेरे……

बाप मारेगा दीवार से टक्करें,
तू बुढ़ापा न मिट्टी में उसका मिला।
घर बिगानी आई राह देखे तेरी,

जान देने को तुझको चढ़ा हौसला ॥
लाल मेरे…
क्या लिया देख बेचारी मासूम ने,
हाथ का भी अब तक न कंगना खुला ।
रो रही है वह कत्ल से हो घर में पड़ी,
चल के बेटा उसे तू तसल्ली दिला ।
लाल मेरे…
फूल खिलने न पाया उम्र का अभी,
तू रहा है यहां और ही गुल खिला ।
दे दिलासा उसे कौन यशवन्तसिंह"
बैठ जायेगी पत्थर की बन कर शिला ॥
लाल मेरे…

नाटक

बेटा परमेश्वर के वास्ते तू ऐसे शब्द न इस्तेमाल कर अगर मेरी नहीं तो उस पराई बेटी की तरफ़ ख्याल कर, जिसका अभी ब्याह का जोड़ा भी नहीं मैला हुआ है जिसके हाथों पर अभी सुहाग मेंहदी का रंग फैला हुआ है जिसके बाग जवानी का अभी फूल भी खिलने नहीं पाया जिस बेचारी ने अभी कुछ खेला न खाया, जरा बता तो सही उसको किसके भरोसे पर छोड़ रहा है, क्यों

बेचारी बे गुनाह का कलेजा मरोड़ रहा है। उसने क्या कसूर किया, आज से पहले तेरा कौनसा सुख देख लिया किस तरह सब्र करेगी, क्योंकर तसल्ली आयेगी, वह तो पत्थर की शिला बन कर दरवाजे पर बैठ जायेगी, उसका तो कल से ही यह हाल हो रहा है, कि अपनी जगह से उठना भी मुहाल हो रहा है। हरचन्द तसल्ली दी बहुतेरा समझाया, मगर उस दुखियारी ने न कन से पानी पिया न अन्न खाया मेरे लाल! तू उस मासूम की जिन्दगी मिट्टी में न मिला, घर चल और उसको तसल्ली दिला।

हकीक़तराय—मेरी भोली माता! क्यों ठंडे सांस भर रही है और कैसी भोलेपन की बातें कर रही है, जब कि मेरा जिस्म और जान दूसरों के हाथ है तो चलना क्या मेरे अख्तयार की बात है। अगर पराये बस न पड़ता, तो मैं एक पल भी यहां न ठहरता। खैर तू कुछ फिकर न कर परमेश्वर सबका मालिक है, जिसने पैदा किया वही सबका पालक है। आये दिन बेटे मां-बाप की गोद से छुटते रहते हैं, पति-पत्नी के संबन्ध टूटते रहते हैं, सैकड़ों बच्चे अनाथ होजाते हैं, हजारों लावारिस और अपाहज नजर आते हैं। मगर परमेश्वर सब की खबर लेता है, पत्थर में जो

कीड़ा है उसे भी खाने को देता है ।

काज़ी-(डांट कर) मैंने तेरे साथ बहुत रियायत की और ज़रूरत से ज्यादा मोहलत तुझे दी, मगर न मालूम तेरे दिल में क्या ख़ब्त समाया है, अदालत को एक मखौलखाना ठहराया है, बस अब होशियार होजा

हकीकतराय-तैयार हूं हर वक्त तैयार हूं मौत का मतवाला हूं जिन्दगीसे बेजार हूं। अपनी ताकत का अजमाले वक्त जा रहा है जल्दी सवाब कमाले।

काज़ी-(सरिस्तेदार से) लिखो चूंकि मुलजिम को इलज़ाम कबूल करने से इन्कार है, इसलिये मुलजिम सज़ाय मौत ...

कोरां—(हाथ जोड़कर) ठहर, ठहर जरा ठहर रहम कर, तरस कर, दया, महरबानी कर, इसके बदले में मुझे सजा देले, घर बार जब्त करले, मुंह मांगा जुरमाना लेले। जो कुछ है तेरे हवाले, मुझे अपनी बांदी बनाले, जो कुछ तू कहेगा वही खिदमत बजाऊँगी तेरे झूठे बर्तन साफ करूँगी तेरे बच्चोंका पाखाना तक उठाऊँगी, मगर किसी तरह अपने हुक्म को टाल दे, तेरी भिखारन हूं यह भीख मेरी झोली में डालदे:—

रात दिन दूंगी दुआयें तेरी जान और माल को,
बख्श दे तु रहम करके ही मेरे इस लाल को,
रोऊंगी सारी उमर क्या हाथ तेरे आयगा,

हकीकतराय-तु इसे करदेगा खाली खुद भी खाली जायगा।

क़ाज़ी-ओ बदमाश! बन्द कर अपनी बकवास, जब तू इस क़िस्म की बकवास करता है तो ऐसी हालत में मुझसे रहम की किस तरह दरख्वास्त करता है।

कौरां (गाना रामकली तर्ज़—पंजाबी)

मुड़ नूं मारिये काज़ी क्यूं क्यूं रब्बदा खौफ़ करियें।
क्यूं सर कहर दी बिजली तोड़ियें,
मा हियो करलूं पुत विछोड़ियें।
ज्यूं दियां साड़िये; काजी क्यूं २॥

रब्बदा...

क्रान्हूं लांदा दुःख औलड़ा, मन्ताकरदा पागल पलड़
बसदी उजाड़ियें, क़ाजी क्यूं २॥

रब्बदा...

बैठी २ मारी करमां, फिरां कचहरी वांगवे शरमां।
रब्ब नू विसारिये; काजी क्यूं २॥

रब्बदा...

कदी न डिट्ठा बूहा घर दा आज रहा न कोई परदा । परदे उघाड़ियें: काजी क्यूं २ ॥

रब्बदा···

तहसील कित्थे किथे थाना, सार कचहरी दी की जाना । बदले उतारियें; काजी क्यूं २॥

रब्बदा···

फिर दी हां ममता दी मारी, लोक लाज और शर्म उतारी । हथा विगड़ियें: काज़ी क्यूं २ ॥

रब्बदा···

हकीकतराय—(गान। बतर्ज—पंजाबी)

रो रो सुनावियें कैन्हूं, तूं तूं माइये सवर करियें।
इन्हियां आगे कीन्हूं रोवियें, नाहक अपने दीदे खोवियें
दर्दी बनावियें: कीन्हूं तूं २ ॥

माइयें सवर···

कान्हूं एक्यें पट पट मरदी, कदीन सुनदे एह बेदरदी।
होर वलावियें: किन्हूं तूं २ ॥

माइये सवर···

नाल सवर दे सहियें मुसीबत, तूं समझी न जक्यां हकीकत । दोष लगावियें: कीन्हें तूं २ ॥

माइये सवर···

ऐही सी मालिकदी मरजी, क़ाज़ी विच्च बहानाफर्जी।
वास्ते पाक्यिेः कीन्हूं तू २.॥
माइये सबर.......
कान्हूं तार छिलोटी सटदों, करम लिखीन मेटी मिटदी
हाल दिखाक्येः कीन्हूं तूं २॥
माइये सबर......
जे मैं मरियां बसदा काजी, मैं राज़ी, मेरा साहब
राजी जुलमों हटाक्येिः कीन्हूं तूं २॥
माइये सबर.......

नाटक

काजी—जरूरत से ज्यादा रियायत और हद से ज्यादा मेहरबानी कर चुका, मौत की सजा बहाल ले जाओ मुलाजिम को हवालात में।

खुदा दोस्त—ठहरो, ठहरो, खुदाई के ठेकेदारो! ठहरो इसलामके दावेदारो! ठहरो, अपनी करतूतों से खुदा और रसूल को बदनाम न करो, इस्लाम के परदे में कुफ्र के काम न करो।

काजी—तू कौन है?

खुदा दोस्त—खुदा बन्दा, रसूल की उम्मत, कलमा-गो मुसलमान।

काजी—क्या चाहता है?

खुदा दोस्त—तुम्हें इस जुल्म से हटाना, इसलामके चादर से इस स्वाह धब्बे को मिटाना तुम्हारी मन मानी कार्रवाइयों के बरखिलाफ बावेला मचाना और एक बे गुनाह मासूम बच्चे का जान बचाना।

काजी—खुदा की पनाह, काफिर और बे गुनाह ?

खुदा दोस्त—बे गुनाह और बिल्कुल बेगुनाह।

काजी—मालूम होता है कि या तो तूने मुलजिम के बाप से कुछ रिश्वत खाई है, या तेरे जिम्मे उसका कुछ कर्ज हैं।

खुदा दोस्त—नहीं, बल्कि आप को इस सेठ से कुछ जाती अदावत है या तुआस्सुफ का मर्ज है।

काजी—मगर तुझे किसने इसका वकील मुकर्रिर किया ?

खुदा दोस्त—मेरी जमीर ने, तुम्हारे जुल्म ने खुदा के खौफ ने, हक की तरफदारीने, इस्लाम की हिमायत ने, रसूल की हिदायत ने।

काजी—इसकी बेगुनाही का कोई सबूत ?

खुदा दोस्त—एक ही लेकिन बड़ा मजबूत।

काजी—क्या इसने रसूलजादी की तौहीन नहीं की

खुदा दोस्त--क्या मुसलमान लड़कों ने दुर्गा भवानी को गाली नहीं दी ?

क़ाजी—यह अजब मुसलमानी, कहां बीबी साहबा कहां दुर्गा भवानी, तुमने मुसलमान होकर दोनों की एक इज्जत जानी ?

खुदा दोस्त—यह अपना २ नुक़तये खयाल है, जोआप की नज़रों में हराम है वही दूसरेकी निगाह में हलाल है। ऐ सैर तुग नाने जवीं खुश न नुमायद। माशूक़ मन अस्त आंकि बनजदीक तो जिश्त अस्त। अदालत को इन झमेलों से क्या सरोकार, देखना तो यह है कि कौन बेक़सूर है और कौन कसूरदार।

काजी—शरै का हुक्म मुझको इसके लिये कत्लका हुक्म देने पर मजबूर करता है, इसलिये अहकाम शरै को नहीं तोड़ सकता और तेरे कहने से इस काफिर को नहीं छोड़ सकता।

खुदा दोस्त—डरो २, खुदा का खौफ करो, क्या आप को इस्तिलाह में जुल्म और बेइन्साफी का नाम शरै है, या बेगुनाहों का कत्लआम शरै है, अगर किसी शाही कानून से इसे फांसी देते तो शायद मैं कुछ न कह सकता, लेकिन जब तुम इसलाम और शरैके

नाम पर ऐसा जुल्म करते होतो एक सच्चा मुसलमान खामोश नहीं रह सकता :—

बेगुनाह का कत्ल करना कहां का इस्लाम है।
तोबा तोबा हादियों का रह गया यह काम है॥
मैं नहीं चाहता कि इसको बख्शदे या माफकर।
रहम का तालिब नहीं इन्साफ कर इन्साफकर॥

क़ाजी—मुझे तेरे मुसलमान होने में भी शक है।

खुदा दोस्त—बजा है और बिल्कुल बजा है, मैं और मेरी मुसलमानी तो एक तरफ इस वक्त तो अगर आपको खुदाके खुदा होने में भी शक हो जाय तो कुछ अजब नहीं।

काजी-क्या वह मुसलमान, मुसलमान कहलाने काहक़दार है, जो इस्लाम का दुश्मन और कुफ्र का तरफ़दार है?

खुदा दोस्त—नहीं बल्कि मुसलमान वह है जिसके दिलमें जुल्म से नफ़रत और हक़ के लिये हिमायत है यही शरैका हुक्म और यही रसूल की हिदायत है :—

भूल बैठे हो मियां तुम शरै के अहकाम को,
मत करो बहरे खुदा बदनाम तुम इसलाम को।
है कहां लिखा शरै में बेगुनाहों का कतल,
या खुदा! अब दीन के रहबर करेंगे यह अदल?

काजी—मुझे सख्त अफ़सोस है कि एक ऐसे शख्स की नाजायज़ हिमायत करता है, जिसके लिये इसलाम क़िन्नार की हिदायत करता है। यह एक ऐसा फ़िरका है जो न सिर्फ़ इसलाम से अदावत करता है, बल्कि खुदा से भी बगावत करता है, इसलिये ऐसे लोगों को क़त्ल करना गुनाह नहीं बल्कि कारे सवाब है।

खुदो दोस्त–सुब्हान अल्ला! क्या माकूल जवाब है हजरत यह कार सवाब नहीं बल्कि फ़ैल शैतानी है, खुदा और उसके रसूल के अहकाम की सरीह ना फ़र्मानी है

मुसलमानों का खुदा है हिन्दुओं का क्या नहीं।
किस तरह कहते हो फिर तुम उसको रब्बुल आलमीं॥
पूज्य उनका है वही जो आपका माबूद है।
मुख्तलिफ़ रस्ते हैं, वाहिद मंजिले मक़सूद है॥

काजी—मुझे तेरी बातों से शिर्क की बू आती है।

खुदा दोस्त–आनी ही चाहिये, मजहबी जनून चढ़ा हुआ है, दिमाग़ में तअस्सुब का माद्दा भरा हुआ है हवास खमसा बिल्कुल उल्टे हो रहे हैं, बुरी ख्वाहिशात जाग रही है, नेक जज़बात सो रहे हैं:—

आये गर बदबू, नहीं कुछ आपका इसमें कुसूर।
मग़ज़ में ही आपके छाया हुआ है जब फ़ितूर॥

खुशबू व बदबू की होवे आपको कैसे तमीज।
हो तत्रास्सुब के तत्राफुन से मग़ज़ ही जब गलीज ॥

क़ाज़ी—फिज़ूल क़ैंची की तरह ज़बान चलाता है आखिर तू क्या चाहता है ?

खुदा दोस्त—हुकूमत की सलामीतो, तुम्हारी भलाई इसलाम को सुर्खरुई, शरै की सचाई ज़ालिम के बरखिलाफ़ और मज़लूम के लिए इन्साफ।

क़ाज़ी—इस्लाम की सुर्खरुई इसी में है कि या तो यह मुसलमान हो जाय, वरना क़त्ल किया जावे, ताकि अगर जिन्दा रहे तो इशाअत इसलाम हो, मारा जाये तो एक काफिर गुमनाम हो।

खुदा दोस्त—बेशक हर एक मोमिन के जुम्मे यह एक कर्ज़ है यानी दीन की इशाअत हर मुसलमान पर फर्ज़ है। मगर दीन की इशाअत का यह नया तरीका आपने कहां से निकाला, कि जिसने इसलाम कबूल न किया, झट क़त्ल कर डाला। तलवार चला कर बहुतेरों ने ज़ोर लगा लिया, क्या उन्होंने तमाम दुनियां को मुसलमान बना लिया ? सिवाय इसके कि दुनियां में खून की नदियां बहा गये, और अपने और इस्लाम के माथे पर कलङ्क का टीका लगा गये। दीन

की अगर इशाअत होगी तो मुहब्बत से, प्यार से, सच्चाई के इजहार से, इसलाम की सदाकत से, रूहानी ताकत से इल्मी लियाकत से, हक़ की करामात से, तबादिले ख्यालात से यह हैं तरीके जिनसे दुनियां में कोई मजहब तरक्की पजीर हो सकता है, और वही मजहब देरपा और बे नजीर हो सकता है :···

दिल से मजहब का तअल्लुक है न कि तलवार से,
दीन की होगी इशाअत प्रेम से और प्यार से,
क़त्ल कर दोगे इसे क्या फायदा इस्लाम का,
है यह बिल्कुल गलत मतलब शरै के अहकाम का।

—अपने बकवाश को बन्द कर, वरना मैं तेरे बर-खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई करने पर मजबूर हूंगा

खुदा दोस्त—आपका अहसान होगा और मैं आपका बहुत ही मशकूर हूंगा :—

अब न आई तो कल को आयेगी,
यह बला न पास पास जायेगी।
अब यह मुजरिम है कल को हम होंगे,
मुसलमानी भी धक्के खायेगी।

हकीकतराय—मत बोल मेरे मोहतरिम बुजुर्ग! मत बोलमैं आपकी हमदर्दी का मशकूर हूं बेशक आप आलिम

व फ़ाज़िल हो मगर मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से आपके ऊपर कोई बला नाज़िल हो।

खुदा दोस्त—मेरे मजलूम और सितम रसीदा बच्चे! मैं तेरे लिये नहीं बोलता हूं बल्कि इन्साफ़ और सचाई के लिये बोलता हूं ज़ुल्म और सितम के बरखिलाफ़ अपनी जबान खोलता हूं।

भागमल—आफ़री मेरे मोहसिन! आफ़री मैं आपके इस अहसान को मरते दम तक नहीं भुला सकता आपने मरते के मुंह में पानी डाला है डूबते हुऐ को भंवर से निकाला है मगर मैं डरता हूं कि कहीं आपको भी हमारे साथ ही न धर लिया जाय हमतो अपनी किस्मत को रोते फिरते हैं ऐसा न हो कि कहीं आप पर भी कोई मुकद्दमा कायम कर लिया जाये।

खुदा दोस्त—न मेरा तुम पर अहसान है न कोई मेहरबानी है बल्कि ज़ुल्म और बेइन्साफ़ी के बरखिलाफ़ आवाज उठाना मेरा फर्ज़ इन्सानी है अगर किसी मजलूम की हिमायत में अपना सिर कटवाता हूं तो इसी का नाम सच्ची मुसलमानी है:—

बलायें लाख आयें मैं ख़ुशी से सिर पै लेलूंगा,
सचाई की हिमायत के लिये सब दुःख झेलूंगा।

कटे एक २ आजो खून के दरिया में खेलूँगा,
मेरा इकलौता बच्चा है उसे भी भेंट देलूँगा।
जो है घर का असासुलबेत उसको लुटा दूँगा,
तेरे बच्चे के बदले में मैं अपना सर कटा दूँगा।

कौरां—आ रहम के फ़रिस्ते! आ, मैं तेरी बलायें लूँ, तेरे सिर पर से सब कुछ कुरबान करदूँ। परमेश्वर तेरी और तेरे बच्चे की हज़ारी उमर करे, परमेश्वर वह दिन न दिखाये कि किसी का बच्चा मां बाप की आंखों के सामने मरे :—

मेरा सब कुछ निछावर है तेरी इस महरबानी पर,
हों सौ बेटे करूँ कुरबान ऐसी मुसलमानी पर।
तेरे इकलौते बच्चे को मुसीबत में न डालूँगी,
हकीकत एक है मेरा उसी का सर कटा लूँगी।

क़ाज़ी—कैसा झगड़ा फैलाया है, क्यों अदालत को मखौल-खाना बनाया है, मुलजिम को लेजाकर जेल में संभालो और इस बहरूपिये मुसलमान को अदालत से बाहर निकालो।

खुदादोस्त-खूब अच्छी तरह अपने दिलका गुबार निकालो और कुछ दिल में हो तो वह भी कह डालो। जब

वक्त आयेगा, तो इस बात का फैसला भी होजायेगा।
जब किसी आदिलने हजरत फैसला इसका किया,
भेद खुल जायगा तब कि कौन है बहरूपिया।
खून इस मासूम का क्या रायगां ही जाएगा?
इसको तो रोयेंगे सब तू खुद न रोने पाएगा।

कौरां (गाना)

इस अदालत से तेरी मायूस बिलकुल हो चले,
पूत का भी दे चले और आबरू भी खो चले।
आये थे किस आस पर लेकर यहां से क्या चले,
अपनी आस औलाद से हम हाथ बिलकुल धोचले।
कौनसा इन्साफ हम को इस अदालत से मिला,
हो गया इतना, बुरी की जान को हम रो चले।
इस अदालत और अद्ल पर कहर की बिजली गिरे,
हमतो अपनी जान पर पत्थर बहुतेरे ढो चले।
चल दिये हम बेगुनाह हाथों को अपने झाड़कर,
जो कमाई थी उसे मंझधार बीच डुबो चले।
आहो जारी बेगुनाहों की न खाली जायगी,
फल लगेगा एक दिन जो बीज हम हैं बो चले।
आत्मा मेरी दुखा कर सुख न तू भी पायेगा,

बाज आजो-जुल्म से है वक्त अब भी सोचले ।
हो गई होगी तुझे तो ईद से बढ़ कर खुशी,
तू चला हँसता हुआ रोते हुए हम दो चले ।
मेरे बेटे के कत्ल का आज ही करले जशन,
वक्त से पहले तुझे शायद न मौत दबोच ले ।
कौन है "यशवन्तसिंह" जो हम गरीबों की सुने,
जेल में बेटा चला हम सब्र कर घर को चले

दृश्य २ सीन २

मिर्जा अमीरबेग हाकिम शहर की अदालत

(मिर्जा अमीरबेग एक कुर्सी पर बैठा हुआ है, इर्द गिर्द काजियों का एक बड़ा झुन्ड मसले मसायल की किताबें हाथों में लिये हलका बांधे हुये हैं, हकीकतराय मुलजिमों के कटहरे में जंजीरों से जकड़ा हुआ खड़ा है)

अमीरबेग—काजी साहब ! यह क्या मामला है ?

काजी-जनाब वाला ! इस काफिरजादे ने इसलाम

पांव के नीचे कुचल डाला, तोबा अल्लाह ताला तोबा अल्लाह ताला !

अमीरबेग—हक़ीकतराय ।

हक़ीकतराय—हुजूर ।

अमीरबेग—क्या बात है ?

हक़ीकतराय—कुछ तो क़ाज़ी साहबने बतला दिया बाक़ी भी इन्हीं से दरयाफ्त कर लीजिये ।

अमीरबेग—क्यों काजी साहब ?

क़ाजी—अजी जनाब आली ! इस नाहिंजारने रसूलजादी को गाली निकाली, सिर्फ हमारी और तुम्हारी बल्कि तमाम इसलाम की नाक काट डाली, इतना बड़ा गुनाह ! खुदा की पनाह, खुदा की पनाह ।

अमीरबेग—क्यों हक़ीक़त ! जो कुछ काजी साहब ने फरमाया ठीक है ?

हक़ीकतराय—हां ठीक है मगर तसवीर का सिर्फ वही रुख दिखलाया है जो बिलकुल तारीक है ।

अमीरबेग—आखिर कुछ कहो तो सही कि असलियत क्या है ?

हक़ीकतराय—ग़रीब परवर क्या कहूं :—

ज़ुल्म से इन काजियों के सीना मेरा पक गया ।

क्या कहूं किससे कहूं मैं कहते कहते थक गया ॥
कुछ खता की है न मैंने और न कुछ मेरा कसूर ।
बेगुनाह मज़लूम हूं क्या जुर्म बतलाऊं हजूर ॥

अमीरबेग—क्या झमेला है ।

काज़ी—कुछ न पूछिये हजूर, हमारे तो कलेजेमें पड़ गया नासूर, इसलामी हकूमत में रसूलजादी की तौहीन ! या रब्बुल आलमीन या रब्बुल आलमीन !

अमीरबेग—हकीक़तराय ! क़ाजी साहब जो कुछ तुम पर इलजाम लगाते हैं, उसकी तुमने अभी तक तरदीद नहीं की, क्या तुमने रसूलजादी को गाली नहीं दी?

हकीकतराय—मैं तसलीम करता हूं क़ाजी साहब का फरमाना बिल्कुल सही है, मगर पहले अर्ज कर चुका हूं कि उन्होंने एक तरफा बात कही है । अपने मुफीद मतलब बात को बार बार दुहराते हैं, इसलाम और खुदा के वास्ते दे दे कर अदालत के जज़बात को भड़काते हैं, मगर जो बात बिनाये फिसाद है उसको ज़बान पर भी नहीं लाते हैं ।

अमीरबेग—अपनी सचाई पेश करना तेरा काम है न कि क़ाजी साहब का ।

हकीकतराय—सचाई तो मुझ गरीब की क्या है मगर

वाक़आत यह है कि मकतब के लड़कों का मुझ से यूंही सा तक़रार होगया, पहले उन्होंने दुर्गा भवानी को गाली दी बाद में मेरी जबान से भी रसूलजादी की शान में वही लफ्ज निकल गया। क़ाजीसाहबने मुसलमान लड़कों पर तो कोई इलजाम न लगाया, मगर मेरी निस्बत मौतका फतवा सादिर फ़रमाया।

अमीरबेग—क़ाजीसाहब महज़ लड़कों की लड़ाई और आप ने बात यहां तक पहुंचाई? अव्वल तोकानूनन यह कोई संगीन जुर्म नहीं, अगर है तो दोनों फ़रीक कसूरवार हैं अगर यह मुलजिम है तो वह भी सजावार हैं।

क़ाजी—लाहौल विला कुव्वत! आप भी इतने समझदार होकर कैसा गजब ढारहे हैं, एक पत्थर के बुत और रसूलजादी का एक मर्तबा ठहरा रहे हैं। नऊज बिल्लाह! अब यह रह गए मुसलमान, या खुदा तेरी शान, या खुदा तेरी शान।

[हक़ीकतराय के वालदैन मय दीगर अहले शहर के दाखिल होते हैं।]

कौरां (गाना)

बेगुनाह है मेरा बेटा दुहाई है दुहाई है।
हाय इन काजियों ने तो खुदाई बेच खाई है॥
मेरे मासूम बच्चेको कतल करवाना चाहते हैं।
खुदाका खौफ है दिलमें न कुछ देता दिखाई है।
उम्र सारी गँवाकर तब कहीं यह लाल देखा था।
यही पूँजी मेरे घर की उम्र भर की कमाई है॥
एक ही आंख थी सो फोड़ डाली हम गरीबों की।
न बेटा है न बेटी है भतीजा है न भाई है॥
हमारे साथ ही फूटे कर्म इस बहू के भी।
यहां हम रो रहे घर रो रही बेगानी जाई है॥
महीना भी नहीं पूरा हुआ घर में उसे लाये।
अभी हाथों की महदी तक उतरने भी न पाई है॥
सुना यह माजरा जब से पड़ी है सिरल मुर्दा के।
न खाती है, न पीती है, न गर्दन तक उठाई है॥
राज में शाहजहां के मच गया अंधेर क्यों ऐसा।
हाथ में काजियों के आ गई सारी खुदाई है॥
पड़ी बिपता गिरी हूं आन कर तेरे द्वारे पर।
मुझे खैरात दे झोली तेरे आगे फैलाई है॥

कभी "यशवन्तसिंह" घर की नहीं दहलीज देखीथी।
रही हूं फिर कचहरी में हाय क्या बेहयाई है !!

नाटक

दुहाई है हजूर ! दुहाई है, मेरे मासूम और बेगुनाह बच्चे पर बिला वजह मुसीबत आई है। न मालूम किन२ मुसीबतों में अपने आप को डाला था, तब जाकर कहीं यह लाल पाला था। मगर न मालूम काजी साहब कौन से जन्म का बदला उतार रहे हैं, जो मेरे बेकसूर बच्चे की जान मार रहे हैं। सारी उम्र की कमाई सारे घर की पूंजी यही एक लाल था जो मौत के मुंह में आरहा है, हाय कैसा उल्टा जमाना आगया अपने लाल के ब्याह के लाड़चाव अभो करने न पाये थे कि मौत का परवाना आ गया जिस बेचारी मासूम ने अभी घूंघट भी नहीं उठाया, उस बेगुनाह को इस उम्र में विधवा कर बिठाया इतना जुल्म ! इस कदर बेदर्दी ! शाहजहां के राज में इस कदर अन्धेर गर्दी।

अमीरबेग—माई जरा सब्र कर रोने धोने से क्या फायदा है नीज, ज्यादा बोलना भी अदालत के खिलाफ कायदा है।

क़ाजी—आपका बिलकुल बजा इरशाद है, सच पूछो तो यह बुढ़िया ही बिनाये फ़िसाद है।

कौरां—परमेश्वर आप का रुतबा बुलन्द करे, आपकी और आपके बच्चों की उम्र दुचन्द करे मैंने जिस दिन से होश सम्भाला, आज तक कभी घर से बाहर कदम न निकाला यह सब काजी साहब की मेहरबानी है जो एक शरीफ घरका बहू बेटीनेकचहरियों की खाक छानी है क्योंकि मैं सरकार दरबार के रिस्म रिवाज से बिल्कुल बेखबर हूं, इसलिये मेरा कहना सुनना मुआफ करना, ममताकी मारी तेरे द्वारे पर आ पड़ी हूं मेरे बच्चेके साथ इन्साफ करना।

अमीरबेग—क़ाजी साहब ! क़ानून तो इसके क़त्ल की इजाज़त नहीं देता, क्योंकि यह जुर्म बहुत खफीफ है।

क़ाजी महरमअली—वाह साहब वाह, क्या मुसलमानी की यही तारीफ़ है।

क़ाजी सुलेमान—इस क़ानून को डालो चूल्हे में, अजी जनाब यह देखिये शरह की किताब गजब खुदा का, मुसलमानों के हाथों ही इस्लाम की तबाही, तोबा इलाही, तोबा इलाही !

अमीरबेग—इसके अलावा मुझे इस की खूब सूरती पर रहम आता है।

क़ाजी—सांप का बच्चा अगर खूबसूरत भी हो तोभी अक्लमन्द उसे आस्तीन में नहीं पालते हैं, बल्कि जहां देखते हैं, वहीं सर कुचल डालते हैं।

अमीरबेग—इसकी कमसिनी मुझे ऐसा हुक्म देनेसे रोकतीहै।

क़ाजी—सांप का बच्चा जितना छोटा उतना खोटा :—

जब सांपका बच्चाही ठहरा फिर उसका बड़ाया छोटा क्या।
है गांठ जहरकी सारी ही उसका पतला और मोटा क्या॥

अमीरबेग—इसके जईफुल उम्र वालदैन और खरसन इसकी नौ उम्र बीबी की हालत काबिल रहम है।

क़ाजी—अगर्चे सांपों की नसल तमाम की तमाम ही खराब है मगर इसमें भी नर की निस्बत मादा को मारने में ज्यादा सवाब है, क्योंकि वह दुनियां में सांपों की नस्ल को बढ़ाती है, इसलिये नर की निस्बत ज्यादा जहर फैलाती है।

अमीरबेग—कुछ भी सही जुर्म के लिहाज से ऐसी सख्त सजा बिल्कुल खिलाफ कानून और सरासर बेइन्साफी है, अव्वल तो मुलजिम काबिल मुआफी है, वरना सिर्फ जुर्माने की सजा काफी है।

काज़ी (गाना)

हैफ़ है आगई हाकिम के दिल में भी बेईमानी,
हो गई है यहाँ पर सेठ के जर की मेहरबानी।
जहाँ मुबलिग अलेह असलाम की होती परीस्तश हो,
वहाँ इन्साफ़ की उम्मेद रखना महज नादानी।
पड़े इस्लाम चूल्हे में शरै से क्या इन्हें मतलब,
हुई जब जर की पूजा दीन की कैसी निगाहबानी।
लग गये हैं मुसलमां काफ़िरों से इस क़दर डरने,
करेंगे खाक अब हिन्दुस्तां पर वह हुकमरानी।
मुसलमानों की इज्जत आबरू का है खुदा हाफ़िज,
जब उसके रहबरों ने सीखली है रिस्वतें खानी।
अगर जर है तो क्या डर है उन्हें रोजे कयामत का,
तुफ़ैल इसके ही होगी हर तरह की इनको आसानी।
इबादत रह गई यह भी शफ़ाअत रह गई यह ही,
शरम गैरत हया ईमान पर तो फिर गया पानी।
लगाले जोर जितना जिस किसी को भी लगाना हो,
क़जा इसकी न टल सकती कि है यह हुक्म रब्बानी।
न खमियाजा पड़े तुमको उठाना इस हिमायत का,
"चिराकारे कुनद आकिल किबाज आय पशेमानी"

लगे पामाल करने कौम को जब दीन वाले ही,
"चुकुफ़ अजकाबा बरख़ेजद कुजा मानद मुसलमानी"

नाटक

तोबा तोबा हजारबार तोबा, या अल्लाह तेरी पनाह जब मुसलमानों की ही यह मुसलमानी है, तो हिन्दुओं पर तो हमारा गिला करना महज नादानी है, जब मुसलमानों ने ही अपने दीन को चँद पैसों के लिये बेच छोड़ा, तो हिन्दू तो जो कुछ कर गुजरे सो थोड़ा। हम हैरान थे कि बावजूद मुसलमानी सल्तनत के मुसलमान दिन ब दिन क्यों तबाह हो रहे हैं, जाहिरा इस्लाम की मुहब्बत का दम भर रहे हैं। मगर दरपरदा दीन फरोशी करके अपनी शिकमपुरी कर रहे हैं। हिन्दुओं को यह गरूर है कि जब तक हमारे पास जर है, हमें किसी इन्सान तो क्या खुदा का भी क्या डर है, रुपये में बड़ी करामात है, इसके परस्तार का मार लेना भी कोई बड़ी बात है। किसी ने बिल्कुल सच कहा है :—

ऐ जर तो खुदा नेस्त बलेकिन बखुदा।
सत्तार अयूब व काज़ी-उल हाजाती।।

दूसरा काजी—वाक़ई यह रुपया भी बुरी बला, जिस किसी पर इसका जादू चला, वह बुरे से बुरा काम करने से

भी न टला। इसीलिये खुदावन्द-तआला ने मुसलमान पर खास नजरे इनायत की थी, कि इससे बिल्कुल अलग रहने की हिदायत की थी, बल्कि जनाब रसूल करीम का तो यह भी इरशाद है, कि बवक्त नमाज जर का पास रखना शिर्क की बुनियाद है, क्योंकि यह ईमान का दुश्मन और शैतान का हमजाद है, मगर उसकी उम्मत का यह हाल कि हराम देखे न हलाल या जुलजलाल! या जुलजलाल!!

अमीरबेग—क़ाज़ी साहब! यह आपको महज खाम खयाली है कि इस मुक़द्दमे में खुदा न ख्वास्ता मैंने कोई रिश्वत खाली है, आप भी मुसलमान हैं, मेरा मजहब भी मुसलमान है, अगर आपके लिये यह निजस काम है, तो मेरे लिये भी हराम है। इसलिये मेरे जिम्मे यह आपका फ़िज़ूल इलहाम है। अगर आप मेरे जिम्मे महज इस वजह से यह इलज़ाम लगाते हैं, कि मेरा आपकी राय से इख्तलाफ है तो इस मुक़दमे को मेरे पास काहे को लाना था, जोकुछ आपने करना था कर लेते कत्ल करते चाहे फांसी देते

वरना मैं आंखें बन्द करके आपको तकलीद नहीं कर सकता, और कानून व इन्साफ की इस तरह मिट्टी पलीद नहीं कर सकता।

क़ाज़ी—गजब खुदा का, आप इन्सानी कानून का तो इतना ख्याल कर रहे हैं, मगर खुदाई कानून को पामाल कर रहे हैं, जबानसे रिश्वत को हराम बताते हैं, अमल से इसका इकबाल कर रहे हैं। चलो भाई चलो, जिसने देखा पैसा उसका ईमान कैसा। क्यों मिर्ज़ा साहब को तकलीफ दें, क्यों अपनी जान को क्लेश करो आज ही चल कर अपने २ इस्तीफे पेश करो। यह अपना कानून पर चलते हैं, तो चलें मगर हम बिला वजह दोज़ख की आग में क्यों जलें। या अल्लाह अब मुसलमान शरै की मा लेने लगे उजरत, सुब्हानतेरी कुदरत सुब्हानतेरी कुदरत।

खुदा दोस्त—दोजख की आग से बचना चाहते हो मगर दोजख में जाने का सामान कर रहे हो, खुदा को जवाब दे रहे हो, और शैतान से अहद व पैमान कर रहे हो, ईमान से बरगश्ता हो रहे हो और सल्तनत की तबाही पर कमरबस्ता हो रहे हो:—

हाथ क्या आयेगा लेकर बेगुनाह की जान को।

कुछ खुदा का खौफ भी तो चाहिये इन्सान को।
उंगलियां दिखला रहे हो किस लिये शैतान को।
क्यों मिटाने लग रहे हो सलतनत की शान को।
रख लिया आगे बहाना शरै के अहकाम को।
खातमा करके रहोगे सलतनत इस्लाम का॥

काजी—इसने हमारा बड़ा काम खराब किया, यहां भी न मालूम कहां से आमरा यह बहरूपिया। (डाटकर) ज्यादा बक बक न लगाओ, अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो फौरन अदालत से बाहर निकल जाओ।

अमीरबेग—यह कौन है, मुलजिम के साथ इसका क्या रिस्ता है।

काजी—अजी जनाब कोई भी नहीं ख्वामख्वाह चने के साथ घुन पिसता है।

खुदा दोस्त—[अदालत से] ब कौल काजी साहब तो मैं कुछ भी नहीं, मगर अपने ख्याल के मुताबिक दीन इसलाम का एक अदना सा खादिम हूं:—

न मेरा मुलजिम न मैं मुलजिम का रिश्तेदार हूं।
दीन का शैदा हूं और इस्लाम का गमख्वार हूं॥
नबी की उम्मत हूं और उम्मत का खिदमतगार हूं।
बन्दऐ नाचीज उस अल्लाह का सरकार हूं।

चोट हो इस्लाम के ऊपर तो सह सकता नहीं।
है शरै बदनाम मैं खामोश रह सकता नहीं॥

काजी—(अदालत से) अजी जनाब आली आपने किस की तरफ निगाह लगाली। मैं इसे बहुत अच्छी तरह जानता हूं, दीन के नाम का महज शोर ही शोर है, या तो मुलजिम के नाम का मकरूज है या रिश्वतखोर है।

तमाम काजी—जी हां बिल्कुल ठीक है, यह तो इसके बशरे से ही जाहिर हो रहा है, रिश्वत खाई है तब हीं तो इतना आपे से बाहर हो रहा है।

अमीर बेग—काजी साहब! मुझे इस बात की बड़ी हैरानी है, क्यों आपके पास ही तमाम जमाने की मुसलमानी है, बाकी जितने मुसलमान हैं वह सब के सब बेईमान हैं:—

तुम शाहो मुफ्ती हो बेशक कुछ दुनियांके तो पीर नहीं
यह शरै और इस्लाम किसी के बाबाकी जागीर नहीं
क्या आपहीको उस अल्लाहने इस्लाम का ठेकादे डाला
जितने और मुसलमां हैं उनकी कोई तौकीर नहीं।

खुदा दोस्त—दरअसल यही मामला है इस में जरा भी शक नहीं, जमाने में सिवाय इनके मुसलमान तो क्या

किसी को इन्सान कहाने का भी हक़ नहीं.....
है कुन्जी इनके पास शरै को लग रहे इनके ताले हैं।
इल्ज़ाम मिला है विरसे में इस्लाम के ये रखवाले है।
है नबी की उम्मत काजीही और यही खुदाके बन्दे हैं।
सब मुसलमान बेदीन फिरें एक ये ही अल्लाह वाले हैं।

काजी—(अदालत से) बहुत अच्छा जनाब हम गुनाह करते हैं आप सवाब, किसकी शरा और कैसी किताब, मुंसफ मुलजिम राजी तो क्या करेगा काजी आपकी मर्जी दो करो या एक, हमारी तो लीजिये सलामअलेक :—
तुम करो फैसला उसी तरह जिस तरह तुम्हारी राजी हो
बन जाये तुम्हारा काम इधर और उधर गरीब नमाजीहों
क्यों कसूरवार हम शाह के हों और गुनाहगार अल्लहकेहों
मुंसिफ तो अपना पेट भरे बदनाम बिचारा काजी हो।

अमीरबेग—जब आपका इस्तगासा इस कदर मजबूत और ताकतवर है, तो फिर आपको किस बात का डर है, इन फजूल और गैर मुतालिका बातों को तो रहने दीजिये, जो कोई कुछ कहता है उसे कहने दीजिये।

काजी—या तो मुलजिम आप बोले, या मुलजिमका बाप बोले मगर यह कौन बिन बुलाये के महमान, न हिन्दू न मुसलमान, न मालूम इसका क्या ग्रहा है, जो

ख्वाहमख्वाह पराई आग में कूद पड़ा है।

खुदा दोस्त–अगर पराई आग होतीतो शायद मैं किनारा कर जाता, मगर आप ने तो वह आग सुलगाई है, जिससे कोई मुसलमान भी बचता नजर नहीं आता दोजख की आग तो महज़ गुनहगार को जलायेगी, मगर आपकी सुलगाई हुई चिनगारी तमाम इस्लाम पर तबाही लायेगी। जिस इस्लाम को इस्लाम के शैदाइयों ने अपने खून सींच २ कर इस दर्जे तक पहुंचाया, आप उसकी तबाही के सामान कर रहे हैं इस्लाम के सरसब्ज शादाब और लहलहाते हुए गुलशन को बिल्कुल उजाड़ और बियाबान कर रहेहैं इस्लाम और शरै की अजमत का बिल्कुल खाक में मिला रहे हैं और इस्लामी सलतनत की जड़ों पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं। दीन की इशाअत अपना खून देनेस हाती है, नकि दूसरों का खून बहानेसे इस्लाम की अजमत इन्साफ और हमदर्दी से बढ़ेगी न कि तलवार चलाने से। रहम करो, रहमकरो, अपनी आस औलाद पर रहम करो, सलतनत की बुनियाद पर रहम करो शरा और इस्लाम पर रहम करो और सबसे बढ़ कर अपने अंजाम पर रहम करो :—

दिन अभी देखे थे हमने येश के आराम के,
क्योंकमर वस्ता हो तुम तखरीब पर इस्लाम के।
नाम पर इस्लाम के खंजर निकाली म्यान से।
क्या यही ईमान है कहदो तुम्हीं ईमान से ?

काज़ी—ये तेरी महज़ खाम ख़याली है, इसलाम के पेशवाओं ने कभी तलवार नहीं सम्भाली है?

ख़ुदा दोस्त—संभाली है और जरूर संभाली है: मगर दीन की इशाअत के लिये नहीं, बल्कि दीन की हिफाजत के लिये और वह भी उस हालत में जबकि उसकी खास जरूरत हुई, या दीन के सामने कोई खतरनाक सूरत हुई :—

दीन की आड़ लेकर क्यों बदी के काम करते हो,
बेचारे पेशवाओं को भी क्यों बदनाम करते हो।
शरअ के नाम पर क्यों ये सितम ईजाद करते हो,
इसे इन्साफ़ कहते हो सरीह बेदाद करते हो॥

काज़ी—हम मजहब पर मायल हैं, न कि तेरे फ़लसफे के कायल हैं, हमारे पास मजहबी मसायल हैं तेरे पास इधर उधर की दलायल हैं, अरे बे अकल! भला मजहबी मुआमलात में बहस मुबाहसे का क्या दखल।

खुदादोस्त—फिर तो मालम नहीं बिल्कुल साफ है, गोया आपकी जबान कानून है और आपका हुक्म इन्साफ है शाही कानून बिल्कुल बेबुनियाद, शरै आप के घर की जायदाद, न कोई दलील न कोई हवाला जिसको देखा कत्ल कर डाला।

काजी—(अदालत से) जनाब आली! हमने यहां आकर इसलाम की और अपनी बहुतेरी बेइज्जती करवाली फिजूलहुज्जत बाजियों से क्या फायदा है आप वह कीजिए जो कुछ मुलजिम के बुरसा के साथ आप का वायदा है, हम से कुछ बनेगा तो बना लेंगे, वरना अपने घरकी राह लेंगे।

हकीकतराय (गाना)

फैसला कर दो वही जिसमें हो राजी क़ाजी,
वरना लायेगा बला तुम पे भी ताजी क़ाजी।
मैं अगर मर भी गया दुनियां न घट जायेगी,
हां मगर दीन का बन जायेगा ग़ाजी क़ाजी।
आज दुनियां में नहं दीन का हमदर्द कोई,
सारे बे दीन फिरें पाक नमाजी क़ाजी।
अल्लाह ताला के यहां होगा बहिस्ती बन्दा।

शहन्शाह देंगे तुझे खिलअत इजाजी काजी।
खूब दिखलाया दलीलों से हर एक को नीचा,
वाकई लेगया तू सब से ही बाजी काजी।
दीन इसलाम का है इश्क हकीकी तुम को,
और सबको है महज, इश्क मजाजी काजी।
कत्ल करवाके मुझे जश्न मनाना घर में,
खूब दिखलाई वहां अपनी फयाजी काज़ी।
दीन है येही तेरा और है ईमान यही,
है यही मुस्तकबिल और माजी काज़ी।

ग़रीब परवर ! अगर्चे मेराकुछ अर्जकरना एकफजूल सा बकवास है, ताहम मेरी आप से दस्तबस्ता इल्तमासहै कि इस मुक़द्दमे को तूल न दीजिये, बल्कि जिसतरह क़ाजी साहब कहें उसी तरह फैसला कीजिये। यही होगाकि मेरे मां बाप चार दिन आंसू बहा लेंगे। आखिर रो धो कर खुद अपनीतबियत समझा लेंगे। इससे ज्यादा इनकाऔरक्या हर्ज हो जायेगा मगर काजी साहब का तोनाम बहिश्तियों की जेल में दर्ज हो जायगा. इसके अलावा मुझे ख्यालहै कि कहीं काजी साहबको आपसे ही कदूरतन होजाय और इस मुकद्दमे की कोई और ही सूरत न हो जाय इसलिये मैं

नहीं चाहता कि यह तनाज़ा ज्यादा बढ़े और मेरी बला ख्वामख्वाह दूसरों के गले पड़े ।

अमीरबेग -शायद मैं इसी तरह कर देता, अगर मुझे खुदा के यहां न जाना होता, मुमकिन है कि मैं इतना पसोपेश न करता, अगर अल्लाह को मुंह न दिखाना होता था इतनी लापरवाही कर सकता था, अगर मुझ को मौत का दिन याद न होता, किसी की औलाद का गला काट सकता था अगर मैं खुद साहबे औलाद न होता :—

मैं करूं ज़ुल्म तो होगा कहां मेरा भला,
किसीकी औलाद का मैं काट दूँ क्योंकर गला ।
है खुदाका खौफ मुझको मौतका दिन याद है,
तू किसी का पिसर है मेरे भी तो औलाद है ॥

भागमल [गाना]

एक बेटा है यही जान यही प्राण यही,
जिन्दगी का है सहारा यही सामान यही ।
इसी के साथ मेरी जिन्दगी वाबिस्ता है ।
आर्जू मेरी ही और है अरमान यही ।
है मेरी सारी उम्र की यह कमाई साहब ।

दीन मेरा है यही और है ईमान यही।
इसका दम है तो समझ लो कि मेरा भी दमहै,
मेरा रखवाला यही और निगहबान यही।
है यही एक बुढ़ापे की डिंगोरी मेरी,
मेजबान मेरा यही और है महमान यही।
और बेटा है कोई और न बेटी कोई,
घर का दीपक है यही और शमादान यही।
साथ इसके जो लगाई है बेगानी बेटी,
उसका ग़मख्वार यही और महरबान यही।
चारों जीवों का जनाजा न निकालो एक दम,
अर्ज मेरी है यही और मेरा बयान यही।

नाटक

हजूर अनवर! यद्यपि तीन दिनों से हमारे सिरों पर तबाही और बरबादीकी घटा छारही है, मगर हजूर की मुन्सिफ मिजाजी से मुर्दा जिस्म में फिर से जान सी आ रही है। यूं तो जितनी उंगलियां उतना दर्द, ताहम अगर और कोई सहारा होता तो "हुक्म हाकिम मर्ग मफाजात" समझ कर सबर कर लेते, और मुश्किल आसान अपनी छाती पर पत्थर धर लेते लेकिन हमारा

तो तमाम उम्र का यही सरमाया है, सारी उम्र खोकर इस बुढ़ापे में यह लाल पाया है, इस पर यह ज़ुल्म कि घर पर एक और चिता सुलग रही है, यानी एक पराई बेटी भी इसके साथ लगरही है। हमेंतो खैर सबर आयेगा या न आयेगा, मगर उस बेचारी मासूम के दिन कौन कटवायेगा।

अमीरबेग—वाकई तुम्हारी हालत हर पहलू से निहायत काबिल रहम और सख्त दर्दनाक है।

काज़ी—(अपने हमराहियों से) चलो मियां चलो इस्लाम का मालिकतो अब अल्लाह पाक है, इन अदालतों में धरा ही क्या ख़ाक है, चलकर बादशाहसे कहदो कि यह लीजिये हमारा इस्तीफा, न हमें आप की तनख्वाह चाहिये न वज़ीफा, जब मुसलमानों के दिलों में इस्लाम और शरा का यह अहतराम है, तो इस्लाम के नेस्त नाबूद होने में क्या कलाम है।

अमीरबेग—क़ाज़ी साहब! शरा के अहकाम की तामील तो ज़रूरी है, मगर कत्ल की सजा तो न उम्र मजबूरी है, इन्सानी जिन्दगी ऐसी निकम्मी चीज नहीं हो सकती, क्या इसके अलावा कोई और सजा तजवीज नहीं हो सकती?

काजी—अब आये राहे रास्त पर, इस्लाम की शरा ऐसी नामुकम्मिल नहीं जिस में किसी गुनाह का कफारा न हो, (किताब आगे करके) यह देखिये इस में साफ लिखा है कि तौहीन इस्लाम का मुलजिम या तो कत्ल की सजा पाये, अगर बचना चाहता है तो कलमा पढ़ कर मुसलमान हो जाये।

अमीरबेग—अब हम्दुलल्लाह की सीख भी बची और कबाब भी, इन्साफ भी होगया और सवाब भी जहां तक मेरा ख्याल है इसे मुसलमान होने में कोईऐतराज न होगा, कानून का मन्शा भी पूरा होगया और खुदा भी नाराज न होगा।

हकीकतराय—खाकसार आप की हमदर्दी और मेहरबानी का मशकूर है, काजी साहब का ही फैसला रहने दीजिये, मुझे यह रिआयत नामंजूर है।

अमीरबेग—क्यों? किसलिये? इसमें तेरा क्या हर्ज है?।

हकीकतराय—इसलिये कि खुदा के यहां मेरा नाम हिन्दुओं की जेल में दर्ज है।

अमीरबेग—सौदाई! यह तेरी बच्चों की सी दलील है, भला खुदा के यहां भी कोई हिन्दू मुसलमानों की तफसील है। उसके यहां तो सबके सब इन्सान हैं

वह ख्वाह हिन्दू हैं ख्वाह मुसलमान हैं, यह तुझे किसने बहकाया ?

हक़ीकतराय–जिसने मुसलमानों का नाम खुदाई रजिस्टर में लिखवाया, जो यह कहते हैं कि खुदा ने महज मुसलमानों ही को बनाया, जिनका खयाल है कि मुसलमान गुनाह करता हुआ भी गुनहगार नहीं, जिनका यह दावा है कि सिवाय मुसलमानों के कोई शख्स जिन्दा रहने का हकदार नहीं।

अमीरबेग—तेरा यह खयाल ठीक नहीं, खुदा के यहां हिन्दू मुसलमान की कोई तफरीक नहीं जिस कदर भी अफराद हैं, वह सब के सब खुदा के मखलूक और हजरत आदम की औलाद हैं।

हक़ीकतराय—तो क्या मैं खुदा की मख्लूक नहीं या खुदा की खुदाई में मेरे हक़ नहीं ?

अमीरबेग—हैं और बराबर हैं।

हक़ीकतराय–क्या मुझे भी उसी खुदा ने पैदा किया ?

अमीरबेग—बेशक।

हक़ीकतराय—मैं और आप उसी के बन्दे हैं ?

अमीरबेग—बिला शुबा।

हक़ीकतराय—तो मुआफ़ फरमाइये मैं मुसलमान नहीं।

सकता, और खुदा की दी हुई चीज को किसी के कहने से नहीं खो सकता। जिस खुदा ने मुझको हिन्दू के घर जन्म दिया, क्या उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि मुझे मुसलमान के घर पैदा करता, और जन्म से ही दीन इस्लाम का शैदा करता।

अमीरबेग—(दिल में) तआज्जुब, हैराना, एक नौ उम्र लड़का और उसकी यह लासानी! तकरीर है वह वे नजीर, दलील है वह लासानी, न मौत का खौफ न जिन्दगी से रिश्ता, इसे इन्सान समझूं या फरिश्ता(हकीकतराय से लड़के! मेरे सामने इस वक्त कोई मजहबी सवाल नहीं बल्कि तेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है, और बगैर तेरे मुसलमान हुये इसका हल होना सख्त मुहाल है।

हकीकतराय—जब खुदा की अताकरदा जिन्दगी की हो यूं मिट्टी पलीत है तो इन्सान को दी हुई जिन्दगी के कायम रहने की क्या उम्मीद है, उधार ली हुई जिन्दगी से जीना न जीने के बराबर है, बल्कि ऐसी जिन्दगी मौत से भी बदतर है।

अमीरबेग—इनबातों को जाने दे और अपनी जान बचाने की कोशिश कर।

हक़ीकतराय—यह मेरे अख्त्यार से बाहर है।

अमीरबेग—क्या हर्ज है अगर मुसलमान हो जाय।

हकीकतराय—हो सकता हूं बशर्तें फिर मौत न आये।

अमीरबेग—यह ना मुमकिन है कौन कर सकता है ऐसा वायदा।

हकीकतराय—मरना तो फिर भी बाकी रहा फिर मुसलमान होने से क्या फ़ायदा।

अमीरबेग—हकीकतराय! मैं तुझे बिल्कुल बरी कर देता मगर क्या करूं शरै के हुक्म से मजबूर हूं।

हकीकतराय—मैं आपके हुकम की बसरोचश्म तामील करता मगर क्या करूं अपने धर्म से मजबूर हूं।

अमीरबेग—अगर तू मुसलमान हो जाय तो मैं अपनी दुख्तर का निकाह तेरे साथ कर दूंगा।

हकीकतरात—यह सब कुछ उस दशा में मुमकिन है जब मौत से दायमी निजात हो जाय, या कमसे कम जीना और मरना मेरे अपने हाथ हो जाय वरना एक ने ही कौनसा सुख पालिया, जो दूसरे की जान अजाब में फँसाऊं और एक के बजाय दो को विधवा बनाऊं।

अमीरबेग—जो कुछ मैं कर सकता था वह मैं करने को तैयार हूं, अगर तू किसी तरह भी मंजूर न करे तो लाचार हूं।

हकीकतराय—आपकी गुरवानवाजी और मुन्सिफ़ामिजाजी की तारीफ और शुक्रिया अदा करने के लिये मेरे पास अलफाज़ नहीं, आपकी नेक नियती और रहम दिली पर मुझे मुतलक कोई ऐतराज़ नहीं। सिवा गुरबा आप अनहोनी बात करने को भी तयार हैं, मेरे सच्चे खैर-ख्वाह और हकीकत में गमख्वार हैं, यकीनन जिस क़दर रज मेरी मौत से आपको होगा, वह न मेरी बीबी को होगा वह न मेरे मां बाप को होगा। मैं मौत का महमान आपके इस अहसान का क्या बदला दे सकता हूं, क्योंकि एक पानी की बूंद के लिये खुद दूसरों का आसरा तकता हूं। परमेश्वर आपको जिन्दा कयामत रखे और आपके दीन व ईमान को सलामत रखे।

अमीरबेग—क्योंकि यह मुकद्दमा निहायत पेचीदा और संगीन है, एक तरफ कानून है और दूसरी तरफ दीन है। कानूनन मुलजिम काबिले रिहाई है, लेकिन शरै का हुक्म है कि या तो मुलजिम कत्ल किया जाय या मुसलमान हो, लिहाजा यह मुकदमा ब अदालत नाजिम साहब लाहौर चालान हो।

कौरां—अच्छा परमेश्वर आपका भला करे आपने तो कुछ सांस लेने का अवकाश दे दिया, आगे हमारी तकदीर।

भागमल का गाना (माल कौंस)

है बाकी अभी कुछ मुसीबत हमारी ।
भुगतनी पड़ेगी सभी ही बारी बारी ॥
लिखे हैं अभी किस कदर खाने धक्के ।
अभी किस कदर और होनी है ख्वारी ॥
तबाही अभी और होनी है कितनी ।
इसी दम ही आयेंगी विपतायें सारी ॥
है बाकी अभी...

यहां तो अड़ोसी पड़ोसी ही करते ।
सुबह शाम थोड़ी बहुत गम गुसारी ॥
हुआ है गवारा न किस्मत को यह भी ।
कि परदेश की अब करादी तयारी ॥
है बाकी अभी...

न वाकिफ है कोई न हमदर्द है कोई ।
करें हम जहां बैठ कर रात गुजारी ॥
लो जाते हैं अहले शहर हम यहां से ।
बस चैन सुख से यह नगरी तुम्हारी ॥
है बाकी अभी...

करूं हाय दुलहन को किसके हवाले ।
वह रो रो मरेगी मुसाबत की मारी ॥

न घर में कोई दूध पीता भी बच्चा।
रहेगी अकेली वह कैसे बिचारी॥
है बाकी अभी...

न घर छोड़ सकता न काबिल सफर के।
यह सबसे ही ज्यादा मुसीबत है भारी॥
वह कल की ब्याही है मासूम बच्चा।
फिरेगी सफर में कहां मारी मारी॥
है बाकी अभी...

हुई जिन्दगी तो तलख हर तरह से।
मगर मौत लाऊँ कहां से उधारी॥
मैं दुखिया हूं "यशवन्तसिंह" हर तरह से।
कजा को है किस बात की इन्तजारी॥
है बाकी अभी...

दृश्य ३ सीन १

भागमल का मकान

भागमल (गाना—असावरी)

गरदिश पड़ी हमारे पेश;
इक दुःख को तो रोते ही थे हो गया और कलेश।
गरदिश पड़ी……
रोते थे अपनी किस्मत को घर में बैठ हमेश,
यह भी भाग्री को नहीं भाया फिरेंगे देश विदेश।
गरदिश पड़ी……
गल कफनी और हाथ कमण्डल करके भगवां भेष,
अलख जगायेगा दर दर की भागमल दरवेश।
गरदिश पड़ी……
यहां पड़ा है मेरे लाल पर दुःख और कष्ट विशेष,
सास आस करती होगी नहीं आया कोई सन्देश।
गरदिश पड़ी……
देखता हूं मासूम बहू को लगे कलेजे ठेस,
कल की ब्याही आज रो रही डाल गले में केश।
गरदिश पड़ी……

आह परमात्मा ! कहां जाऊँ किसको अपनी विपता सुनाऊँ, यों तो हर तरह दुखिया रो रहे थे और घर में बैठे अपने कर्मों को रो रहे थे, मगर हमारा भाग्य ऐसा फूट गया, कि बेटे के साथ ही घर बार भी हम से छूट गया। अच्छा अब हमें इन दीवारों का क्या बनाना है, जहां हकीकत है वहीं हमारा ठिकाना है, जब जिन्दगी का सहारा ही न रहा, तो इस मिट्टी के ढेर के साथ हमारा क्या नाता रहा, जहां बेटा गया वहां घर बार भी जाता रहा, इसे आज भी दूसरे ने सम्भालना है कल भी :—

आज दुनियां से हमारा हो गया रिश्ता खतम।
झाड़ कर हाथों को जाते हैं यहां से आज हम ॥
खून दिल पीने को है खाने को है रंजोअलम।
अलविदा अहले शहर ! हम चल दिये सूये अदम ॥
एक बेटा था वही सदके में सदके दे चले ।
आये थे जैसे चले कुछ दे चले ना ले चले ॥

कौरां–रोनेको तो सारी उमर पड़ी है मगर इस मुसीबतका भी कुछ फिकर है जो मौत की तरह सिर पर खड़ा है।

भागमल–अब रह ही क्या गया जिसका फिकर करना है जो होना था वह हो ही लिया अब मौत से क्या डरना

है। वहीन रहा जिसके लिये मारे पापड़ बेले, अब तो टका सी जान है चाहे जब लेले।

कौरां—मौत आजाये तो फिर काहे को रोना है, क्या मालूम हमारी लाश को कहां कहां खराब होना है। अच्छा तकदीर के लिखे को कौन मिटा सकता है, जो होनी है उसे कौन मिटा सकता है? हम तो कल को अपना रास्ता सम्भालेंगे, मगर इस बेचारी मासूम को किसके दरवाजे पर डालेंगे।

भागमल—वह यहां रह कर अब क्या करेगी, हमारे पीछे से और रो रो मरेगी। किसने देखना किसने सम्भालना यहां तो किसी ने मरते के मुंह में पानी भी नहीं डालना, इसे कहो कि अपने बाप के घर चली जाये, अगर जीते बचते आ गये तो फिर बुला लेंगे, अन्यथा इन खन्डरों में आकर हम क्या लेंगे।

कौरां (लक्ष्मी को गले लगा कर)

गाना लावनी

बैठे बैठे घर में बेटी पड़ गये चोर कमाई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर॥
अगर जानतो पहले से अपने कर्मों की हेटी को।

क्यों लाती मैं व्याह के घरमें हाथ बेगानी बेटीको ॥
घेर लिया यम के दूतों ने घर लेटी लेटी को।
इस घरमें आकर क्या देखा आग लगे इस सेठीको ॥
पड़ा पहाड़ मुसीबत का बेचारी कल की आई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर ॥

लक्ष्मी

अच्छा माता भुगतेंगे जो विपता सिर पर आई है।
नहीं किसी का कसूर ऐसी ही तक़दीर लिखाई है ॥
दोष आपका क्या इसमें यह आपने क्या इरशादकिया
मारा मेरे कर्मों ने मुझको तुमको भी बरबाद किया ॥
क्या जाने किस जन्ममें था मैंनेऐसा अपराध किया।
मुझ कर्मों की मारी ने ही तुमको बेऔलाद किया ॥
आये मेरे मन्हूस क़दम तो तुम पर पड़ी तबाही है।
नहीं किसी का कसूर ऐसी ही तकदीर लिखाई है ॥

कौरां

अच्छा बेटी! तुझे हमारे घरसे कुछ नहीं था लहना।
नहीं लिखाथा किस्मत में इस घरका कपड़ा और गहना
फूटगई थी किस्मत तो अब पड़ा सफ़रका दुख सहना ॥

बिना हमारे मेरी लाड़ली कठिन तेरा घर पर रहना ॥
हमें ठिकाना नजरनहीं आता , कोई जगह खुदाई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर।

लक्ष्मी

कौन है मेरा घरपर और रहकर क्या यहां बनाना है।
जहां चलोगे तुम तीनों मेरा भी वहो ठिकाना है॥
यहां बैठ कर मैंने अपना किससे दिल बहलाना है।
अन्नजल से नहीं रहा वास्ता तजदिया आबोदाना है॥
परमेश्वर ने किस्मत में घर घर की लिखो गदाई है।
नहीं किसी का कसूर ऐसी ही तकदीर लिखाई है॥

कौरां

सब परमेश्वर भला करेगा मतकर कोई फिकर बेटी।
तुझे हकीकत समझूंगी मैं मत यूं आहें भर बेटी॥
तुझे लेजाते साथ सफर में मुझको लगता डर बेटी।
थोड़े दिन के लिये चलीजा तू बाबल के घर बेटी॥
पड़ी मुसीबत आन अचानक घर में बसी बसाई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर॥

लक्ष्मी

खाने को आता है यह घर यहाँ रहा नहीं जाता है।
बाबुलका घर माता मुझको नजर यहीं से आता है॥

बाबुल प्यारे हुये राम के और न कोई भ्राता है।
दुःख सहने को एक विचारी रहगई विधवा माता है॥
चाचा ताया कौन किसी का किसको पीर पराई है।
नहीं किसी का कसूर ऐसी ही तकदीर लिखाई है॥

कौरा

यह तो सच है तेरी माता भी किस्मत की मारी है।
सिर पर पति न आगे बेटा दुखिया बहुत विचारी है॥
लेकिन और न कोई ठिकाना हुई बहुत लाचारी है।
साथ सफर में तुझे लेजाना बड़ी मुसीबत भारी है॥
पड़ी हमारे साथ ही विपता तेरी अभागन माई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर॥

लक्ष्मी

कोई ठिकाना नहीं कहां जाऊं कर्मों की मारी मैं।
कर्म फूट गये मुझ दुःखिया के होगई सबपर भारी मैं॥
हे परमेश्वर कहां रहूं और कहां जाऊं दुखियारी मैं।
ब्याह करवा करके क्या देखा क्योंना मरगई क्वारी मैं।
अभी तो हाथों की मेंहदी भी नहीं उतरने पाई है।
नहीं किसी का कसूर ऐसी ही तकदीर लिखाई॥

कौरां

क्या रोयें अपने कर्मों को ऐसा ही लेख लिखाया है।
तुझ से क्या उम्मेद करें नहीं रहा पेट का जाया है॥
कुछ बेटे के ग़म ने और कुछ तेरे फिकर ने खाया है।
हमसा कर्म हीन नहीं कोई परमेश्वर की माया है॥
तरस किसी को भी नहीं आता हाय मेरी दोहाई पर।
साथ हमारे पड़ी मुसीबत तुझ बेगानी जाई पर॥

नाटक

कौरां—बेटी मेरा दिल कब चाहता है कि तुझे यहां से बिदा करूं या एक पलके लिये भी अपने से जुदा करूं, मगर भावी का चक्कर और दिनों की गर्दिश है, कर्म अपने बदले ले रहा है, जिस को बड़े लाड़ चाव से लाये थे आज अपने हाथों से धक्के दे रहे हैं।

लच्मी-अच्छा माता मेरा क्या जोर है, मां बाप ने अपने गले से बला टाली, तो आप को दे डाली, आप निकालें तो यहां से चली जाऊंगी, मेरा कौन है जिसे अपना दुख दर्द सुनाऊंगी। बाप के घर कौन है जो मुसीबत में मेरा हाथ बटायेगा, या मेरे यह दुःख के दिन कटायेगा। न बाप है न कोई भ्राता है,

एक बेचारी मुसीबत की मारी विधवा माता है। वह कहां की सुखी है, कोई दिनों का दुखी होगा, वहतो जन्म की दुखी है, पति और बेटे के शोक में पहलेही कलेजे को मरोड़ रही है और न मालूम किस तरह अपने जिन्दगी के दिन तोड़ रही है घरमें बैठी सब्र के घूंट पीरही थी, केवल एक ईश्वर की ठण्डीहवाके आसरे जी रही थी; अन्यथा जिस दिन से मेरा बाप और भाई मरा है, उस बेचारीमें क्या खाक धरा है।

कौरां—बेटी क्यों जले हुओंको जला रही है,हमतो पहले ही मरे पड़े हैं क्यों मरे हुओं की याद दिलारही है। अपनी २ किस्मत और अपना २ लहना, जितने में परमेश्वर रक्खे उतनेमेंही रहना, दिल यही चाहता है कि हर वक्त तेरा ही मुंह देखती, अपनी मर्जी से तो क्या दो घड़ी बुलाए से भी न भेजती।

लक्ष्मी—अगर साथ चली चलूंगी तो आपका क्या लूंगी और कुछ नहींतो अन्तिम समय अपने प्राण प्यारेके दर्शन तो पालूंगी। मैं तो आज तक शर्म में मरती रही, लोक लाज से डरती रही, जिस दिन से आई अच्छी तरह उनकी शक्ल भी न देख पाई। अगर मुझे आजके दिनकी खबर होती, तो अपनी यहचाह

तो मिटा लेती और अपने प्राण प्यारे के पेट भर दर्शन तो पा लेती :—

आई थी घर आपके मां बाप का घर छोड़ कर ।
एक रिश्ता रख लिया था सारे रिश्ते तोड़ कर ॥
आप भी जाते हो मेरी तरफ़ से मुंह मोड़ कर ।
मैं कहां जाऊं बताओ कर्म अपने फोड़ कर ॥
दुःख उठाने को मेरी क्यों जिन्दगानी रह गई ।
मैं बेगानी थी बेगानी की बेगानी रह गई ॥

भागमल—देवी ! यद्यपि मेरा यह दर्जा नहीं कि मैं तेरे सामने या तू मेरे रूबरू होती. और हमारी इसतरह आमने सामने बातचीत होती। (सिर पीट कर)मगर हाय मेरा प्रारब्ध ! आज शर्म हया लोक लाज सब उतार डाली और यह स्याही भी अपने माथेपर लगा ली। अन्यथा तेरा क्या काम था मेरे सामने आने का और मेरा क्या मन्शा तुझे बुलाने का। अच्छा क्या बस है, अभी क्या खबर है कि तक़दीर क्या २ गुल खिलायेगी, होनी क्या २ रङ्ग दिखा-येगी मेरी दुखिया देवी ! मेरी मासूम बेटी ! मैंने तुझ पर अपना सारा घरबार लुटाया था, मैं तुझे बेगानी समझकर नहीं बल्कि अपनी बना कर लाया

था, कौन कहता है कि तू वेगानी है, मेरी बच्ची! तू तो मेरे हक़ीक़त की निशानी है :—

यह कहता कौन है कि तू पराई या वेगानी है।
शोभा तू मेरे घर की हक़ीकत की निशानी है॥
तू देवो है तू शक्ती है तू मेरी जिन्दगानी है।
मेरे फोड़े की मरहम है मेरे दुख की कहानी है॥
अलहदा करना अपनेसे निस्संदेह मेरी गलती है।
मगर तकदीर के आगे नहीं कुछ पेश चलती है॥

लक्ष्मी—कोई डर नहीं पिताजी, कोई डर नहीं, आपकी बेटी हूं आप मेरे बाप हैं जन्म का पिता मर गया धर्म के पिता आप हैं। अगर पिता अपनी पुत्री के साथ बात करता है, तो इसमें कोई हर्ज नहीं, अगर पुत्री अपने पिता के सामने आती है तो यह कोई खिलाफ धर्म नहीं।

भागमल—आह बेटी! मेरी तक़दीर कहाँथी कि तुझ जैसी सुशील और समझदार देवी मेरे घरमें निवास करती।

लक्ष्मी—नहीं पिताजी! बल्कि मेरी ऐसी क़िस्मत नहीं थी कि जो मैं आप जैसे धर्मात्मा विचार शील बुजुर्ग के चरणों में वास करती, तकदीर तो उसी दिन फूटगई थी जिस दिन सिर पर पिता का साया न रहा, मेरे

कर्म तो उसी दिन फूट गये थे जिस दिन मेरी माता का जाया न रहा। मैंने तो जन्मसे ही ऐसी तक़दीर लिखाई है, और मुझ कर्महीन की बदौलत ही आप पर मुसीबत आई है। :—

मुसीबत आप पर लाई मेरी तक़दीर की खूबी।
मैं खुद डूबी डुबाई थी तुम्हें भी साथ ले डूबी॥
न आती आपके घरमें नयह दिन आपपरआता।
न यह दिन देखने पड़ते न बेटा हाथसे जाता॥

भागमल—इन बातों का तो परमेश्वर को ही पताहै क्या मालूम तेरा कसूर है या हमारी खता है, अब इन बिचारों को दूर कर, और जिस तरह हो सके हमारा कहना मंजूर कर, अगर तू अपनी मां के पास चली जायेगी तो हमें तेरी तरफ से तो इतमीनान रहेगा अन्यथा उधर बेटे का फिकर खायेगा, इधर हर समय तेरी ओर ध्यान रहेगा।

लक्ष्मी—अच्छा पिता जी! आना जाना तो गया जाने वाले के साथ, अबतो उस बेचारी कर्मों की मारी और जन्म की दुखियारी के कलेजे में छुरी मारनी है सो जा मारूंगी।

कौरां—(लक्ष्मी को गले लगा कर) आ बेटी! डोली

तैयार खड़ी है अब तो मेरा तेरा मिलाप घड़ो दो घड़ी है, परमेश्वर जाने फिर तेरी सूरत देखनी नसीब हों या न हो।

लक्ष्मी (गाना जोगिया आसा)

वक्त डाला ये परमात्मा ने, हो गये आज अपने विगाने
ताज ही जब उतर गया सिर से, क्या रहा वास्ता मेराघरसे
जा रही मांगने और खाने, होगये आज अपने विगाने
होगया आज ससार अँधेरा, मैं किसीकी न कोईहै मेरा
कोई जाने न कोई पहचाने, होगये आज अपने विगाने
बाप होता गले से लगाता, भाई होता बहन कह बुलाता
अब लगा कौन मु हसे बुलाने, होगये आज अपने [illegible]गाने।
मेरीजननी जनमक्यों दियाथा, परवरिश ही मुझेक्यों कियाथा
क्यों यह पड़ते मुझेदुख उठाने, होगये आज अपनेविगाने
मिलले जिन सेहोमिलनामिलाना, इसनगरमैंनफिरमुझकोआना
औरन जाना किसीने बुलाने, होगये आज अपने विगाने।
डाला किस्मतने ऐसा विछोड़ा, सबने मेरीतरफसे मुहमोड़ा
कौनसे अब लगू गी ठिकाने, होगये आज अपने विगाने
कौन 'यशवन्तसिंह' मेरादरदी, आज अलहदा उन्होंने मीकरदी
जिनको सौंपाथा माता पिता ने, होगयेआज अपने बिगाने

नाटक

कौरां—बस कर बेटी, बस कर, क्यों मरे हुए को मार रही है तेरा यहां कौन है जिसको रो रो कर पुकार रही है, जब हम ही तेरे दुश्मन बन गये तो और किसी से तू क्या आस करती है, किसको सुना रही है क्यों रो २ मरती है ! सबर कर बेटी ! तक़दीर के आगे किसका जोर चलता है।

सुशीला—चाचा ! आज बहू इतनी क्यों रो रही है क्या बाप के घर बिदा हो रही है ?

कौरां—नहीं बेटी ! बहू तो विदा नहीं हो रही बल्कि हम इसे घर से निकाल रहे हैं, भावी के वस जिन की अमानत थी उनको संभाल रहे हैं, हमको तो आज हक़ीक़त के साथ लाहौर जाना है, इस बेचारी के लिये अब कौनसा ठिकाना है।

सुशीला—चाची ! बहू के जाने का नाम सुन कर हमारा तो सीना फट रहा है, कलेजा कट रहा है। भाभी तो हमें बहुत ज्ञान की बातें बताया करतीं, थीं बड़ी अच्छी २ कहानियां सुनाया करती थीं।

कौरां—हां बेटी ! इसकी ज्ञान की बातें ही तुम्हारे पास इसकी निशानी रह गई और खुद इसकी ज़िन्दगी

तुम्हारे लिये एक कहान रह गई, चरखा कातते वक्त इसकी मुसीबत के गीत गाया करना, यह तुम्हें जग बीती सुनाया करती थी तुम इसकी खुद बीती अपनी सहेलियों को सुनाया करना।

लक्ष्मी (सहेलियों के गले चिमट कर)

[गाना—सोहनी]

मेरी सखी सहेलियो आज मिलल्यो,
मैंने फिर न इस घर आवना है।
नहीं देखनी तुसांदी शकल मैंने,
नहीं अपना मुख दिखावना है॥
ऐथों अन्न जल मेरा निखड़ गया,
खबर नहीं हुन कित्थे नू जावना है।
आज उठ गया जग तों सीर मेरा,
किन्हें सदना किन्हें बुलावना है॥
कोई रहा न जग में सुनन वाला,
किन्हों अपना हाल सुनावना है।
ठीकरा हथ विच मेरे फड़ा दित्ता,
भीक मंगनी तो मंग खावना है॥
बैठी सुत्ती दी मेरी तकदीर फुट्टी,

एत्थे आके की मैंने बनाना है।

धक्के खाने लिखे तकदीर अन्दर,
दाना मंगदी नूं नहीं पावना है।

केहड़ी आसते जावां मैं बाप दे घर,
किन्हें बेटी कह गले लगावना है।

कोई भाई नहीं मेरा मां जोया,
जिन्हें बहनदा वक्त कटावना है।

अम्मा पहलां ही दुखी दी पोट बैठी,
ओहदी छाती ते भांबड जलावना है।

बिना कन्त "यशवन्तसिंह" भला,
किन्हें मैनूं मरदी नूं पानी पिलावना है।

कौरां—बस बेटी बस रोना तो भगवान ने सारी उमर के लिये दे दिया है, यह कौनसा एकदो दिन में खतम हो जाना है, रोती रहना हमें कौनसा देखने आना है बस अब क्यों रो रही है देख तो सही जाने के लिये देर हो रही है।

(कौरां बमुश्किल तमाम एक सहेली के गले से इसको छुड़ाती है, परन्तु यह झट दूसरी सहेली के गले जा चिमटती है।)

लक्ष्मी (गाना टोडी आसावरी)

मेरा नितदा पया विछोड़ा जिन्ना रोलेवां उन्ना थोड़ा,
पल्लेपै गया रोनाते पिटना, सारी उम्र अब दुख नहीं मिटना
आज विछड़ गया मेरा ज़ोड़ा जिन्ना...

जिन्हा नालसी खेलदी हँसदी, ओह भीकोई ठिकानानादसदी
मेरी मौत भी जांन्दी नसदी, होया कालजा पक के फोड़ा
जिन्ना रोलेवां...

आज फुट्टगये मेरे भागनी, लद चल्या मेरा सुहागनी,
सारी उमर मरांगी बरानी, कौन सहूगा मेरा निहोरा।
जिन्ना रोलेवां...

पाल माप्यांकी सुख पालिया, सस सोहरेकी लाड़लड़ा लिया
मैंनू किन्हादी नजरने खालिया, पया तकदीर दा तोड़ा
जिन्ना रोलेवां...

छल्याक़िस्मतने मैंनूं उजाड़के मारिया कर्मादी हारीने साड़के
एत्यों चलदित्ती हथ झाड़ के, कदी फेर भी पावेगा मोड़ा
जिन्ना रोलेवां...

(मुहल्ले की सब स्त्रीयों का कठिनता से हकीकतराय की बहू
को डोली में बिठाना और उसकी सहेलियों का दूर तक
डोलीके पीछे २ जाना । भागमल तथा

(दूसरे नगरवासियों द्वारा जबरदस्ती उनको वापिस तमाम शहर में हाहाकार मच जाना)

दृश्य ३ सीन २

जेलखाना

हकीकतराय जेल की एक कोठरी में बैठा हुआ अपने विचारों की धुन में मग्न हो रहा है।

हकीकतराय (गाना)

बुलबुले बेकस को अच्छा आशियाना मिल गया,
दिल बहलाने के लिये अच्छा बहाना मिल गया,
अतलसो मख्वाब पर सोता था नखरे नाज से,
वाह मेरी किस्मत मुझे अब यह ठिकाना मिल गया।
मिल गया एक बोरिया नीचे बिछाने के लिये,
रूखा सूखा भुस मिला दो वक्त खाना मिल गया।
अच्छे २ भोजनों पर मारता था नाक मैं,

है गनीमत गर चने का एक दाना मिल गया।
था इरादा बेरहम काजी का तो कुछ और भी,
शुक्र है मां बाप को तो घर का जाना मिल गया।
हो भला हाकिम का कि जिसकी इनायत का उन्हें,
रोने धोने के लिये कुछ तो जमाना मिल गया।
रोयेंगे मा बाप तो सारी उम्र तकदीर को,
लिखने वालों को मगर अच्छा फसाना मिल गया।
लायेगी बादे सबा जब मेरे मरने की खबर,
गोया काजी को जमाने का खज़ाना मिल गया।
उस बिचारी बेगुनाह के साथ ही फूटे करम,
उम्र भर के वास्ते जलना जलाना मिल गया।
क्या करें "यशवन्तसिह" यह अपने २ हैं नसीब,
जेलखाना मुझको और तुम को 'टोहाना' मिल गया।

नाटक

वाह री मेरी किस्मत तूने इस छोटी सी उम्र में खूब अजमाया, मां बाप की गोद से छीना और मौतके मुंहमें ला फंसाया। प्रभो तेरी कुदरत का रंग सबसे निराला है, कोई नहीं जान सकताकि पलमें क्या होने वाला है। कल क्या था आज क्या हो रहा है, मखमल के गद्दों पर सोने

वाला एक टूटे हुए टाट के बोरिये पर सो रहा है। जो अच्छे २ भोजनों और उत्तमसे उत्तम खानोंको भी खातिर में न लाये, वह इन रूखे सूखे टुकड़ोंको गनीमत समझकर खाये ! शुक्र है परमेश्वर तेरा इस हाल में भी शुक्र है:—

जब धर्म पै अपना शीशदिया फिर रोना और चिल्लानाक्या
जब दामन तेरा पकड़ लियाफिर और से नेह लगानाक्या
जब तनपर खाक रमा बैठे फिर तकिया और सिरहानाक्या
जब प्रेमकी नगरी आन बसे फिर ढूंढना और ठिकानाक्या
मैं देखूं तुझे तू देख मुझे मैं हकीकत हूं तू हक़की है।
नियां के रिश्ते दूर हुये एक तू ही मेरा नजदीकी है॥

संसार के कुछ बंधन टूट गये कुछ टूटने वाले हैं, मां बाप स्त्री आदि के बन्धन छूट गये, अब इस नगरी के दरो दीवार भी छूटने वाले हैं। घड़ी दो घड़ी मेंअपनी जन्मभूमि को अलविदा कहने वाला हूं, किसी को यह भी पता नहीं रहेगा कि कौन हूं कहां का रहने वाला हूं, किसी से ताल्लुक होगा न वास्ता, बस मैं हूंगा और लाहौरका रास्ता, मगर हां एक अरमान जरूर दिल में रहा, कि चलती दफा अपनी ब्याहताको अलविदा भी न कहा। बस यही एक आरजू ह जो मरते दममेरे साथ जायगीऔर उस दुखिया की सूरत कयामत तकभी मुझे नज़र न आयेगी,

मगर क्यों पागल हुआ है क्यों सौदाई बन रहा है, संसार बन्धनों से मुक्त होकर फिर अपने आपको इन में जकड़ रहा है, अपने हकीकी का दमन छोड़ कर सान्सारिक सम्बन्धियों का पल्ला पकड़ रहा है, बेशक यह तेरी भूल है इस मसले पर पहुंचकर दुनियां और दुनियांकी चीजों से मोह करना बिल्कुल फिजूल है :—

जब द्वार पै तेरे आन पड़े, कोई और सामान रहे न रहे।
जब तूही समागया नजरोंमें फिर औरका ध्यान रहे न रहे
जब घरमें ही गङ्गा बह निकली बाहरका स्नान रहे न रहे
अनहदकी लहर जब मनमें फिरें चमड़ेकी जबान रहे न रहे
जब मेरे माबूद हकीकी ने पकड़ा है हाथ हक़ीक़त का
मैं साथ न दूँ बेशक उसका वह देगा साथ हक़ीकतका

(क़ाज़ी सुलैमान अचानक दाखिल होता है)

क़ाज़ी—बता क्या हाल है किस तरफ़ख़याल है ?

हक़ीकतराय—मन मग्न है दिल शाद है, जिस्म इसपिंजरे में कैद है लेकिन आत्मा आज़ाद है :—

बहुत ही राजी हूं मेरा बहुत अच्छा हाल है।
जिस तरफ पहलेथा अबभी उस तरफ ही ख्याल है ॥
कट गये बन्धन सभी परमात्मा की याद है।
कैद है यह जिस्म लेकिन आतमा आजाद है ॥

क़ाज़ी—अब तो तूने सबको अजमा लिया, हाकिम के पास शिकायत करके भी जोर लगा लिया, मगर किसी ने तुझको कैद से नहीं छुड़ा लिया ! :—

पड़ा सड़ता है इतने रोज स तू जेलखाने में।
अक्ल तेरी अभी तकभी नहीं आई ठिकाने में॥
संभलजा वक्त है अबभी क्योंनाहक जां गंवाताहै।
नहीं तो अब तेरा लाहौर को चालान जाता है॥

हक़ीक़तराय—मैं उन इन्सानों मेंसेनहीं हूं जो किसीइन्सान का भरोसा रखते हैं वह इन्सान नहीं बल्कि कुत्ते हैं, जो दूसरों की हांडियों का मजा चखते हैं :—

आसरा इन्सान का ले वह नहीं इन्सान है।
झूठा है, मक्कार है, बेदीन, बेईमान है॥
आसरा है उसीका खालिक है जो मखलूक का
है फिक्र उसको ही मेरी प्यास का और भूक का॥

क़ाज़ी—जिद्दी और बे समझ लड़के ! जिनके लिये तू मरता है उनमें से किसी ने तेरी खबर भी ली :—

हक़ीक़तराय—जिसने आज तक खबर ली वह अब भी ले रहा है, जिसने माता के गर्भ में खाने को दिया वह अब भी दे रहा है, अन्यथा :—

तुम्हारा बस अगर चलता तो एक दाने को तरसाते,

तुम्हारा बस अगर चलता तो पानी तक न दिखलाते।
मगर जिसको फिक्र है हर घड़ी और हर जमाने में,
जो बाहर दे रहा था दे रहा है जेलखाने में।

काजी—अरे बेवकूफ! यहाँ कौन देखता है ले खाना खाले
अब तक भी वक्त है अपनी जान बचाले।

हकीकतराय—बस इतनी ही था आपका पानी, यही थी आपकी मुसलमानी? इसी को आप सच्चा और मुकम्मल दीन तसव्वर करते थे? यही इस्लाम है जिससे मेरे दिल को मुनव्वर करते थे? यही है आप का खुदाय इस्लामी! जो कभी हाजिर नाजिर और कभी मुकामो! जिसमें खुदा का नूर है वह यही आपका मुनव्वर सीना है? क्या खुदा यहां मौजूद नहीं? अगर है तो क्या वह इस वक्त नाबीना है? देखली आपके दीन की सदाकत, मालूम हो गई आपकी इल्मी लियाकत, मेहरबानी कीजिये अपना रास्ता सम्भालिये और यह चिचोड़ी हुई हड्डियां किसी कुत्ते के सामने डालिये :—

हो कहने को तो मुसलमान ईमान में लेकिन खामी है
कल अल्लाह हाजिर नाजिर था क्या बनगया आज मुकामी है
दुनियां का डर ही है तुमको अल्लाह ताला मौजूद नहीं,

खाना यह मुझे खिलाते हो क्या खुदा यहां मौजूदनहीं ?

क़ाज़ी—इस मसनूई धर्म और फ़र्ज़ी बुतों पर भरोसा करना महज़ हिमाक़त है, अब तो देख लिया कि इस में किस क़दर सदाक़त है, अगर तेरी जान बचा सकती है तो वह केवल इस्लाम की ताक़त है :—

बुतों से करना कुछ उम्मेद यह तेरी हिमाक़त है,
बचाये जान तेरी यह मुसलमानी में ताक़त है।
उसे भी आजमा बैठे इसे भी आजमा ले तू,
मैं फिर कहता हूं कलमा पढ़के अपनी जान बचाले तू।

हक़ीक़तराय—जरा सब्र करो, जब वक्त आयेगा इस का भी इम्तिहान हो जायेगा। इस ताक़त की आजमायश उस घड़ी होगी, जब मौत अपना मुंह खोले तेरे सिरहाने खड़ी होगी उस वक्त आप के वह दावे बेखल होंगे, अगर मैं न देखूँगा तो और देखने वाले बहुतेरे मौजूद होंगे :—

तुम्हारी इस सदाक़त काभी इक दिन इम्तिहां होगा,
मगर कब ! जबकि आंखों में दमे आखिर रवां होगा।
लगाना जोर खूब उस वक्त जब आखिर समां होगा,
दुहाई और तोबा जिस घड़ी विर्दे जबां होगी।
इधर बेटा उधर भाई इधर बीबी खड़ी होगी,

उधर चलता बनेगा तू इधर ताकत पड़ी होगी।

काजी—(दिल में) बहुतेरा जोर लगाया, सब तरह आजमा लिया, डरा लिया, धमका लिया, लालच दे लिया, मौत का खौफ दिखा लिया, मगर ऐसा सख्त जान, इतना निडर इन्सान, न दिल पर मौत का खौफ़ न चहरे पर रञ्ज के आसार, न मां बाप की मुहब्बत न बीवी का प्यार, कतल का हुक्म हो चुका, इतने दिन से जेल की मुसीबतें झेल रहा है, उस परभी गोया मौत को खिलौना समझ कर उससे खेल रहा है, मगर जहां तक मेरा ख़्याल है इसका यह महज आर्जी इस्तकलाल है। अब तक तो इसको यही उम्मेद है कि मेरे कत्ल की नौबत न आयेगी, अव्वलतो बरी होजाऊंगा वरना ज्यादा से ज्यादा कैद जुर्माने की सजा होजायेगी मगर इसका यह झूठा खयाल है, चार दिन के बाद देखूँगा कि इसका किस क़दर इस्तक़लाल है।

(चला गया)

दरोगा जेल—कोठरियों के ताले खोलो और तमाम कैदियों की हाजिरी बोलो।

सिपाही—खबरदार, तमाम क़ैदी होशियार !

(सिपाही तमाम कैदियों को सम्भालते और एक २ की गिनती कर के बाहर निकालते हैं।)

दरोगा—जमादार !

जमादार—जी सरकार ।

दरोगा—चूंकि हकीकतराय मुलजिमका आज लाहौर को चालान होना है, इसलिये पहले उसे बाहर ले जाओ और जल्दी रफा हाजत करा लाओ ।

जमादार—बहुत अच्छा सरकार !

(जाते हैं)

दृश्य ३ सीन ३

जङ्गल

हक़ीकतराय (कौन्सिया)

देख चले इस नगरकी गलियां यहां नहीं फिर आनाहोगा,
जन्म भूमि को छोड़ चले हैं सब से रिश्ता तोड़ चले हैं,
कल को और ठिकाना होगा-देख चले...
रहा नहीं अब किसीसे नाता, नजरद्वार अब यमका आता
चल कर शीश कटाना होगा-देख चले...

तज दी गोद पिता माता की, जो मर्जी मेरे दाता की,
वही हुक्म बजाना होगा—देख चले···
रही न जग में कोई निशानी, छोड़ चले एक अपनी कहानी,
जूँ आये तूँ जाना होगा—देख चले···
कल की ब्याही प्राणप्यारी, फिरेगी दर दर मारी मारी,
घर घर अलख जगाना होगा—देख चले···
कोई घड़ी का रह गया मेला, चलदूँगा लाहौर अकेला,
सब अपना बेगाना होगा—देख चले···

नाटक

आह मेरी जन्म भूमि! बस तेरा भी आखिरी दीदार है, अब स्यालकोट की दीवारें देखनी मुझे नसीब न होंगी जुदाई की घड़ी सर पर खड़ी है, घड़ी दो घड़ी में तुझसे अलग होने वाला हूं, अच्छा अलविदा, रुखसत, अफसोस कि मरते वक्त वतन की भी मिट्टी नसीब न हुई :—

अलविदा ऐ जन्म भूमि, अलविदा मादर वतन,
अलविदा अहले शहर, रुखसत मेरी गुंचा दहन!
था न किसमत में मेरी लिखा मेरे घर का कफ़न,
हड्डियां नोंचेंगे मेरी लाश की ज़ागो ज़गन।
सूये मक़तल ले चले हैं बांध कर ज़ंजीर में,
वतन की मिट्टी भी लिखी थी नहीं तकदीर में।

हैं ? यह रोनेकी आवाज किधरसे आ रही है, कौन दुखिया किसको याद करके चिल्ला रही है ? कोई होमगर इस आवाज़ को सुन कर मेरी रूह क्यों भिच रही है मेरी तबीयत खुद बखुद उस ओर क्यों खिच रही है ?:—

कौनसा है भेद इस में और कैसा राज़ है।
खिंच रहा है दिल मेरा किस दुखीकी आवाजहै।
मिल रही है मेरे दिल की तार उसकी तार में।
क्या कोई मुझसा दुःखी है और भी संसार में॥

(डोली के एक तरफ़ का परदा उठता है और आवाज़ आती है)

आवाज़—पूछते हो दूसरों से किस की यह आवाज़ है,
नीम बिसमिल छोड़ आये थे वह कुश्तै नाज़ है।
पूछने वाला नहीं जिसका कोई सन्सार में,
वह हूं मैं कि दे चले धक्का मुझे मँझदार में।

हक़ीकतराय—कौन मेरी प्राण प्यारी ?

लक्ष्मी—(हक़ीक़तराय को लिपट कर) हाँ नाम की प्राण-प्यारी मगर जन्म की दुखियारी कर्मों की मारी, महाहत्यारी आप की तुच्छ दासी—

भरोसे किसके छोड़े जा रहे हो अपनी दासी को।
किसीने पूछना तकभी नहीं भूखी और प्यासीको॥

अगर बरबाद करके आपने मुझको यों जाना था ।
मुझे भी वो ठिकाना कोई मरने को बताना था ॥

हकीकतराय—ओह परमात्मा ! दयाकर, दयाकर, मुझ से क्या अपराध होगया, कौनसा कसूर कर दिया, क्यों ऐसा कठिन इम्तिहान लेरहा है, मरने वाले के साथ ऐसी बेरहमी का बर्ताव क्यों हो रहा है, इस प्रकार के कष्ट क्यों दिये जा रहे हैं, जिन्दगी से मुहब्बत नहीं, मरने का गम नहीं, मगर इन आत्माओं का संताप नहीं देख सकता, खैर इतना तो अच्छा हुआ अपनी प्राण प्यारी के आखिरी दीदार तो पालिये यह अरमान तो मन में न रहाः—

यही अरमान बाकी था यही थी आरजू बाकी ।
मिल लिये थे सभी मुझसे फकत थी तू एक बाकी ॥
तुझे ही ढूँढता था थी तेरी एक जुस्तजू बाकी ।
जो कहना है सो कहले रख न कोई गुफ्तगू बाकी ॥
यह मेला आखिरी दमका न फिर मिलना मिलाना है ।
न सूरत देखनी तेरी न अपना मुंह दिखाना है ॥

लक्ष्मी—(रोती हुई चुप) ।

हकीकतराय—मत रो सुन्दरी मत रो धीरज कर और सब्र की शिला अपने सीने पर धर ।

लक्ष्मी—एक दिन का रोना होता तो सब्र कर लेती, क्षणिक विछोड़ा होता तो छाती पर पत्थर धर लेती, किन्तु आपने तो वह बिपता डाली, कि न जिन्दा छोड़ी न जान निकाली, यद्यपि स्त्रियों के लिये उनके पति के बग़ैर सब सहारे महज़ बे सूद हैं, यद्यपि मेरा बाप और भाई जिन्दा होते तो यह समझती कि मेरे सर परस्त तो मौजूद हैं। परन्तु परमेश्वर ने वह आरजी सहारा भी मिटा दिया, मुझ को अनाथ और मां को विधवा और निपूती करके बिठा दिया, अब बताओ कि क्या करूं किसके दरवाजे पर जाकर मरूं ?

हक़ीक़तराय—तुम्हारा कहना सब सही, बेशक अब तुम्हारे लिये दुनियां में कोई जगह नहीं रही मगर मेरे क्या अखत्यार है, तक़दीर के आगे हर शख़्स लाचार है, अच्छा जो परमेश्वर को मंजूर, जो कुछ कहना हो जल्दी कहलो, वरना जमादार साहब नाराज़ होंगे।

जमादार—कुछ फ़िक्र न करो, किसी बात से न डरो वह कौन संग दिल इन्सान है, जिसका दिल तुम्हारी हालते ज़ार को देख कर न पिघलता हो, और तुम्हारी निस्बत उसकी ज़ुबानसे कलमे खैर न निकलता हो तुम अच्छी तरह मिल मिला लो, जब तक तुम्हारा दिल

चाहे अपने दिल के अरमान निकालो। कोई ऐतराज होगा तो मैं खुद जवाब दे दूंगा अगर कोई मुसीबत भी आयेगी तो खुशी से अपने ऊपर ले लूंगा :—

यह उम्र और मुसीबत यह जुल्म इतना सितम।
यह हुस्न यह कमसिनी और उसपे यह रंजोअलम।
बेरहम फिर्का हमारा संगदिल मशहूर हम।
दिलफटा जाताहै लेकिन आज अल्लाहकी कसम।
दिल यह चाहता है कि तेरी हथकड़ी को तोड़दूं
खुद गिरफ्तारे बला हो जाऊं तुझको छोड़दूं।

हकीकतराय—आपकी इनायत और महरबानी है मगर अपने आरजी आराम के लिये दूसरे को तमाम उम्र के लिये तकलीफ में डालना सख्त नादानी है :—
इस कदर भी आपका अहसान कोई कम नहीं।
मुझसे बेकस के लिये मरने का कोई ग़म नहीं।
सांस है जब तक न भूलूंगा मैं इस उपकार को।
जानता है कौन वरना मुझ खुदाई ख्वार को।

लक्ष्मी [गाना]

यह तो बताते जाओ क्या था कसूर मेरा।
हो जाये ताकि दिल से यह भ्रम दूर मेरा।

देकर भँवर में धक्का जाते हो बेगुनाह को ।
हैं कौन अब जहां में रक्षक हजूर मेरा ॥
कोई ठिकाना मुझको देता नहीं दिखाई ।
चाहिये था फिक्र करना कोई जरूर मेरा ॥
डाली है इस उम्र में सिरपर मेरे यह बिपता ।
क्या थी अवस्था मेरी क्या शिन शऊर मेरा ॥
किसको कहूंगी दुःख सुख किसपर करूं निहोरा ।
मिट्टी में मिल गया सब मानों गरूर मेरा ॥
वादे यही थे मुझ से जो कर रहे हो पूरे ।
घायल किया कलेजा सिर चूर चूर मेरा ॥

हकीकतराय और लक्ष्मी (सम्मिलित गाना)

हकीकतराय—सबर कर सबर कर न कर आहो जारी,
जो होनी है आखिर वह होकर रहेगी ।
जो कर्मों में लिखा आयेगा वह अगाड़ी ॥
लक्ष्मी—करूं क्या सबर मैं सबर ने ही खालो ।
न मालूम किसके सबर ने मैं मारी ॥
हकीकतराय—था संबंध इतना ही मेरा तुम्हारा ।
न मेरा कसूर और न गलती तुम्हारी ॥
लक्ष्मी—मुझे भी तो कोई बतादो ठिकाना ।
कि करलू जहां बैठ कर शब गुजारी ॥

हकीक़तराय—ठिकाना बताऊँ क्या खुद बे ठिकाना।
न दीखे अगाड़ी न सूझे पिछाड़ी ॥
लक्ष्मी—बिना आपके कौन दर्दी है मेरा।
करे मुझ अभागन को जो गमगुसारी ॥
हकीकतराय—न कोई ठिकाना न दर्दी है कोई।
चली जा तू बाबल के घर ऐ प्यारी ॥
लक्ष्मी—न बाबुल है सर पर न बाबुल का जाया।
है एक माता विधवा मुसीबत की मारी ॥
हकीक़तराय—लिखा है जो किस्मत में दुख भरके मरना।
तो क्या बस है भुगतेंगे वह भी लाचारी ॥
लक्ष्मी—फिरूं ठोकरें खाती मैं जंगलों में।
हया और शर्म आज सारी उतारी ॥
हकीकतराय—किसे जाकर 'यशवन्तसिंह' दुख सुनायें।
नहीं आज सुनता है कोई हमारी ॥

नाटक

हक़ीकतराय—सबर कर प्रिये, सबरकर! इस में शक नहीं कि जब दुनियां में मेरा आबोदाना नहीं रहा, तोमेरे लिये भी कोई ठिकाना नहीं रहा। मगर क्या किया जाये, किसकी ताकत है जो तकदीर के लिखे को मिटाये।

लक्ष्मी–यह तो सब कुछ सच है, मगर मुझे भी तो मरने के लिये कोई ठिकाना बतला जाते, ताकि कुत्ते और कौवे मेरी लाश को नोंच कर न खाते।

जमादार—मज़लूम और शितम ज़दा बच्चे, दिल तो नहीं चाहता था कि तुमको एक दूसरे से अलहदा किया जाय, मगर क्या करूँ मैं भी मजबूर हूं इस लिये अब वापिस चलना मुनासिब है।

हकीकतराय—(लक्ष्मी से)अच्छा प्यारी! अब बहुत देर हो चुकी, बहुत कुछ सिर पीट लिया, बहुतेरी रोचुकी मेरा तो लाहौर को चालान है, तेरा परमेश्वर निगाहवान है, बस अब इजाजत दे, लो रुखसत, अलविदा।

लक्ष्मी [हकीकतराय का दामन पकड़ कर]
(गाना—बहर तवील)

ठहरो ठहरो न जल्दी करो इस कदर,
छोड़ मुझको कहां आप जाने लगे।
फैसला मैं भी करती हूं अपना यहीं,
ताकि मेरी भी मिट्टी ठिकाने लगे। ठहरो ठहरो···
एक संबंध दुनियां में था आपसे,
आप ही बेरुखी यूँ दिखाने लगे।

मिल गये वायदे आज सब खाक में,
खूब अपने प्राण को निभाने लगे। ठहरो ठहरो···
चोली दामन का सम्बन्ध था आप से,
क्यों जबरदस्ती दामन छुड़ाने लगे।
आज तक एक दिन भी हंसाई नहीं,
और जाती दफे यों रुलाने लगे। ठहरो ठहरो···
पेट भर कर न दर्शन किये आपके,
प्राणप्यारे क्यों मुंह को छिपाने लगे।
कौनसा मैंने अपराध ऐसा किया,
जो जनम की जली को जलाने लगे। ठहरो ठहरो···
ओ वेदर्दी! खुदा का करो खौफ़ कुछ,
कहाँ प्रीतम को मेरे ले जाने लगे।
भाड़ में डाल दो हथकड़ी वेड़ियां,
आग तुझको अरे जेलखाने लगे। ठहरो ठहरो···
क्या करूं किस जगह जाऊं परमात्मा,
आप भी हाय मुझको रुलाने लगे।
यह किसी का नहीं दोष "यशवन्तसिंह"
कर्म अपने ही धक्के खिलाने लगे।
ठहरो ठहरो···

—※प्रथम भाग समाप्त※—

॥ ओ३म् ॥

संगीत हक़ीक़तराय

❀ द्वितीय भाग ❀

तृतीय दृश्य का शेषांक

(घटना क्रम के लिये प्रथम भाग देखिये)

हकीकतराय—बसकर देवी, बसकर अपने कलेजे को थाम ले, और जरा सब्र से काम ले। हमेशा किसी के दिन एकसां नहीं रहे, इस मार्ग में किस२ ने क्या२ कष्ट नहीं सहे। यदि मेरे इस चुद्र से बलिदान से हिन्दू धर्म का कुछ उद्धार हो गया, तो मैं समझूँगा कि मेरा लोक और परलोक से बेड़ा पार हो गया। अलावा इसके अभी तो लाहौर दूर है। देखिये परमेश्वर को क्या मंजूर है।

लक्ष्मी—जोकुछ परमेश्वरको मंजूर है वह अभी से दृष्टि आ रहा है, हाय, हाय, मेरा सुहाग मेरी आंखों के

सामने लूटा जा रहा है, मेरे सिर के ताज को आज यम के दूतों ने पकड़ रक्खा है, जिन हाथों में कल कँगना बँधा था उन्हें आज जँजीरों से जकड़ रक्खा है :—

क्यों नहीं गिर पड़ता मुझपर आसमां तू टूट कर ।
ले चले हैं दूत यम के आज मुझको लूट कर ॥
प्राण पति रूठे हो मुझ से आप इतने किस लिये ।
इस बयाबां में अकेली छोड़ मुझ को चल दिये ॥

हक़ीकतराय—(चलते हुये) प्यारी मेरा खुद सीना फट रहा है, जिगर जल रहा है, कलेजा फट रहा है, मैं तुमसे नहीं रूठा बल्कि हम दोनों की किस्मत हम से रूठ रही है, तेरे सुहाग के चाँद को गहन लग रहा है, तेरी तकदीर फूट रही है। मैं यह कब गवारा कर सकता था कि तुझको यहां जङ्गल में अकेला छोड़ देता, और खुद अपनी राह लेता। मगर क्या करूँ मजबूर हूं लाचार हूं, बेगाने बस हूं, पराये अख्त्यार हूं, अच्छा जो मुसीबत आई है उसे सब्र और शुक्र के साथ सहेंगे, जब वह दिन न रहे तो यह दिन भी न रहेंगे।

मेरी किस्मत का गया डूब सितारा लोगो !
कोई दिखलाई नहीं देता सहारा लोगो !!
आसमां और जमीं बन गये मेरे दुश्मन !
मौत ने भी तो किया मुझसे किनारा लोगो !!
मैं गई दुनियां से और दुनियां गई मेरे से !
आ रहा मुझ को नजर यम का द्वारा लोगो !!
घर से बाहर न कभी कदम निकाला मैंने !
फिर रही आज जंगल में अवारा लोगो !!
पूछने वाला नहीं कोई मेरे दुख सुख का !
हाय भावी ने मेरा खेल बिगाड़ा लोगो !!
दिन अभी आये थे खेलने और खाने के !
बसने भी पाई नहीं घर से उजाड़ा लोगो !!
मैं क्या जानूं थी कि होती है मुसीबत कैसी !
बैठे बिठाये प्रारब्ध ने मारा लोगो !!
मेरे मकसूम में कुदरत ने यही लिखा था !
मांग कर भीख करूं अपना गुजारा लोगो !!

(हकीकतराय को जेल कर्मचारी जेल की तरफ ले जाते हैं, हकीकतराय की स्त्री रोती धोती और अपने कर्मों को कोसती हुई को कहार डोली में डाल कर कस्बे बटाला की तरफ रवाना होते हैं)

दृश्य ४ सीन १

नवाब खानबहादुर नाजिम लाहौर की अदालत पहिले दिन की पेशी

(नवाब साहब एक मुकल्लफ मसनद पर फरोकश हैं, हक़ीकतराय हथकड़ी लगे हुये मुलज़िमान के कटहरे में खड़ा है, भागमल और कौरां बुत दीवार बने हुए अपनी किसमत के फैसले के मुन्तजिर हैं। अदालत का कमरा तमाशाइयों से भरा है क़ाजी सुलेमान मसले मसाइल की किताबें बगल में दबाये दाखिल अदालत होता है)

क़ाजी—अस्सलाम अलेकुम नवाब साहिब!

नवाब—अअलेकुम अस्सलाम, क़ाजी साहब कहिये मिजाज तो अच्छे हैं?

क़ाजी—जनाब की परवरिश और खुदा की महरबानी।

नवाब—क़ाजी साहब यह ऐसा क्या पेचीदा मुक़द्दमा है, जिसकी समाअत मिरजा अमीरबेग न कर सके और खामखा आप को इस दूरदराज सफर की जहमत उठानी पड़ी।

क़ाजी—अजी हजरत बाला! मिरजा साहबने फिजूलमुझे

और आपको झमेले में डाला, वरना यह मुक़द्दमा तो बिल्कुल ही साफ़ है कोई ऐसी ही वजह होगी जो मिर्ज़ा साहब को न सिर्फ़ हमसे बल्कि शरै के हुक्म से भी इख्तलाफ़ है।

नवाब—समझ में नहीं आता कि यह क्या हिसाब किताब हुआ है, आख़िर मुलज़िम से क्या जुर्म का इर्तक़ाब हुआ है?

क़ाज़ी—तौहीन इस्लाम यानी बीबी फ़ातमा साहिबा को दुशनाम।

नवाब—(सरिस्तेदारों से) इस मुक़द्दमे के मुताल्लिक़ अदालत इब्तिदाई की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाओ:-

सरिस्तेदार—(मिस्ल पढ़ता है):-

सरकार बज़रिये क़ाज़ी महरमअली मोअल्लिम मक़तब स्यालकोट मुद्दई नम्बर १ व बतवस्सुल क़ाज़ीमुहम्मद सुलैमान साहब शाही मुफ़्ती साकिन स्यलकोट मुद्दई नम्बर २

बनाम

हक़ीक़तराय वल्द भागमल क़ौम खत्री उम्र ११ साल साकिन सियालकोट खास।

जुर्म ज़ेर दफ़ा बरुए शरै तौहीन मज़हब इसलाम

मुकद्मा मुन्दर्जे उनवान में मुद्दई नम्बर १ बतौर गवाह इस्तगासा, और मुद्दई नम्बर दो बहैसियत मुद्दईपेश हुए। मुद्दई नम्बर१का बयान है कि जब मैं बग़रज अदाय नमाज मकतब से गैरहाजिर था, तो मकतबी लड़कों में किसीबातपर बाहमी तनाजा होगया, जिसपर उनकी आपस में गाली गलौंच पर नौबत आगई, और हकीकतराय मुलजिम ने हजरत रसूलजादी की शानमें फोहश कलामी से काम लिया जिससे इस्लाम की तौहीन हुई। मुद्दई नम्बर २ ने मुद्दई नम्बर १ की शहादत की बिना पर बहैसियत शाही-मुफ़्ती यह फतवा दिया कि यातो मुलजिम दीन इस्लाम कबूलकरे वरना कत्ल किया जावे। मुकद्मे हजा को मये मुलजिम अदालत हजा में पेश किया।

इन्दुल दरियाफ्त मुलजिम ने बयान किया कि पहले मकतब के मुसलमान लड़कों ने दुर्गा भवानीको बहुत सी गालियां दीं जिनके जवाब में मेरे मुंहसे भी वहीअलफ़ाज हजरत रसूलजादीकी शानमें निकल गये। हरदो मुद्दइयान ने न सिर्फ यही कि मुलजिम के बयान की कोई तरदीदी शहादत पेश नहींकी बल्कि उन्हें इस बातका खुदइक़बाल है कि फ़रीकैनके माबैन बाहमी दुरुश्त कलामी हुई, चूंकि अव्वल तो बरूए कानून बवजह सग़ीरसिनी मुलजिम

काबिल अफू है, अगर काबिल सजा भी तसलीम कर लिया जाय तो फरीकैन हैं न कि एक फरीक, क्योंकि मुकद्दमे हज़ा में मजहबी रङ्ग आमेंजी की गई है, बदीं वजह इस मुकद्दमे के मय मुलजिम व कागजात मुताल्लिका बगरज फैसला बखिदमत जनाब नाजिम साहिब सूबे लाहौर पेश करता हूं।

नोटः—कबूल इसलाम से मुलजिम इनकारी है।

कमतरीन—

मिरजा अमीरबेग मजिस्ट्रेट स्यालकोट

नवाब—क़ाज़ी साहब ! यह तो साफ़ बे इन्साफी है, जब एक फ़रीक मुलजिम है तो दूसरा क्यों काबिलमाफीहै

काजी—जनाब आली महज़ मिर्जा साहब के लिखने परही न जाइये, जरा जुर्म की नौइयत पर गौर फरमाइये।

नवाब—(दीवान लखपतरायसे) क्यों दीवान साहब आपकी इसके मुताल्लिक़ क्या राय है ?

लखपतराय—बन्दा नवाज ! क्योंकि मुलजिम मेरा हम मज़हब है इसलिये मुमकिन है कि मेरा कुछ अर्ज करना दूसरे मानों में लिया जाय, यानी मुझ पर मजहबी तरफ़दारी का शक किया जाय।

नवाब—ताहम आपको अपनी आज़ाद राय का इज़हार करना चाहिये।

लखपतराय—मेरी नाचीज राय में अव्वल तो यह मुक़द्मा ही काबिल अखराज है। क्योंकि मुलजिम बवजह कमसिनी रहम का मोहताज है। अगर क़ाबिल समाअत ही है तो फरीक सानी भी कसूर वार है, क्योंकि इस मुकद्मे में मुद्दई सरकार है, और सच पूछिये तो यह मुकद्मा ही एक फिजूल सी तकरार है।

भग्गमल का (गाना)

बेगुनाह तकसीर हाय कर दिये बरबाद हम।
रोयें जाकर किस जगह किससे करें फरियाद हम।
आसमाँ दुश्मन हुआ धरती न देती आसरा।
है ठिकाना कौनसा हों जिस जगह आबाद हम॥
एक बेटा था वही मुंह में कजा के दे दिया।
हाय हाय कर दिये क़ाजी ने बे औलाद हम॥
समझकर मकतब खुदही मक़तलमें दाखिल करदिया।
बन गये अपने पिसर के वास्ते जल्लाद हम॥
शाहजहाँ का अहद है या क़ाजियों का राज है।
हो रहे हैं बेवजह पामाल निर-अपराध हम॥
जान बख़्शी कीजिये इस बेगुनाह मासूम की।
आपका अहसान रक्खेंगे उमर भर याद हम॥

वरना हम दोनों को इससे पेश्तर कीजे क़त्ल ।
हो जायें ताकि दुखों की मार से आज़ाद हम ॥
है इसी के साथ हमारी जिन्दगी "यशवन्तसिंह" ।
क्या करेंगे वरना जिन्दा रहके इसके बाद हम ॥

नाटक

गरीब परवर ! हालात मुक़द्दमा तो हजूर पर बख़ूबी रोशन होचुके, बावजूद बेक़सूर होनेके हम काज़ी साहब के आगे बहुतेरा रोचुके । मिरजा अमीरबेग साहब ने बहुतेरा समझाया शहर के दूसरे इज्ज़तदार मुसलमानों ने हरचँद जोर लगाया, मगर जो बोला काज़ी साहब ने उसी के बरखिलाफ़ फ़तवा टटोला, और ऐसी चाल चली कि इनके आगे किसी की दाल नहीं गली । मैं नहीं कहता कि मुलजिम या उसके वारिसों की बतलाई हुई बात ठीक होती है बल्कि मुलाहज़ा मिसल से इस अमर की बख़ूबी तसदीक होती है कि पेशक़दमी मुसलमान लड़कों ने की, मगर मैं इस पर भी उनको कसूरवार नहीं गरदानता, क्योंकि इस बात को कौन नहीं जानता कि दंगा शरारत गाली गलोज बच्चों की जिबल्ली आदत है और उनकी किसी बात का गिला करना महज़ हिमाक़त है बिलफ़र्ज़ महाल अगर काज़ी साहब शरै और शाही क़ानून नाबालिग बच्चों के किसी ना मुनासिब फ़ेल

नाजायज हरकत पर चश्म पोशी करने को तैयार नहीं, तो यह अजीब अन्धेर है कि एक फरीक को तो सजा दीजाये और दूसरा कसूर करता हुआ भी कसूरवार नहीं ।

नवाब—वाकई यह तो कानून की सरीह मिट्टी पलीत है । फर्माइये काजी साहब ! आपके पास इसकी क्या तरदीद है ?

काजी—जनाब वाला खुदा आपका ईमान सलामत रक्खे शरै के मुकाबिले में इन्सानी कानून बिलकुल हेच है. और यही इस मुकद्दमे में सबसे बड़ा पेच है ।

नवाब-तो गोया आपका यह इरशाद है, कि शाही कानून शरै से बिल्कुल मुतजाद * है ।

काजी-अजी नहीं हजरत, मेरी तो यह अर्ज है कि इन्सानी कानून की निस्बत शरै की पाबन्दी ज्यादा फर्ज है । नीज मुलजिम से किसी शाही कानून का इनाहिराफ़— नहीं बल्कि दीन इस्लाम की तौहीन का इर्तकाब हुआ है, इसलिये इस पर किसी शाही कानून की नहीं बल्कि कानून शरै का अताब हुआ है । चुनाचे शरै में साफ लिखा है कि तौहीन इसलाम का मुजरिम

* विरुद्ध—विरोध भंग

या तो मुसलमान हो जाये, वरना क़त्ल की सजा पाये ऐसे मुलजिम के साथ रिआयत करने वाला खुद भी गुनहगार है, और बरूये शरै वह भी इसी सजा का सजावार है।

कौरां (गाना)

किये बेगुनाह बरबाद हम कोई खता है न कसूर है,
गर हिन्दू होना है जुर्म इतनी खता तो जरूर है।
न किसी से सरोकार था, न किसी से कुछ तकरार था,
न अन्देशा कुछ सरकार था, अब नींद कोसों दूर है।
किये बेगुनाह०...

अब घर रहा न ही दर रहा न ही हम रहे न पिसर रहा
बैठे बिठाये कर रहा, काजी हमें मजबूर है।
किये बेगुनाह०...

मुश्किलसे पाला यह लाल था, हम खुशथे यह खुशहालथा
यह दिन न ख्वाबों ख्याल था, कुदरत को क्या मंजूरहै।
किये बेगुनाह०...

यहां मैं कलेजा मसल रही, सीने मैं छुरियां चल रही,
घर पर चिता एक जल रही, हुई ग़म से चकना चूर है।
किये बेगुनाह०...

देखे न रंग सुहाग के, फूटे कर्म निर्भाग के,
दुःख सहे पति को त्याग के, जिसे खेलने का न शऊर है।
किये बेगुनाह०...
घरबार सब ले लीजिये, जाँ बख्शी इसकी कीजिये,
खैरात इतनी दीजिये यही अर्ज मेरी हजूर है।
किये बेगुनाह०...

नाटक

परमेश्वर आपका चौगुना प्रताप करे। हम तीन दुखिया मुसीबत के मारे इतने दूरदराज का सफर न मालूम कितने दिन में और क्या २ तकलीफें उठा कर आपके द्वार तक पहुंचे हैं, न कोई जुर्म है न कोई कसूर है, बिला वजह और बे सबब काजी साहब को हमारी तबाही और बर्बादी मंजूर है, शहर का बच्चा २ मेरे बच्चे की बेगुनाही की कस्म खाता है, हर शख्स इस जुल्म पर आंसू बहाता है मगर इस पर भी न किसी की पेश चलती है, न यह मुसीबत हमारे सिरों से टलती है। काजी साहब ने इस हाल को पहुंचा दिया है, अब गिरते पड़ते आपका आसरा लिया है, आपके रहम पर सारा दारमदार है, और चार जीवों की जिन्दगी आपके अख्त्यार है।

नवाब—भाई! तसल्ली रख, इस मुकद्दमे में अच्छी तरह

इन्साफ़ किया जायेगा और जहाँ तक क़ानून इजाज़त देगा तेरे बच्चे का क़सूर माफ़ किया जायेगा।

कौरां—दौलत की तरक्की और रुतबा बुलन्द हो, आपकी और आपके बच्चों की उम्र दो चन्द हो।

भागमल—हज़ूरवाला! जिस रोज से मेरा बच्चा गिरफ्तार हुआ है, हमने रोटी का एक निवाला मुंह में नहीं डाला, अगर हज़ूर अजराहे कर्म बख्शी इसको ज़मानत पर छोड़दें तो इसको कलेजे से लगाकर अपने दिल की आग बुझालें, अपने हाथ से दो चार लुकमे इसको खिलालें तो कुछ थोड़ा बहुत हम भी खालें।

नवाब—(दीवान लखपतराय से) क्यों दीवान साहब! ज़मानत के मुताल्लिक आपका क्या ख्याल है?

लखपतराय—मेरी राय में अव्वल तो यह कोई संगीन जुर्म नहीं दूसरे मुक़द्दमे हज़ा में कई क़िस्म के इश्तबाह पैदा होते हैं, इसलिये शुबे का फायदा मुलजिम को देकर अगर इसे ज़मानत पर छोड़ दिया जावे तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि कानूनी उसूल है, इसलिये मुलज़िम के वारिसों का उज़र माकूल है।

काज़ी—फ़िजूल है और बिल्कुल फ़िज़ूल है। वाह साहब

वाह यह और कमाल, ऐसा संगीन जुर्म और जमानत का सवाल :—

जिस जगह बैठे हुए कुफ्फ़ार के हों तरफ़दार,
उस जगह इन्साफ़ हो सकता नहीं जीनहार।
अगर मुलजिम की जमानत पर रिहाई हो गई,
हर जगह कुफ्फ़ार की समझो खुदाई होगई।

नवाब—क़ाज़ी साहब! यह तो आपका फ़िज़ूल सा ऐतराज है।

काजी—नहीं जनाब! यह मेरा बिल्कुल बजा ऐतराज है इससे साफ़ पाया जाता है कि आपको मुलज़िम का लिहाज है। अलावा अर्जी आपका यह हुक्म हमारे लिये सख्त बाईसे निदामत है, क्योंकि मुलजिम का जमानत पर रिहा हो जाना इस्तगाह से कमजोरी की अलामत है।

नवाब—क्योंकि मुकद्दमा हजाके मुताल्लिक हमको शक है, इसलिये मुलजिम को ज़मानत पर रिहा होने का हक़ है लिहाजा हम हुक्म देते हैं कि मुलजिम को चार हजार रुपये की शख्शी जमानत पर रिहा कर दिया जाये और बाक़ायदा जमानत नामा लिखवा लिया जाये। (भागमल से) तुम किसी ऐसे बाहैसियत

शख्स को पेश कर सकते हो जो मुलजिमकी ज़मानत देने को तैयार हो ?

दीनदयाल—मेरा सब कुछ मज़लूम हकीकत के सिर पर से निसार है, चार हजार तो क्या अगर चार लाखकी ज़मानत भी तलब की जाये तो बन्दा देने को तैयार है।

नवाब—(सरिश्तेदार से) इन से बाक़ायदा जमानत नामा लिखवा लो। (सिपाहियों से) मुलजिम की हथकड़ी फौरन खोल डालो। (हक़ीक़तराय से) कल इसी वक्त हमारी अदालत में हाजिर हो जाओ।

हक़ीकतराय—हजूर की इनायत।

क़ाजी—सरीह मुलजिम की हिमायत और बेजा रियायत।

भागमल और कौरां (गाना)

हम शुक्र आप का नाजिम साहब करते बार बार,
देखी हर जगह दुहाई, दुश्मन थी सभी खुदाई,
कुछ तुमने धीर बँधाई, सुन ली दीनों की पुकार,
हम शुक्र आप का...

कुछ किसी का नहीं बिगाड़ा, घर से बेगुनाह उजाड़ा,
कोई सूझे नहीं किनारा, देखा आंखों को पसारा,

गया भूल कज़ा को काज़ी, लगा करने दस्त दराज़ी,
हमें तबाह करके राजी, इसका दिया क्या बिगाड़,
हम शुक्र आपका...
सौ तरह के कष्ट उठाये, मुश्किल से यहां तक आये,
रस्ते में बहुत धमकाये, दिये मन माने आजार।

नाटक

नवाब—दरबार बरखास्त सब अहलकारों को इजाज़त।

(सबजाते हैं)

काज़ी—गज़ब! सितम!! जुल्म!!! अन्धेर!!!! अरे गजब खुदा का, हमने तो इस मुकद्दमे के लिए इतने दुःख झेले, हर तरह के दाव पेच खेले, इस कदर अपनी जान पर पापड़ बेले, मगर अदालत मुलज़िम की ज़मानत लेले! डूब गया दीन, उजड़ गई मुसलमानी तआज्जुब हैरानी, आखिर नाज़िम साहब ने अपने दिल में यह क्या ठानी, अब समझा, यहां भी होगई ज़र की महरबानी "नऊज़ बिल्लाह मिनुश्शैतान उर्रजीम" मगर खैर क्या हुआ अगर यह नाज़िम है तो हम भी

क़ाज़ी हैं, वह चाल चलूं और ऐसे हथकन्डे खेलूँ
कि मुलजिम के साथ उनकी जान भी लेलूं आखिर
उसने समझा क्या है मुझे, तमाम मुसलमानों में वह
आग लगाऊं जो किसी की बुझाई न बुझेः—

मुझे समझाता है उसने क्या कोई घोसी या घसियारा,
चला उल्टा ही उल्टा जिस क़द्र मैंने मग़ज मारा।
उसे है यह तकब्बुर कि वह एक सूबे का नाजिम है,
हमारे पास भी लेकिन शरै का इस्म आज़म है।

दृश्य ४ सीन २

लाहौर की मसजिद

(मसजिद में आज मामूली से ज्यादा भीड़ है नमाजी लोग नमाज पढ़ रहे हैं, क़ाज़ी लोग सुलैमान भी नमाजियों की सफ़ में शामिल है, बाद अदाये नमाज तमाम हाजरीन एक दूसरे से दुआ सलाम और मुसाफ़ाहा कर रहे ह।)

इमाम-मसजिद—नमाजी और खसूसन शहर के सब क़ाज़ी महरबानी फ़रमाके ध्यान से सुनें। हमारे

क़ाजी सुलैमान साहब आज आप साहबान से तआरुफ फरमायेंगे।

तमाम नमाज़ी—जज़ाकअल्लाह, जज़ाकअल्लाह यह क़ाजी साहब का हुस्ने इखलाक है और हमें आप से सिर्फ मुलाकात का खास इश्तियाक है।

इमाम मसजिद—हां भई क्यों न हो, वह तो हम लोगों की खुश नसीबी है, जो क़ाजी साहबने अपनी तशरीफ आवरी से हमको सरफराज फरमाया, वाकई आप बड़े आबिद मुरताज़ और नेक हैं बड़े खुदा तर्स और उलमाय दीन में से एक हैं, उम्मेद है कि आप कुछ देर के लिये लब कुसाई फरमायेंगे, और हम गुम गस्तगानु के लिये कुछ रहनमाई फरमायेंगे।

तमाम नमाजी—आमीन, आमीन!

क़ाजी सुलैमान—मोमिनी और दीन इस्लाम के परस्तारो! यह अल्लाहइलताला की आप लोगोंपर खास मेहरबानी हैकि उसने अपनी रहमत से आपको ऐसा सच्चा और पक्का दीन इनायत किया है कि जिसका सानी रूये ज़मीन पर और कोई नहीं। आपकी हिदायतके लिये अपनी आसानी किताब और आपकी शफाअत के लिये अपने खास हबीब हज़रत मुहम्मद रसूलअल्लाह

अलये वसल्लम का नजूल फरमाया, पढ़ो कलमा।

तमाम नमाजी–ला इलाह इल इन्लाह मुहम्मद रसूल ल्लाह

काज़ी– ीन इस्लाम का जहां भी कुफ्फार के साथ मुका-
बला हुआ, अल्लाहताला ने वहां ही अपने दीन की हिफाजत की और कुफ्फार को हज़ीमत नसीब हुई। तेग इसलामी ने जिस मुल्क व दाया का रुख किया उसको आनवाहिद में अपना मुती बनाता। दूर जाने की जरूरत नहीं इसी हिन्दुस्तान को देख लीजिये कि कुफ्फार का मुकाबिला करने के लिये हजरत अलाउद्दीन खिलजी शहाबुद्दीन, मुहम्मदगौरी, महमूद गजनवी वगैरा गाजियान दीन ने इशाअत इसलाम के लिये इस कदर अपना खून पसीना एक किया। चलते फिरते उठते बैठते, सोते जागते गर्जेकि किसी वक्त भी अपने फर्ज को नहीं भुलाया। सामने मौत का खतरा। सिर पर तलवारों का साया, आखिर अल्लाह ने उनके इरादों में अपनी बरकत का जहूर किया, इसलाम पर आई हुई तमाम बलाओं को दूर किया, इसलाम को अगर फखर हो सकता है तो उन गाजियों के नाम से इसलाम का अमर बोल बाला है तो उन हादियों के नाम से, जिन्होंने इसलाम पर

ऐसा २ अहसान किया, जिन्होंने इस्लाम के लिए अपनी जानों को क़ुर्बान किया। इस्लाम का सितारा अगर आज तरक्की के आसमान पर चमकता है तो उन पाक हस्तियों की बदौलत, जिन्होंने अपनी ला इनतिहा कुर्बानियां से इस्लाम को हर किस्म के खतरात से निकाला, नकि आजकल के मुसलमानों की बदौलत जिन्होंने चांदी के चन्द टुकड़ों के लिये अपने दीन ईमान नहीं बल्कि तमाम मुसलमानी को कुफ्फार के हाथों बेच डाला।

हाजरीन–तोबा तोबा, फटकार ऐसे इन्सानों पर, खुदा की लानत उन मुसलमानों पर वह मुसलमान नहीं बल्कि आला दरजे का मक्कार है, जो दीन के बदले दुनियां का खरीदार है, लाहौल वला कुव्वत इला बिल्ला!

क़ाजी—जबानी लाहौल पढ़ने से कुछ फायदा नहीं। अगर इस्लाम से कुछ हमदर्दी है तो जरा हिम्मत करो, दीन की हिफाजत के लिये मारो और मरो, खास आपके शहर में ही कुफ्र का बीज बोया जा रहा है, और चन्द पैसों के लालच में इस्लाम की लुटिया को डुबोया जा रहा है।

इमाम—किबला! यह आपने क्या फरमाया, क्या खुदा न ख्वास्ता हमारे शहर में ही इसलाम पर कोई जवाल आया?

काजी—जी हां, आपके शहर में मुसलमानी गारत हो रही है, और खुल्लमखुल्ला इसलाम की तिजारत हो रही है। मगर मुझे हैरानी है कि यहां किस किस्म की मुसलमानी है अगर आप लोगों का यही हाल रहा तो याद रखना इस्लाम हमेशा के लिये यहां से रूपोश हो जायेगा, और हरएक मोमन गुफ्फार का हलका बगोश हो जायगा।

इमाम—आखिर क्या माजरा है, जरा इसकी तशरीह तो फ़रमाइये?

काजी—आपको मालूम होगा कि एक काफिर-जादे ने बीबी फ़ातमा साहबा मगफ़ूराकी शानमें फ़ुहशकलामी से काम लिया, और हमने उसके बरखिलाफ़ कबूल इसलाम बसूरत इन्कार कत्ल का फतवा दिया, हाकिम सियालकोट ने इस मुकद्दमे को अपने अखत्यारसमाअत से बाहर तसव्वुर करके मुलजिम का चालान ब-अदालत नाजिम साहब लाहौर कर किया, नाजिम साहिब ने न किसी से पूछा न किसी से सबूत लिया, मुकद्दमा पेश होते ही मुलजिम को जमानत पर छोड़

दिया। ऐसे संगीन मुजरिम का ज़मानत पर रिहा हो जाना उसकी बरियत के आसार हैं, क्योंकि नाज़िम साहब सरीही तौर पर मुलज़िम के तरफ़दार हैं और सचतो यह बात है, कियह सब ज़र की करामात है।

इमाम—तोबा, तोबा, हज़रत यहतो दीन मज़हब की बात है, नाज़िम साहब की क्या औक़ात है कि अहकाम शरै की नाफ़रमानी करें और ऐसे मुलज़िम पर किसी किस्म की महरबानी करें, कल को हम लोग खुद अदालत में चलेंगे और इन्शा अल्ला ताला इस मुक़द्दमे में इन्साफ़ लेकर टलेंगे। देखें तो नाज़िम साहब का क्या मक़दूर है, क्यों भाई मोमिनों मंज़ूर है ?

तमाम हाज़रीन—मन्ज़ूर है, मन्ज़ूर है।

काज़ी—आप लोगों का इस्लाम पर अहसान होगा और अल्लाहताला आपपर महरबान होगा क्योंकि अल्लाह का तमाम मोमिनों के लिये यह हुक्मनाफ़िज है, कि मैं उसकी हिफ़ाज़त करताहूं जो दीन कामुहाफ़िजहै !

इमाम—बेशक मोमिन वही है जिसको अपने खुदा और रसूल के अहकाम अपनी जान से भी ज्यादा अज़ीज़ हैं, आप कुछ परवाह न करें अगर वह नाज़िम हैं तो आखिर हम भी कोई चीज हैं !

काजी–बस मेरा तो यही कहना है, कि अगर खुदानख्वास्ता इस मुकद्दमे में हमारी बात पीछे हट गई तो समझ लो कि स्लाम की तो दुनियां में नाक कट गई। उन लोगों के लिये तो खास कर डूब मरने का मुकाम है, जो दीन के पेशवा कहलाते हैं और काजी मुफ्ती वगैरा खिताब अपने नाम के साथ लगाते हैं।

इमाम—बिल्कुल बजा है आपका फरमाना, लेकिन अगर खुदाने चाहा तो यह वक्त ही नहीं आना, आप इस तरद्दुद को जाने दीजिये और जाकर आराम कीजिये

काज़ी—आराम! आज इसका मेरे पास क्या काम, अभी शहर के दूसरे काजियों के पास जाऊंगा और उनको अपना हम ख्याल बनाऊंगा। बस इधर के जिम्मेवार तुम, अच्छा लो सलाम वालेकुम।

इमाम—अजी आप बेफिक्र रहिये, इतना तरद्दुद और यह मामूली सा काम, अच्छा वालेकुम अस्लाम!

दृश्य ४ सीन ३

दूसरे दिन की पेशी

(नवाब खान बहादुर मिसल मुकद्दमे का बगौर मुलाहजा कर रहे हैं, काज़ी सुलेमान शहर के दीगर काज़ियों का एक बड़ा झुण्ड साथ लिये हुये हाजिर अदालत है, हर एक ने मसअले मसायल की किताबों का एक ज़खीरा अपने साथ लिया हुआ है, और अपने मुफीद मतलब मसायल निकाल २ कर काजी सुलेमान को दिखला रहे हैं)

नवाब—(अपने अरदली से) हकीकतराय मुलजिम को आवाज दो !

अरदली—(बुलंद आवाज से) चलो कोई हकीकतराय हाजिर है !

हकीकतराय—(अदाब बजाकर) हाजिर हूं जनाब वाला !

नवाब—काजी साहब ! मैं कल से ही इस मुकद्दमे की मिसल को निहायत गौरसे देख रहा हूं जुर्म की नौईयत के लिहाज़ से आपकी तजवीज करदा सजा बहुत संगीन और कानून व इन्साफ को सरासर खिलाफ वर्जीहै, अब फरमाइये आपकी क्या मर्जीहै।

क़ाज़ी—अजी जनाब आली ! आपने भी हद कर डाली, क्या शरै की किताब भी मैंने अपने घर में बनाली, मैंने भी इस मुक़द्दमे में निहायत गौरो खोज से काम लिया है, और जो फतवा दिया है शरै के हुक्म के ऐन मुताबिक़ दियाहै । हाथ कंगन आरसी का मोहताज नहीं, यह देखिये क़िताब, अगर अब भी आप न मानें तो इसका तो मुझ पर कोई इलाज नहीं ०

तमाम क़ाज़ी—अजी एक किताब क्या हजारों सबूत और एक से एक मजबूत ; आप भी कमाल कर रहे हैं जो ऐसे संगीन जुर्म को मामूली खयाल कर रहे हैं ?

नवाब—आपने कैसे माना कि जुर्म संगीन है ?

क़ाज़ी मुहम्मदयूसुफ़—क्योंकि इसमें इस्लाम की तौहीन है और इस्लाम की तौहीन का मुलजिम काफ़िर और बेदीन है । बस ऐसा मुजरिम या तो मुशरिफ़ बइस्लाम हो, या हमेशा के लिये दुनियां से गुमनाम हो ।

नवाब—मगर इसमें एक और भी झमेला है, कि एकतरफ मकतबके तमाम लड़केहैं और दूसरी तरफ यहअकेला है । अगर यह सजा का मस्तुजिब है तो उनको बरी करने का क्या सबब है, बल्कि अगर इन्साफन देखा जाय तो निस्बतन फ़रीक़सानी से ज्यादा कसूर हुआ

है, और यह महज इस्तआल की वजह से ऐसा करने पर मजबूर हुआ है।

मुहम्मद यूसुफ—काज़ी सुलैमान साहब ! देना इस बात का जवाब, मैं पानी पीलूं।

सुलैमान-कितने जवाब देलो, कितनी तसल्ली करदो, मगर जब अदालत का मुलजिम की रिआयत मंजूर है, तो मेरी और तुम्हारी क्या मकदूर है। गजब तो यह है कि मुसलमानों के अहद में ही मुसलमानी की यह मिट्टी पलीत हो रही है, इसलाम तबाह हो रहा है, और दुश्मनोंके घर ईद होरही है। अरे मुसलमानों ! जरा शर्म तो करो, अगर कुछ गैरत है तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। लानतहै तुम्हारी इस मुसलमानी पर तुफ है तुम्हारी इस जिन्दगानी पर, अरे तुम्हारा प्यारा इस्लाम तुम्हारी आंखों के सामने फरोख्त हो रहा है, जिसे देख२कर सच्चे मूमिनों का खून साख्त हो रहा है जब ऐसे २ संगीन मुकद्दमात में रिश्वत खोरीका यह आलम है, तो आम मुकदमात में तो जिस कदर लूट मचाई जाये कम है। कुफ्फार को भी तो इसी हौसले पर इतनी उछल कूद है, कि जो आजकल के मुसलमान हुकाम का मामूल है, वह

ज़र अले-असलाम हमारे पास मौजूद है, जो सब से बड़ा और सबसे अफ़ज़ल बरूद है। ऐमुसलमानों! जरा अपने फर्ज को पहचानो, अरे तुम्हारा किस तरफ़ ख़याल है, तुम्हारे लिए तो इस वक्त जिन्दगी और मौत का सवाल है, तुम जागते हो या सोये पड़े हो, बोलो अब खामोश क्यों खड़े हो ?

तमाम क़ाज़ी—आप का एक २ लफ़्ज़ पत्थर की लकीर है, अगर इस मुक़दमे में जरा भी रिआयत हुई तो हमारी तरफसे भी नारए तकबीर है। जो मुश्किलात और मुसीबतें आयेंगी खुशी से सहेंगे, न मालूम कितने खून के दरिया बहेंगे, मगर जब तक दम में दम है, इन्साफ लेकर रहेंगे। मुसलमानों ! करो अपने अल्लाह को याद !

तमाम हाजरीन—(बुलन्द आवाज़ से) जिहाद, जिहाद जिहाद !

नवाब—(दिलमें) यह मुक़दमा तो निहायत खतरनाकसूरत अख्तयार कर गया, मुलजिमको बचातेरमुझे अपना ही फ़िकर पड़ गया, यहांतो तमाम के तमाम मुसलमान ही बिगड़ खड़ेहुये, वह मसल हुई गये थे नमाज बख्शवाने उल्टा रोजे गले पड़े। एक तरफ रिश्वत

को इलजाम लगाया जाता है, दूसरी तरफ जिहादका शोर मचाया जाता है। ऐसा न हो कि यह मजहबी दीवाने सचमुच ही जिहाद करदें और आम जाहिल लोग इनके कहने में आकर फ़िसाद करदें और सलतनत के तमाम निजाम को तहोबाला व बरबाद कर दें। मुसलमानों की तरफ़ अलग ऐतराज होंगे। जहांपनाह सुनेंगे तो वह अलहिदा नाराज होंगे. बहुत काम खराब हुआ, बड़ा जानको अजाब हुआ मुलजिमको सजादूं तो न कानून मानता है न इन्साफ बरी करूं तो यह इशारा तुलअर्ज बरखिलाफ। या अल्लाहताला! तूने मुझे किस झमेले में डाला। या जुलजलाल! तूही मुझे इस मुसीबत से निकाल। (कुछ सोच कर) क्यों क़ाजी साहब! अगर यह मुसल मान होजाय, फिर तो आपको कोई ऐतराज नहीं?

सुलैमान—अलहम्दलिल्लाह इस फैसले से कोई मुसलमान भी नाराज नहीं।

नवाब—हक़ीकतराय! तुम्हारी जान तो सहज ही छूटी, गोया सांप भी मर गया और लाठी भी न टूटी।

हक़ीकतराय—यह जनाब का खयाल है, मगर मेरीनाक़िस राय में तो जब हिन्दू धर्म की डोर मेरे हाथ से छूट

गई, तो गोया सांप भी निकल गया और लाठी भी मुफ्त में टूट गई।

नवाब—लड़कपन न कर, इसमें तेरे लिये हर किस्म की आसानी रहेगी खुदाकी इनायत और शाहन्शाहकी तुझ पर महरबानी रहेगी, और सब से बढ़कर तेरे मां बाप की दुनियां में निशानी रहेगी।

हक़ीकतराय का (गाना)

मैं बाज आया ऐ हजरत आपकी इस महरबानी से,
यह वह रिश्ता नहीं है छोड़दूं जिसको आसानीसे।
तुक्स क्या हिन्दू रहने में जो इसको तर्क मैं कर दूं,
बदलदूं किस लिये अपने धर्म को मुसलमानी से।
मैं उसका छोड़कर दामन जो है ब्रह्माण्डका मालिक,
करूं पैदा तअल्लुक फकत अल्लाह आसमानी से।
अगर वेदों के मन्त्र ही न मुक्ति कर सके मेरी,
तशफ्फी हो सकेगी फिर न आयाते कुरानी से।
किया है कुल जमाने ने जहां से ज्ञान को हासिल,
मैं उसको छोड़कर बहलाऊं दिल किस्से कहानीसे।
तुम्हारी आबे जम जम खाक मुझको शान्ती देगा,
बुझी है प्यास मेरी जब न गङ्गा के ही पानी से।

न मुझको चाहिये जन्नत न ख्वाहिश हूर गिलमां की,
मुझे तो मुआफ़ रखिये आप इस फ़ैले शैतानी से।
अमानत है यह ईश्वर की इसे मैं छोड़ दूं क्यों कर,
मुझे है सख्त नफ़रत इस क़िस्म की बेईमानी से!
जो मरजी मुद्दई की थी वही है आप की मन्शा,
यही इन्साफ़ होता है अदालत शाहजहानी से।
यही है फैसला तो कल क़त्ल करते अभी करदो,
नहीं "यशवन्तसिंह" उलफ़त मुझे इस जिन्दगानी से।

नाटक

हजूरवाला! माफ़ फ़रमाइये, अगर यह फैसला मुझे मंजूर होता तो न आपको इसक़दर सरदर्दी करनी पड़ती न मैं इतना सफ़र करने पर मजबूर होता। मैं ऐसी कुफ़रन न्यामत नहीं हूं कि खुदा की दीहुई चीज पर नफ़रत या हिकारत का इजहार करूं या उसकी दी हुई अमानत को अपने ऐसो आराम पर निसार करूं। ये उसके हुक्म की सरासर ना फ़रमानी है, शिर्क है, कुफ्र है बेईमानी है, क्योंकि खुदाके कामों पर नुक़ता चीनी करना फ़ैलेशैतानी है, मैंने हिन्दू के घर अपनी मर्ज़ी से जन्म नहीं लिया है, बल्कि उस खुदा ने ही मुझको हिन्दूघराने में पैदा कियाहै।

जो लोग मुझको जबरदस्ती मुसलमान बनाने पर तुलेबैठे हैं, यह उनकी सरासर हिमाकत है, जब मुझको खुदाने ही हिन्दू बना दिया, तो फिर मुसलमान बनाने की किस की ताकत है।

नवाब (गाना)

मेरी दानिस्त में तो यह महज तेरी नादानी है,
जो तूने बे वजह और बे सबब मरने की ठानी है।
मुयस्सर आकबत ओरऐश दुनियाँ के मयस्सर हों,
हुई तुझ पर खुदा की खास गोया महरबानी है।
हर एक इन्सान का है फर्ज जाँ अपनी बचाने का,
बन आई मौत जा मरना जहालत की निशानी है।
तेरी सुन सुन के बातें हो रहा मुझको तआज्जुब है,
अभी तू कल का बच्चा और यह तेरी लस्सानी है।
नहीं अपने नफे नुकसान की तुझ को खबर कोई,
लड़कपन का जमाना है अबस जोशे जवानी है।
बुराई क्या नजर आई तुझे इसलाम के अन्दर,
कोई मजहब है गर सच्चा तो सुन यह मुसलमानी है।
सिवा इसके नजर आती नहीं सूरत मुझे कोई,
तू होजा मुसलमा गर जिन्दगी अपनी बचानी है।

किसी अच्छे से ओहदे पर तुझे मुमताज करदूंगा,
तू वादा कर अगर यह बात मेरी आजमानी है।

नाटक

लड़के! तू जिद न कर इस जिद का नतीजा तेरेहक में बहुत खराब होगा, जरा सोच तो सही इस हराम मौत मरने से तुझे कौनसा सवाब होगा। अपने मां बाप के बुढ़ापेकी तरफ़ खयालकर, अपनी कमसिन बीबीकी तरफ़ देख, अपनी आने वाली जवानीपर रहमकर बखुदा मैं सच कहता हूं कि अगर तू मुसलमान होना मंजूर करे, तो खिलअते फाखरा से तुझे सरफ़राज कर दूंगा और आज ही किसी आला ओहदे पर मुमताज कर दूंगा। अलावा अजीं हरएक मुसलमानकी ज़बान पर तेरे नाम का रुतबा होगा और शाही दरबार में तेरा आला रुतबा होगा। कुफ़्फार की जेल से निकल कर कोमिनों में तेरा शुमार होगा, खुदा की रहमत तुझ पर नाजिल होगी और रसूल की शफाअत का हकदार होगा। जब तेरा मददगार खुदा का हबीब होगा, तो जिन्दगी में ऐश और मरने पर बहिश्त नसीब होगा।

हक़ीकतराय—आपका फरमाना बिल्कुल सही और आपने एक २ बात मेरे फायदे की कही। बिलफ़र्ज महाल

अगर दुनिया के लिये मैंने अपने धर्म को खेरवाद भी कहा तो बक़ौल आपके मरनातो फिर भी बाकी रहा। हां अगर मुसलमानो में कोई ऐसी बात हो, जिससे हमेशा के लिये मौत से नजात हो, तो मुझे कबूल इस्लाम से इन्कार नहीं वरना इन दुनियावी लालचों में आकर मैं अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं।

नवाब (गाना)

जरा सी बात पर अपने को यूं फना करना,
बजाय तोबा के एक और भी गुनाह करना।
खुश नसीबी से तुझे मिलता है सच्चा मजहब,
वास्ते दूसरों के भी यही दुआ करना।
बुतों की उलफते दिल में क्या मजा देखा,
अबस है ऐसे बे वफाओं से वफा करना।
तुझे तो दीन भी मिलता है और दुनिया भी,
यहां है ऐस वहां बहिश्त में रहा करना।
वरना हाल तेरा सोच कि क्या होगा,
बरोज हश्र तलक आग में जला करना।
मुझे है सख्त तआज्जुब तेरी हिमाकत पर,

बहिश्त छोड़कर दोजख के दर को वा करना।
बजुज खुदा के किसी और का कलमा पढ़ना,
खुद के साथ है यह भी तो एक दगा करना।
रहेगा तुझ पै मिहरबान वह अल्लाह ताला,
नमाज पढ़ना उसी की खुदा खुदा करना॥

हकीकतराय (गाना)

खुदा खुदा न सही राम राम कर लेंगे,
जहां कहेगा वह वहीं कयाम कर लेंगे।
खुशी से आप हुक्म मेरे कत्ल का दीजे,
हम इस को अपना तसव्वुर इनाम कर लेंगे।
न मुझे चाहिये जन्नत न तलब हूरों की,
हम अपने नफ्स को अपना गुलाम कर लेंगे।
जहां वे रहते हों परहेजगार और आबिद,
ऐसी जन्नत को दूर से सलाम कर लेंगे।
हमारे जैसे ही दस पांच जिस जगह होंगे,
नरक भी होगा उसे स्वर्ग धाम कर लेंगे।
नहीं है मुझको जरूरत किसी वसीले की,
बराह रास्त उसी से कलाम कर लेंगे।
मोमिनों के लिये ही रहने दो जन्नत के मजे,

हम अपने रहने का खुद इन्तजाम कर लेंगे।
नमाज होगी हमारी सफे शहीदां में,
किसी शहीद को अपना इमाम कर लेंगे।
किसी के करने से मेरा न कुछ भी बिगड़ेगा,
तुर्क अपनी ही तुर्की तमाम कर लेंगे।
कज़ा से डरते हैं "यशवन्तसिंह" जो बुजदिल हैं,
मगर वह हम हैं जो मरकर नाम भी कर लेंगे।

नाटक

नवाब—इस जिद का नतीजा?

हकीकतराय—बड़ा शानदार।

नवाब—वह क्या?

हकीकतराय-जुल्म का खात्मा, जालिमों की तबाही, मज-
लूम की दादरसी, जाबिरों की रूसियाही, हकीकत×का
इनकिशाफ़*सच और झूठ का इन्साफः—
यह न समझो रायगां=जायगा यह मेरा कत्ल,
देख लेना इस शजर को किस तरह लगते हैं फल।
जल्द होगा फैसला थोड़े दिनों की देर है,
है यहां अन्धेर तो क्या वहां भी अन्धेर है?

सत्यता। * प्रकाश = व्यर्थ।

नवाब—नहीं मेरा यह हरगिज मंशा नहीं कि ख़ुदा न ख्वास्ता तू दुनियां से इस तरह नामुराद जाये, मेरी तो दिली ख्वाहिश यह है कि तू अल्लाह ताला से हयात खिज़री का दर्जा पाये। उम्र भर तेरी जिन्दगी के आराम व असायश का जिम्मेवार हूं, अगर तू फ़िर भी न माने तो लाचार हूं।

हकीकतराय—यह जिन्दगी का असली मकसद नहीं बाल्क एक किस्म की नुमायश है, जो यह समझते हैं कि जिन्दगी का मकसद महज खाना पीना और आराम असायश है। अगर आराम व असायश जिन्दगी के आवश्यक अङ्ग होते तो एक शख्स अमीर और दूसरा कंगाल न होता बल्कि सब का एकसा हाल होता। अगर जीवन के अभिप्राय का आपने यही मयार ठहराया तो मेरी राय नाक़िस में आपने सख्त धोखा खाया है, बकौल शेखसादीः—

खूरदन बराये ज़ीस्तन न ज़िक्र क़रदन अस्त,
तो मौतक़िद कि ज़ीस्तन अज़बहरे खूरदन अस्त।

नवाब—मान लिया, अगर मुसलमान होकर भी तो तेरी ज़िन्दगी के यह मक़सद पूरे हो सकते हैं, फिर तुझे मुसलमानी से इस कदर क्यों कदूरत है?

हक़ीक़तराय—जब मैं अपने धर्म में किसी क़िस्म का नुक़्स नहीं देखता तो मुझे मुसलमान होने की क्या जरूरत है।

नवाब—मेरा इस क़दर इसरार करने का मक़सद महज़ तेरी जान बचाना है, क्योंकि मुझे तेरी ख़ूबसूरती और क़मसिनी पर रहम आता है, अगर तू मुसलमान होना मंजूर करे तो मैं तुझे अपनी फ़रज़न्दी में लेने का तैयार हूं:—

ज़िद न कर बेफ़ायदा इसलाम को मंजूर कर,
दो पिसर हैं पेशतर और तीसरा तू भी पिसर।
परवरिश तेरी करूंगा मैं मिसल औलाद के,
तीनों ही मालिक बनोगे तुम मेरी जायदाद के।

हक़ीक़तराय—आपका इरशाद तो बिल्कुल सही है, मगर जन्म के मां बाप ने ही कौनसा सुख पा लिया जो आपकी कसर रही है। आपका सीमोजर आपकी औलाद को फले, आपकी जायदाद को लेकर क्या बनाऊंगा जब अपना ही सब कुछ छोड़ चले:—

चाहिये मुझको न ज़र ख्वाहिश है न जायदाद की,
हक़तलफी क्यों करूं मैं आपकी औलाद की।
जिस क़िस्म का सुख मिला है जन्म के मां बाप को,
ऐसा ही आराम पहुचाऊंगा हजरत आपको।

नवाब—(भागमल से) भागमल ! तेरा लड़का फिजूल जिद करता है और ख्वहमख्वाह बिन आई मौत मरता है। तुम इसको समझाओ, अगर मानता है तो इसको राह रास्त पर लाओ।

भागमल—गरीब परवर ! मैं आपके कहने के बगैर ही बहुतेरा समझा चुका, रचन्द जोर लगा चुका, बिनाये मुकद्दमा हजूर पर अच्छी तरह आशकार है, अब तो हजूर की महरबानी पर सारा दारोमदार है, और इस बच्चे की जिन्दगी तीन जीवों की जिन्दगी का आधार है।

नवाब—तुम्हारी हालत पर रहम करके मुकद्दमे को कल की तारीख पर मुल्तवी करता हूं, इसको अपने साथ ले जाओ, और अच्छी तरह समझाओ, उम्मेद है कि तुम्हारे कहने से मान जावेगा और अपने नफे-नुकसान को जान जायेगा।

दृश्य ४ सीन ४

तीसरे दिन की पेशी

(नवाब साहब कचहरी में रौनक अफरोज हैं काजियों का हुजूम आज खिलाफ मामूल वक्त से पहले ही हाजिर अदालत है और हर एक अपने मुफीद मतलब मसायल निकाल २ कर नवाब साहब को दिखा रहा है।)

नवाब-(अरदली से) हकीकतराय और भागमल को आवाज़ दो।

अरदली-(जोर से) चलो कोई हकीकतराय और भागमल है

(हाजिर होते हैं

नवाब-हकीकतराय तुझे मुसलमान होना मंजूर है ?

हकीकतराय-नहीं हजूर।

नवाब-मालूम होता है कि इस जिद के नतीजे से तू अभी तक बेखबर है।

हकीकतराय-नतीजे की खबर है, एक तरफ जबर है, दूसरी तरफ सबर है।

नवाब--नहीं, नहीं अगर तुझको कोई इसके नतीजे से खबरदार करता, तो यह नामुमकिन था कि तू इस

क़दर इसरार करता और मुसलमान होने से इन्कार करता।

क़ाजी–जनाब आली यह तो सब कुछ मान ले मगर इसको कोई मानने भी दे, अव्वल तो मिरजा साहब की नाजायज नरमी ने ही बहुत कुछ गड़बड़ घोटाला कर दिया, इस पर आपने इसको जमानत पर छोड़ कर इसका हौसला और भी दुबाला कर दिया। इधर आपने इसको इतना सिर पर चढ़ाया इधर बहकाने सिखाने वालोंने इसको कुछ का कुछ पढ़ाया वरना अगर कुछ दिन और जेलखाने की हवा खाता तो इसका दिमाग तो खुद बखुद दुरुस्त हो जाताः—

जेल ने करदी है अच्छे अच्छों क सीधी हवा,
जेल में आकर न मुतलक़ किसीमें कसबल रहा।
जेल में जोरआवरों की हो गई सीधी कला,
शेर भी पिंजड़े में पड़ कर हार देता हौसला।

नवाब–(भागमलसे) भागमल! तुमने भी हमारी रियायत से कोई फायदा नहीं उठाया, और इसको समझा बुझा के राह रास्ते पर न लाया।

भागमल–जनाब आली! मैंने अपनी सब तदबीर लड़ाली

जो तकलीफ न उठानी थी वह उठाली, हया और शर्म बेच डाली, मगर मेरे बुढ़ापे की डंगोरी किसी ने न सम्भाली।

नवाब—हकीकतराय! तू क्यों नहीं मान जाता, क्या तुझे अपने बूढ़े बाप पर रहम नहीं आता।

हकीकतराय—क्यों नहीं आता मगर मेरा रहम उनको कोई फायदा नहीं पहुंचाता :—

दूसरों के रहम का मोहताज जो इन्सान हो,
दूसरोंके हाथ में जिसका जिस्म और जान हो।
आ रहा जल्लाद को खंजर तले जिसका गला,
रहम उसका क्या किसी का खाकर देगाभला।

नवाब—तेरा रहम न सिर्फ तेरे मां बाप ही को फायदा पहुंचा सकता है, बल्कि तेरी भी जान बचा सकता है, मैं बगैर किसी किस्म की शर्त के भी तुझ को आजाद कर देता अगर शरै का हुक्म मेरे कलम को न पकड़ लेता:—

जान बख्शी हो तेरी और मैं बचू इस पाप से,
सुर्खरू हूं शरै से तुझ से तेरे मां बाप से।
जिस तरह से तू कहे करने को मैं तैयार हूं,
काम लेकिन-तब बने कुछ तू झुके कुछ मैं झुकूं।

हक़ीक़तराय–दुनियावी कामों में मुझे एक अदना से अदना इन्सान के आगे झुकने से इन्कार नहीं, लेकिन धर्म के मामले में सिवाय परमेश्वर के किसी और के आगे सिर झुकाने को तैयार नहीं—

सब झुके सबकुछ झुके अर्जोसमां* भी गर झुके।
ये नहीं मुमकिन कि मेरा इस तरह पर सिर झुके॥
मौत हो सन्मुख खड़ी सिर पर खड़ा हो काल भी।
सिर तो क्या झुकना, नहीं झुकने का सिरका बाल भी॥

नवाब–मुझे खुद अफसोस है कि मैं शरै के हुक्म से इनहिराफ+नहीं कर सकता।

हक़ीकतराय—मुझे अफसोस है कि मैं कोई काम अपने धर्म के खिलाफ नहीं कर सकता।

नवाब—जान से जायेगा, जहान से जायेगा, मां बाप से जायेगा, अपने आप से जायेगा।

हक़ीकतराय–जान से जाना आनी जानी है, जहान एक रोज़ फानी ×है मां बापसे उसी रोज गया जब इन्हों ने मकतब के कसाई यानी मकतब क़ाज़ी को संभाला अपने आप से उसी रोज गया जब माता

* पृथ्वी आकाश, + विरोध × नाशवान।

ने गर्भ से बाहर निकाला:—

है दुनियां से रिश्ता जिनका मैं नहीं हूं उन रिश्तेदारों में।
जो धर्म के साथ मखौल करें मैं नहीं हूं उन गद्दारों में॥
नहीं जाहिर बातिन एक जिन्होंका नहीं मैं उन मक्कारोंमें।
है नाम फ़ेे महज़ हक़ीक़त जो मैं नहीं उन दुनियादारों में॥
जो रोज अज़ल से आज तलक देता है साथ हक़ीक़त का॥
मैं छोड़ दूं कैसे उसे न जिसने छोड़ा हाथ हक़ीक़त का॥

नवाब—मैं तेरे साथ हर क़िस्म की रियायत करने को तैयार हूं, अगर तू नहीं मानता तो लाचार हूं शरै के हुक्म के खिलाफ़ चलना मेरे लिये सख्त मुहाल है, बअलफ़ाज़ दीगर तेरे लिये क़त्ल की सज़ा बहाल है।

खुदादोस्त—अगर यह इन्साफ़ है तो सलतनत पर तबाही और इसलाम पर ज़वाल * है।

काज़ी—(दिल में) या अल्ला ताला! कर इस मलऊन का मुंह काला! इस कमबख्त ने हमारे काम में बड़ा खराब डाला, जहाँ हम पहुंचे इसने वहीं सिर निकाला।

नवाब—तुम कौन हो क्या नाम है क्या कहना चाहते हो?

खुदादोस्त—इसलाम का ग़मख्वार, सचाई का तरफ़दार,

* नाश।

शरै का परस्तार, सलतनत का वफादारः—
खुदादोस्त नाम है आलीजाह इस गुमनाम का।
मुसलमान मजहब है और खादिम हूं मैं इसलाम का॥
कलमा गो पाबन्द हूं मैं शरै के अहकाम का।
सलतनत का खैरख्वाह हमदर्द खासो आम का॥
मेरी हाजिर इस जगह होने की यही गर्ज है।
हाथ से इन्साफ को देना न इतनी अर्ज है॥

नवाब—क्या इस मुकद्दमे के साथ तुम्हारा कोई खास तआल्लुक है या कुछ और फर्ज है?

खुदादोस्त- बराह रास्तया बिलावास्ता मेरा इस मुकद्दमे के साथ कोई तआल्लुक नहीं, मगर जुल्म के बरखिलाफ आवाज उठाना हर इन्सान का फर्ज है:—
जिसके सीने में हो दिल और दिल में जिसके दर्द हो।
संगदिल, बुज़दिल हो कमदिल हो, चाहे नामर्द हो॥
यह नहीं मुमकिन कभी वह इस जुल्म को सह सके।
बेगुनाह का खून हो, इन्सान चुपका रह सके॥

नवाब—जुर्म के लिहाज से वाकई यह सजा संगीन है और इसकी बेगुनाहीका मुझे खुद यकीन है। इन सब बातों को नजर अन्दाज करते हुए भी मैं चाहता हूं कि इसके हाल पर महरबानी करूं मगर मुश्किल

तो यह है कि शरै के हुक्म की किस तरह ना फरमानी करूं।

खुदादोस्त—तअज्जुब है कि आप जैसे नहांदांदा मुदब्बिर और तजुर्बेकार जो सलतनतके एक रुक्न आजम* कहलाते हैं शरै का हुक्म समझने में कैसी गलती खाते हैं। किसी खानेजाद या खुद साख्ता शरै का यह मनशा हो तो मुझको याद नहीं, वरना शरै इसलाम का हरगिज २ यह इरशाद नहीं:—

कोई दिखलाये शरै को यह कहां इरशाद है।
जुल्म है और जब्र है यह सितम है बेदाद है॥
जान लेकर बेगुनाहकी तुम मनाओ घर में ईद।
यह शरै क्या है शरै भी है सरीह मिट्टी पलीद॥

काजी—बकवास महज बकवास न शरै से वाकिफ न दीन का पास, न इसलाम का शैदाई न हक का मुतलाशी फिजूल करता है अदालत की शमाखराशी:—

तू बकता है जो अपने आपको मूमिन बताता है।
महज बकवास करके रौब अदालत पर जमाता है॥
यह कहता कौन है कि नाम इसका मुसलमानी है।
सरासर यह कुफ्र है, शिर्क है और बेईमानी है॥

---

* महान अंश

खुदादोस्त—अगर मेरी बकवास आपके गोश गुज़ार होकर आपके दिल में रहम और इन्साफ के लिये जगह बनादे, अगर मेरी बकवास आपकी आंखों से तआस्सुब को पट्टी हटादे, अगर मेरी बकवास आप को गुनहगार और बेगुनाह में तमीज़ करादे, अगर मेरी बकवास आपको आक़बत का रास्ता दिखादे अगर मेरी बकवास आपको इसलाम और शरै के मानी बतादे और अगर मेरी बकवास आपको राहे रास्ते पर ला दे तो मैं इस बकवास को न सिर्फ अपने लिये बल्कि आपके लिये और इसलाम के लिए, सल्तनत के लिये और सल्तनत के ऐहकाम के लिये, हर एक मुसलमान के लिये, यहां तक कि बनी नौ इन्सान के लिये निहायत ही मुबारिक ख्याल करूंगा :—

किसी के दर्द में दुःख में किसी का काम कर जाऊं।
किसी मज़लूम की खातिर अगर जां से भी मर जाऊँ॥
किसी के ज़ख्म में अगर मरहम बनके भर जाऊँ।
किसी पर ज़ुल्म हो मैं खौफ से अल्लाह के डर जाऊँ।
रहूं डरता बदी से और गुनाह से गुनहगारों से।
तो मैं बेदीन अच्छा आर जैसे दीनदारों से॥

काजी—(अदालत से) खयाल फरमाइये जनाब वाला

इस शख्श ने हमारी इज्ज़त और अदालतकी तौक़ीर को बिल्कुल मिट्टी में मिला दिया ! या तो इसको यहां से निकालिये, वरना हमारा सलाम लीजिये और अपनी अदालत को संभालिये। जिस क़द्र गुफ्तगू की तमाम वेवकूफ़ाना, यह अदालत है या मखौल खाना।

नवाब-क़ाज़ी साहब ! बात तो इस की हर एक करीन इन्साफ है, यह बात दीगर है कि आपको इसकी राय से इख्तलाफ है।

क़ाज़ी—तो यूं नहीं फरमाते कि हम ही इस मुक़द्मे की बुनियाद को खो रहे हैं, और दीदा दानिस्ता इस्लाम की लुटिया डुबो रहे हैं।

अदालत ने ही मुलज़िम की हिमायत की अगर ठानी।
बताओ फिर रहे क्या खाक दुनियां में मुसलमानी॥
कहां इस्लाम और कैसा शरै के नाम का चरचा।
हुआ अब हर जगह मुबलिग अलै अस्लाम का चर्चा॥

खुदादोस्त—यह इस्लाम की लुटिया नहीं डुबाते बल्कि आप और आपके हमनवा इसलाम और सल्तनत इस्लाम का बेड़ा गर्क करने को तैयार हो रहे हैं, जो एक बेगुनाह और मासूमके दर पै-आज़ार हो रहे हैं।

जरा किसी ने खुश्रा लगती बात कही, तो आपके गुस्से की कोई इन्तिहा न रही। किसी को रिश्वत खोर बताया, किसी पर कुफ्र का फतवा लगाया:-

आपके बखिलाफ अपनी किसी ने गर जवां खोली,
किसी ने बात मुंह से कोई गर इन्साफ की बोली।
उसके बन गये दुश्मन बिगड़ बैठे व तन बैठे,
शरै तो क्या खुदाई के ठेकेदार बन बैठे।

काजी—मैं अदालत की तवज्जह फिर इस तरफ दिलाता हूं कि इस शख्स का रवैया सख्त काबिल एतराज है, भला इसको इस मुकद्दमे में दखल देने का क्या मजाज है? न यह मुलजिम न मुलजिम का रिस्तेदार न वकील न मुख्तार, न इस मुकदमेमें कोई तअाल्लुक न हमारी इससे बात, ख्वाहमख्वाह दखलदर माकुलात।

नवाब—काजी साहब! आपका इस कदर तेजी में आना फिजूल है, मेरे ख्याल में तो इसकी हरएक दलील वजनदार और हर एक एतराज बहुत माकूल है आप जिद को जाने दीजिये, इसकी बातों पर जरा ठंड दिल से गौर कीजिये।

काजी—बिलकुल बजा आपका फरमाना, हम तो जिद्दी हैं जल्द बाज हैं, और हमारी तमाम बातें आप

के नजदीक काबिल ऐतराज हैं। मगर हर गैर मुता-
ल्लिका शख्स जिसके मुकाम का पता न नाम की
खबर, न दीन का इल्म न हैसियत की तस्दीक उस
की हर एक बात आपके नजदीक बिल्कुल ठीक।
काज़ी मुहम्मदयूसुफ—अजी किबला काज़ी साहब! सिर्फ
यही शख्श मुलजिम की हिमायत नहीं करता है,
बल्कि अदालत का पानी भी मुलजिम की तरफ ही
भरता है।
काज़ी सुलतान—तो फिर इसका इन्सदाद?
तमाम काज़ी—जिहाद, जिहाद, जिहाद?
खुदादोस्त–कैसा माकूल जवाब है? कैसी लाजवाब दलील
हैं और अपनी कामयाबी की क्या उम्दा सबील है
इन्हीं ओछे हथियारों से दीनकी हिफाजत करोगे,
तो बहुत जल्द इस्लाम का बेड़ा गारत करोगे। आप
ने जिहाद का महज नाम ही सुन लिया है। या
यह भी मालूम है कि इस्लामने किन सूरतों और किन
हालतों में जिहाद का हुक्म दिया है। आपको तो
इस मसले पर बड़ा नाज़ है और आपके खयाल में
जिहाद की रस्सी बड़ी दराज़ *है, मगर जरा यहतो

*लम्बी

बतलाइये कि जिहाद का फतवा देने का कौन
शख्श मजाज है ? :—

मुफ्त में मुफ्ती बने और रख लिया आगे जिहाद।
हर जुर्म और हर खराबी का यह समझा इन्सदाद॥
हो किसी से आपका गर खानगी कोई फिसाद।
आपका कहना न माने या कोई गर ना मुराद॥
हो किसी को आपकी गर राय से कुछ इख्तलाफ।
दे दिया फतवा कत्ल का झट उसी के खिलाफ।

काज़ी—यह अजीब किस्म की वकालात है, हजरत। यह
मैदान मनाजरा है या जाये अदालत है ? या हम
लोग तिफ्ले मकतब*हैं जो यह शख्स हमें तालीम
दे रहा है, या मुमतहिन+है जो हमारा इम्तिहान
ले रहा है ? माना कि आप को मुलजिम का रियायत
मंजूर है मगर हर एक ऐरे गैरे को इस तरह से
दखल देने का आपकी अदालत का ही दस्तूर है।

नवाब—यह आपका फिजूल ऐतराज है, अदालत का न
किसी की तरफदारी है न किसी का लिहाज है न
किसीसे कोई वास्ता है, न किसीसे कुछ गर्ज है हाँ अगर
कोई शख्स किसी मुकदमे के मुतालिक कुछ

*पाठशाला के बालक। +परीक्षक।

वाक़िफ़ियत बहम पहुंचाये तो उसकी बात सुनना हमारा फर्ज है।

काज़ी (गाना बहरे तवील)

सोचते क्या हो अरे बैठे मूमिनो ?
अब ज़माने से तो मुसलमानी गई।
दीन तुमसे गया दीन से तुम गये,
और जहां से तुम्हारी निशानी गई॥
सोचते क्या हो...
न दिलों में मुहब्बत है इसलाम की,
और ज़ुबां से शरै की कहानी गई।
फैसला इस झमेले का हो किस तरह,
जब दिलों से न ये बेईमानी गई॥
सोचते क्या हो...
यह अदालत है या है तमसखुरकदा*
मेरी अब तक नहीं यह हैरानी गई।
हम कहें भी तो किससे कहें क्या कहें,
जो कही बात वह भी न मानी गई॥
सोचते क्या हो...

---

* मखौलखाना

चन्द दिन के मुसलमान महमान हैं,
हर किस्म की इन्हों से आसानी गई।
दबदबा रौब सब कुछ ही जाता रहा,
और हकूमत भी अब शाहजानी गई॥
सोचते क्या हो...

जोश कौमी गया और गैरत गई,
तुम से इसलाम की पासबानी गई।
न तो अपना फर्ज ही पहचाना गया,
और न अपनी शक्ल ही पहचानी गई॥
सोचते क्या हो...

डूब मरने की जा है अरे मूमिनो
सामने सब अजमत कुरानी गई।
काम किस रोज आओगे इसलाम के,
आज ही जो न मरने की ठानी गई॥
सोचते क्या हो...

नाटक

अरे मोमिनो! क्या सोच रहे हो! क्यों अपने जज-बात-को अंदर ही अन्दर दबोच रहे हो! जब अदालत ही इस्तगासे के इस कदर बरखिलाफ है, तो वहां कैस इन्साफ

है इस मुकद्दमे को भाड़ में डालो, और ठंडे २ अपना रास्ता संभालो। अगर ज्यादा बोलोगे, तो अपनी रही सही आबरू भी खोलोगे।

काजी मुहम्मद यूसुफ–क्या मुज़ायका है, अगर अदालत को मुलजिम की इस कदर रियायत मंजूर है, तो हमारे लिये दिल्ली कितनी दूर है।

नवाब—जरा तहम्मुल फरमाइये, इस कदर तेजी में न आइये। रियायत और तरफ़दारी वगैरा का आपका फिजूल ख्याल है भला मेरा शरै के हुक्म से इन हराफ करने की क्या मजाल है। बल्कि मेरी तो वह कोशिश है कि अगर किसी तरह मुलजिम मुशिरफ व इस्लाम हो जाये, तो इसकी जान बच जाये और आप का काम हो जाये। अगर मैं अपनी इस कोशिश में कामयाब होगया तो शरै के हुक्म की तामील होवे और सवाब का सवाब हो गया।

काजी सुलैमान—अगर आपके ख्याल में कुछ कामयाबी की सूरत है, तो हमें जल्दी करने की क्या जरूरत है, हमें इन्साफ से गरज है न कि मुलजिम से कोई जाती कदूरत है।

नवाब (गाना बहर तवील)

सुन हक़ीक़त मेरी है ख्वाहिश दिली
कि जहां में तेरी जिन्दगानी रहे,
तू रहे जिन्दा दुनियां में सौ साल तक
तेरे मां बाप की भी निशानी रहे।
सुन हक़ीक़त...

तेरी बीबी ने देखा है क्या सुख तेरा
किस तरह कायम उसकी जवानी रहे,
रोती धोती फिरेगी वह सारी उमर
रोने को भी न आंखों पानी में रहे।
सुन हक़ीक़त...

बुड्ढे मां बाप का न जनाजा रुलो
उन्हें सारी उमर की हैरानी रहे,
जब न तू ही रहा उनका रह क्या गया
रंजो गम की फक़त एक कहानी रहे।
सुन हकीकत...

मांगता हूं मैं अल्लाह से यह ही दुआ
तेरी दायम यह कायम जवानी रहे,
आज से तू पिसर मेरा असली रहा।

जो कि असली पिसर हैं वह सानी रहे।
सुन हक़ीकत...

क्या मुसलमान होने से नुक़सान है—
तेरी हमदर्द मन मुसलमानी रहे,
ऐश-इशरत मिले और हकूमत मिले
अल्लाह ताला की भी महरबानी रहे।
सुन हकीकत

जिस तरह हो मेरा कहना मंजूर कर
ताकि मेरे लिये भी आसानी रहे,
जान तेरी बचे मेरा पीछा छुटे
न शहनशाह को कुछ बदगुमानी रहे।
सुन हकीकत...

हकीकतराय (गाना)

जिस हकीकी पिता का हकीकत पिसर
उस पिता का कोई और सानी नहीं।
जिस तरह जिन्दगी आप चाहते मेरी,
मुझे मंजूर वह जिन्दगानी नहीं।
जिस हकीकी पिता का...
कौन आकर जहां में अमर रह गया,

कौन है वह जिसे मौत आनी नहीं।
आना और जाना है यह कुदरती नियम,
कौनसी चीज़ है जो कि फानी नहीं।
जिस हकीकी पिता का...
हां अगर कोई करदे ये साबित मुझे,
कि मुसलमान को मौत आनी नहीं।
फिर करूं गर उज्र आपके हुक्म से,
जन्म देता मेरी क्षत्राणी नहीं।
जिस हकीकी पिता का...
जिस धर्म को छुड़ाते हो मुझसे मियां,
वह धर्म कोई किस्सा कहानी नहीं।
कुल मजाहिब का सोता है ये ही धरम,
आपने इसकी अज़मत पहचानी नहीं।
जिस हकीकी पिता का...
साथ जायें न मां, बाप, भाई, पिसर,
बीबी, बेटी, बहिन साथ जानी नहीं।
इनका संबंध संसार के साथ है,
आकबत में मुसीबत बटानी नहीं।
जिस हकीकी पिता का...
ऐशो इशरत का हरगिज मैं तालिब नहीं,

और चाहिये मुझे हुक्म रानी नहीं।
था हकीकत धर्म हीन "यशवन्तसिंह"
मैंने दुनियां से यह कहलवाना नहीं।
जिस हकीकी पिता······

कौरां (गाना)

देख बेटा हकीकत हमारी तरफ़,
हमें क्या २ मुसीबत उठानी पड़ी।
आज तक जिनकी देख नहीं थी शकल,
उन्हें अपनी शकल खुद दिखानी पड़ी॥
देख बेटा···

कोई दुनियां में दिखता ठिकाना नहीं
हाय बेटा यह क्या नागहानी पड़ी।
खाक दर दर की छानी है तेरे लिये,
आबरू तक भी अपनी गंवानी पड़ी।
देख बेटा···

कौन से ऐसे खोटे करम थे किए,
अलख घर २ की हमको जगानी पड़ी।
कल तलक हम खिलाते थे संसार को,
माँगकर आज खुद भीख खानी पड़ी॥

देख बेटा…

बैठने को ठिकाना न मरने को जा,
जङ्गलों की हमें खाक उड़ानी पड़ी।
मिल गई हर तरह जिन्दगी खाक में,
लाश गलियों में अपनी रुलानी पड़ी।
देख बेटा…

आस करते थे क्या और क्या हो गया,
हम पै क्यों यह बला आसमानी पड़ी।
बेगुनाह बेखता बेसबब बेवजह,
बेटा पीछे तेरे मुसलमानी पड़ी।
देख बेटा…

कुछ तरस कर हमारा मेरे लाड़ले,
बाप पागल हुआ मां दिवानी पड़ी।
रोवें कर्मों को अपने क्या 'यशवन्तसिंह,
एक गले में वह बेटी बिगानी पड़ी।
देख बेटा…

हक़ीक़तराय (गाना)

रख तसल्ली हे माता न कर अब रुदन,
क्यों तू रो २ के अपनी वीरानी करे।

रखे भरोसा फ़कत एक करतार पर,
वही तेरे लिये सब आसानी करे।
रख तसल्ली...

लाख लालच मुझे चाहे दे दे कोई,
लाख मुझ पर कोई महरबानी करे।
मैं धर्म से न पीछे हटाऊं कदम,
चाहे कितनी कोई बेईमानी करे।
रख तसल्ली...

चाहे कितनी ही कोशिश यह क़ाजी करे,
और इसका खुदा आसानी करे॥
यह तो सम्भव नहीं कि हक़ीक़त कभी भी,
जो मंजूर यह मुसलमानी करे॥
रख तसल्ली...

मेरा अपना धर्म जान के साथ है,
किसकी ताकत है जो इसकी हानी करे।
चाहे हो जाय दुश्मन जमाना सभी,
शाहन्शाह भी चाहे बदगुमानी करे॥
रख तसल्ली...
पाठ गीता का जिसने भला कर लिया,
किस तरह वह तलावत कुरानी करे।

वेद उपनिषद के ज्ञान को छोड कर,
याद क्योंकर वह किस्से कहानी करे।
रख तसल्ली···

इस जिस्म को जलादे कोई काट दे।
चाहे इस पर कोई हुक्म रानी करे ॥
आत्मा मर नहीं सकती "यशवन्तसिंह"
कोई नादान कितनी नादानी करे ॥
रख तसल्ली···

नाटक

क़ाजी-सुन लिया जनाब आली ! यहां तक बढ़ा कि अदालत की भी तौहीन कर डाली, जिसको बोलता है उसी को गाली। कोई नादान है कोई शैतान है कोई बेईमान है, गोया जमाने भर में यही एक मुकम्मल इन्सान है।

नवाब—हक़ीकतराय।

हक़ीकतराय—हज़ूर।

नवाब—अगर तू अपने बूढ़े मां बाप पर, अपनी कमसिन बीबीपर, अपनी उठती जवानीपर रहम नहीं कर सकता तो मेरे हाल पर रहम कर, क्योंकि मेरा पोजीशन

इस वक्त सख्त खतरनाक है, एक तरफ तेरी कम-
सिनी है दूसरी तरफ शर्रे पाक है --

महरबानी कर तू मुझको इस झमेले में न डाल ।
आ रही है सांप के मुंह में छछूंदर तू निकाल ।
बेगुनाह तू है तो मैं भी हो गया मजबूर हूं ।
सच समझ मैं हर तरह मजबूर हूं म.जूर हूं ।

हकीकतराय—तोबा तोबा, आपके मुंह से ऐसी ना मुना-
सिब बा त, क्या मैं और क ा मेरी औकात ? आप
अपनी जरा सी आंख के इशारे से दुनियां को निहाल
करदें, किसी पर महरबानी करें तो मालामाल करदें ।
किसी पर निगाह कहर हो तो जमाने से पामाल
करदें । मुझसा कर्महीन और कमनसीब जो जिन्दगी
और मौत के दरम्यान लटक रहा है, जो दूसरों की
इजाजत के बगैर एक घूंट पानी को भी भटक रहा
है, जो न अपने बूढ़े मां बाप पर कुछ रहम कर सके
न अपने लिये किसी किस्म की आसानी कर सके,
वह आप पर क्या खाक महरबानी कर सके ?—

मैं कज़ा से कज़ा मुझ से हो रही है हमकलाम,
ले रही है आज मुझ से जिन्दगी भी इन्तकाम ।
जो आजादी से हिला सकता नहीं अपनी जबां,

महरबानी क्या करे वह आप पर ऐ महरबाँ ?

क़ाज़ी—अब तो आपने बहुतेरा जोर लगा लिया, हर तरह अजमा लिया, समझा लिया बुझा लिया, आखिर इस मगज पची का कुछ नतीजा भी निकला, आपतो बहुतेरे पसीजे मगर इसका दिल भी पिघला? इसके साथ ज्यादा हम कलाम होना नजीह औकात* और फिजूल सरदर्दी है, आप को तो इसके साथ इस कदर हमदर्दी है और हद से ज्यादा रियायत भी करदी है, मगर यह अपनी जिद से एक इंच भी सरका ? हमारा वही हाल है कि धोबी का कुत्ता न घाट का न घर का। इस मुकद्दमे का फैसला हो तो अपने घर की राह लें, इधर आप का सुबुकदोश हों और अपनी अदालत का और काम संभालें—

कर रहे हैं आप इस में देर अब बे फायदा।

महरबानी करके इस का जल्द कीजे फैसला।

हो चुके हैं बहुत दिन अब कीजिये किस्सा खतम,

सुबुकदोश होजायें आप और सुर्खरू होजायें हम ॥

हक़ीकतराय—मेरी खुद यही इल्तमास है कि आप जल्द अपने फर्ज से सुबुकदोश हो जायें, ताकि क़ाज़ी

* व्यर्थ समय खोना।

साहब आज ही मेरी मौत का जशन मनाएं न आप को किसी किस्म का पेच ताब हो, न काजी साहब को कोई इजतराब हो और इन्हें बहुत जल्द हज्ज अकबर का सवाब हो—

काजी साहब ! है मेरी तो खुदा से भी यह ही इलतिजा,
जिस क़दर मुमकिन हो होवे जल्द इसका फैसला।
हां मगर अरमान यह पूरा न होगा आपका,
सुर्खरू तो हूंगा मैं और और आप होंगे रूसियाह।
कत्ल करना बेगुनाह का और फिर ये आरज़ू,
इस शक्ल को देखना जब हो खुदा के रूबरू॥

नवाब—क़त्ल की सज़ा मन्ज़ूर, क़ाज़ी साहब का फतवा बहाल।

काज़ी सुलैमान—शुक्र जुल जलाल ! शुक्र जुल जलाल !!

काज़ी मुहम्मद यूसुफ—अल्लाह का अहसान, अल्लाह का अहसान।

हाज़रीन—त्राहिमान ! त्राहिमान !! त्राहिमान !!!

भागमल—सब्र, सब्र, इस इन्साफ़ पर मेरा सब्र—

हर तरह से कर दिये दुनिया से अब बरबाद हम।
जानते पहले से तो जनते ही क्यों औलाद हम॥

(मूर्छित होकर गिर गया)

कौरां—तक़दीर उल्टो, नसीब फूटे, हे परमेश्वर इस अदालत पर क़हर की बिजली टूटे —

बेगुनाह और बे खता हमको दिया दुनियां से खा।
इस अद्ल इन्साफ़ और आदिल का बेड़ा गर्क हो॥

(मूर्छित होकर गिर गई)

हक़ीक़तराय-(दोनों को सम्भालता हुआ) माता जी! धैर्य से काम लो, पिता जी कलेजे को थाम लो। होने दो पाप के प्याले को अच्छी तरह लबरेज़ होने दो, और इनके ज़ुल्म के खंजर को खूब तेज होने दो। बांधने दो इनको अपने मन के मनसूबे, जिससे इनका बेड़ा अच्छी तरह भर कर डूबे—

किसी के नाश होने का समय जब निकट आता है,
तो वह ज़ालिम इसी प्रकार से ऊधम मचाता है।
ज़ुल्म करता है बढ़ बढ़ कर जमाने को सताता है,
बशर तो क्या नजर उसको न परमेश्वर भी आता है।
यही हालत हुई थी, कंस हिरनाकुश व रावण की,
निशानी तक जमाने में नहीं मौजूद है जिनकी।

खुदादोस्त—(दोनों का हाथ पकड़ कर)उठो २ रंजोग़म की मुजस्सिम तसवीरो उठो। बदकिस्मती और बद

नसीबी के पुतलो उठो ! तुम्हरे शजर उम्मेद * पर जुल्म और सितम का कुल्हाड़ा चल गया, तुम्हारा हरा भरा गुलशन जल्लादों के हाथों जल गया, तुम्हारी हस्ती का सूरज कज़ा के गहन में आगया तुम्हारी चांद की चांदनी पर जफ़ाकारो का अँधेरा छागया, तुम्हारी क़िस्मत का सितारा आज जिन्दगी के आसमान से टूट गया, उठो बेनसीबों ! आज तुम्हारा नसीबा फूट गया:—

आरज़ुओं पर तुम्हारी आज पानी फिर गया,
जुल्म का और सितम का सीने पै पत्थर गिर गया।
आंख भर कर देखलो एक बार तो औलाद को,
और फिर हाथों से अपने सौंप दो जल्लाद को।

भागमल—आह क्या उठें और किस के सहारे उठें उठने बैठने के तो सामान ही गये, अब कोई दम में संसार से ही उठ जायेंगे, हमारा उठने का जमाना उठ गया और जमाने से हमारा आब व दाना उठ गया:—

क्या उठेंगे उठ कर क्या लेंगे क्या देखेंगे क्या सुन लेंगे,
जलना ही लिखा जब क़िस्मतमें हम यहीं पड़े जलभुनलेंगे।

* आशा वृक्ष

उठ कर जायंगे कहां, कहां जाने को हमें ठिकाना है,
हम कमबख्तों को नहीं किसीने पासतलक बिठलाना है।

खुदादोस्त–जो कुछ कह रहे हो, सब सही मिला शुबा अब तुम्हारे लिये दुनियां में मरने को भी जगह नहीं रही। मगर याद रक्खो तुम्हारी मौत भी एका एकी नहीं आयेगी, क्या मालूम कज़ा अभी कितने दिन तरसायेगी, क़ुदरत अभी क्या २ दुख दिखलायेगी, किस्मत की गरदिश अभी कहां २ ठोकरें खिलायेगी उठो २ अब यहां पड़े क्या बना रहेहो, तुम्हारा यहां कौन है जिसको रो २ कर सुना रहे हो। जहां चाहो अपनी जिन्दगी खो लेना, जहां जगह मिले बैठकर बुरे की जान को रो लेना :—

दुखिया तो बहुतेरा चाहता है पर मांगे मौत न मिलती है
चाहे कितनीही करले कोशिश नहींउसकी जान निकलतीहै
क्या खबरअभी किस्मतमें तुम्हारी क्या २ लिखीखिरानीहै
किस२ का दुःख अभी देखोगे क्या २ तकलीफ उठानीहै

भागमल (गाना)

(बतर्ज़—देखो जी एक बाला जोगी)

कैसे उठें कहां जायें उठ कर दिखता नहीं ठिकाना है रे,

जमीन वैरी शत्रु आसमां दुश्मन सभी जमाना है रे,
क्या जाने क़िस्मत ने हमको क्या २ कष्ट दिखाना है रे।
कैसे उठें...

क्या जीना क्या रही जिन्दगी नाहक़ धक्के खाना है रे,
खबर नहीं इस मौत न कब तक इन्तजार करवाना है रे।
कैसे उठें...

सर में अपने भस्म रमा कर दर दर अलख जगाना है रे,
वाह विधना क्या तेरी माया भेद न तेरा जाना है रे।
कैसे उठें...

वक्त मुसीबत हम दोनों का किसने हाथ बटाना है रे,
मरते वक्त किसी ने मुंह में पानी तक नहीं पाना है रे।
कैसे उठें...

कहां जाये बेगानी बेटी किसने पास बिठाना है रे,
कौन दिलासा देगा उसको किसने चुप करवाना है रे।
कैसे उठें...

तू वध काजी खुला, न हमसे हिस्सा कोई बटाना है रे,
हमनेतो "यशवन्तसिंह" यूहीं भटक२ करमर जाना है रे।

(दोनों का रोते पीटते और आंसू बहाते अदालत से बाहर चले जाना और सिपाहियों का हक़ीकतराय को हथकड़ी बेड़ी लगाकर जेल को ले जाना।

दृश्य ५ सीन १

वध स्थान

(मैदान मकतब तमाशाइयों से खचाखच भरा हुआ है जल्लाद नंगी शमशोर हाथ में लिये तख्ते कत्ल के करीब खड़ा हुआ है, हकीकतराय हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़ा और सिपाहियों के हलके में घिरा हुआ दाखिल मकतब होता है) ।

हकीकतराय (गाना)

मां बाप तजे बीबी तजी तजदिया घर को, जाते हैं सफरको
प्रणाम हमाराहो हर एक अहले शहरको, हर फर्द बशर को
बस आज से दुनिया मे मेरा रिश्ता खतमहै, जीना कोईदमहै
अब छोड़ने वालाहूं तुम्हारे भी नगर को, जामिलता हूंहरको
मां बापका गमख्वार किया रंज अलम को जाताहूं अदमको
खाने के लिये छोड़ चला लख्त जिगर को, गम सारीउमरको
जो बीबी थी कलतक वह हुई बेवा बेचारी, तकदीरकी मारी
रोयेगी पड़ी सारी उमर पटक सिर को, काजी की कबर को
दुनियां के लियेछोड़ चला अपनी कहानी, एक ही निशानी

थी उनके लिये छोड़ चला अपने जिकर को मरने की खबर को
मरने का मेरे आप कुछ गम नहीं करना, है सब को ही मरना,
तुम देना तसल्ली मेरे मादर व पिदर को, रोयें न पिसर को
मां बाप को मेरे यहां हरगिज न लाना, यह गम न दिखाना
देखेंगे वह इस हाल में क्या नूर नजर को, कटते हुऐ सर को
आ आ मेरे कातिल जरा देर न कर तू, कुछ दिल में न डर तू
कर खंजरे खूंख्वार का अब रुख तू इधर को, जाता है किधर को

नाटक

मेरे हमवतन भाइयो, बुजुर्गो माताओ और बहनो! अब मैं कुछ घड़ियों में अपने इस खाकी चोले को छोड़ने वाला हूं और अपने संसारिक सम्बन्धियों से अपना रिश्ता तोड़ कर उस हकीकी पिता से अपना रिश्ता जोड़ने वाला हूं अपनी मां की गरम २ गोद से निकल कर मौत की गोद में सोने वाला हूं और घड़ी दो घड़ी में दुनियां की नजरों से ओझल होने वाला हूं यह एक ऐसी मंजिल है जिसे हरएक जीव को तय करना है, कोई आज मरता है किसी ने कल मरना है। इसलिये इसका गम करना महज नादानी और जहालत की निशानी है, क्योंकि यह दुनिया नापायदार और यह जहान एक रोज फानी है।

जिस तरह आप लोग मेरी मौत का तमाशा देखने आये हैं, परमेश्वर करे आप में से हर शख्श दुनिया को अपनी मौत का तमाशा दिखलाये, यानो सर बला से कट जाये, लेकिन धर्म जान के साथ जाये। मैं अपने बूढ़े मां बाप और कमसिनी बीबी को आपके हवाले करता हूं इतनी महरबानी फरमाना कि एक तो मेरे कत्ल होते समय उनको इस जगह न लाना, दूसरे अगर हो सके तो मेरे मरने के बाद इनकी दस्तगीरी करके यह मुसीबत का वक्त कटवाना आइन्दा आपको अख्तयार है, सब हिन्दू मुसलमानों को मेरा हाथ जोड़ कर नमस्कार है :—

अब इस दुनिया को छोड़ कोई दुनियां और बसानी है,
मां बाप से रिश्ता तोड़ चले और किसी से प्रीति लगानी है
बलिदान किये बिन नहीं होगा उद्धार इस हिन्दू जाती का
दिये शीश बहुतेरों ने पहले इस दफा मेरी कुर्बानी है।

जमादार—हकीकतराय! अब तेरा आखिरी वक्त है अगर तेरी कुछ ख्वाहिश हो तो बयान कर, सिवाय जान बख्शी के तेरी सब तमन्नायें पूरी की जायेंगी, किसी से मिलना हो तो मिला दिया जाये, कुछ खाना पीना हो तो मंगवा दिया जाये।

हकीकतराय—जितना अरसा जिया बहुत कुछ खाया पिया

अब दुनियां की न्यामतें उनके लिये हैं, जो दुनियां में हमेशा रहने के तावेदार है, या उनके लिये हैं जो खुदाई तक के ठेकेदार हैं, मिलने मिलाने के लिये मेरी इलतिजा करनी बेसूद है, क्योंकि मेरे मिलने वालों की एक बड़ी सख्या मेरी आंखों के सामने मौजूद है। अलबत्ता एक अरमान है, अगर वह पूरा करवा दिया जाये तो आपका बड़ा अहसान है। वह यह कि मरने के बाद मेरी लाश को किसी गढ़े में न धर दिया जाये बल्कि मेरे वारिसों या कौम के हवाले कर दिया जाये।

दुनियांकी न्यामतें उनके लिये दुनियांमें जिन्होंने रहना है।
क्या किसोसे मिलकर लेना है क्या किसोसे हमने कहना है॥
है जाम शहादत पीने को, जामये, शहीदी यह है।
जीनेके मजे तो बहुत लिये अब मौतका दुखभी सहना है॥
है पेश वही आना सबके जो लिखा हुआ पेशानी पर।
मैं जितना गर्व करू' थोड़ा इस छोटी सी कुर्बानी पर॥

दारोगा—जल्लाद!

जल्लाद—इरशाद!

दारोगा—होशियार होजा और अपना फर्ज मनसबी अदा करने के लिये तैयार होजा।

जल्लाद—तैयार हूं मगर...

दरोगा—मगर क्या ?

जल्लाद—दिमाग चक्कर खा रहा है, हाथों में लरज़ा आ रहा है कलेजा कांप रहा है, दिल डर रहा है, टांगें डगमगा रही हैं तमाम बदन में राशा पड़ रहा है, आंखों में अंधेरी छा रही है, तलवार हाथों से छूटी जा रही है :—

मैं भी हूं वही दिल भी है वही, हैं हाथ वही हथियार वही।
मैदान वही मक़्तल भी वही, खंजर भी वही तलवार वही॥
इस मक़तल में मालूम नहीं, कितनों को क़त्ल कर डाला है।
पर अल्लाह जाने आज मुझे क्यों चढ़ता जाता पाला है॥

दरोगा—क्या तुझे मालूम नहीं कि रहमदिली तेरे लिये क़ानूनन सख़्त जुर्म है।

जल्लाद—सब कुछ जानता हूं इस क़ानून को भी मानता हूं आज से नहीं बल्कि पुश्तों से यही पेशा और सदियों से यही काम किया, जो बदनसीब हमारे सुपुर्द हुआ उसी का काम तमाम किया, हमारे फ़िरके में रहम का नाम लेना ही हराम है, इन्सानी हमदर्दी और खुदा तरसी का यहां क्या काम है। मगर आज तो कुछ हालतही निराली है ! या अल्लाह ! क्या खुदाई

पलटने वाली है :—

कितनी ही पुश्तें गुजर गईं करते आये हैं कार यही,
है खेल यही पेशा है यही और रिजक यही रोजगार यही।
रफ्तार यही गुफ्तार यही है प्रेम यही और प्यार यही,
इज्जत भी यही, अजमत भी यही रोजी का दारमदार यही।
इस रोजी से ही आज तलक सारे कुनवे को पाला है,
पर इस मकतूलने आजतो कातिल कोही कत्ल करडाला है।

दारोगा—अरे नाबकार! तू अपने फर्ज की अदायगी में कोताही करके अपनी जान को आजाब में न डाल जल्दी कर और तलवार सभाल।

जल्लाद-हुक्म अदूली की तो मजाल नहीं मगर...

दरोगा-मगर के बच्चे तू क्यों अपने बाल-बच्चोंकी तबाही और अपनी मौत का सामान कर रहा है, अगर मैंने तेरी निस्बत हुक्म अदूली की रिपोर्ट करदी तो ख्वामख्वाह मारा जायेगा और जो सजा इस मुलजिम की है वही सजा तू पायेगा।

जल्लाद-(तलवार संभाल कर) बहुत अच्छा हुजूर हुक्म अदूली का क्या मकदूर (हकीकतराय से) बदबख्त और बे नसीब लड़के! होशियार होजा और मरने के लिये तैयार होजा।

हकीकतराय--(गर्दन झुकाकर) होशियार हूं बड़ी देर से तैयार हूं। जब तेरा मालिक तुझ को मेरी मौत का पैगाम दे, तो तू अपने कर्तव्य को निहायत ईमानदारी से अञ्जाम दे—

पास मत आने दे अपने रहम के तू मर्ज को।
मुस्तैद होकर तू दे अञ्जाम अपने फर्ज को॥
जिस तरह और जौनसे पहलू कहे होजाऊं मैं।
मैं सहूं कितना ही दुख तुझको न दुःखपहुंचाऊं मैं।

दरोगा—खबरदार होशियार, एक दो तीन चार।

जल्लाद—(रोता हुआ) मजबूर लाचार, आज न हाथ काम देते हैं न हथियार।

दारोगा—अरे मुरदार! जल्दी सम्भाल अपनी तलवार, एक दो तीन चार।

जल्लाद—(लपककर) या परवरदिगार कर बेड़ा पार! (तलवार हाथ से गिर गई)

दारोगा—(डांट कर) अबे नालायक! तूने यह क्या दिल में ठानी है।

काज़ी-दिल में बेईमानी है, यह सब दानिस्तां कारिस्तानी है, और गालिबन रिश्वत की महरबानी है।

जल्लाद--बेबस हूं लाचार हूं, दिल हांप रहा है हाथ कांप

रहा है:—

नहीं हाथमें इतनी ताक़त जो तलवारको जरा संभाल सके
तलवार में इतनी ताब नहीं जो अपना काम निकाल सके।
दिल ने भी अपनी पुश्तों की तासीर को आज बदलडाला
मैं फंसा हूं कौन मुसीबत में कर रहम मेरे अल्लाह ताला।

हकीकतराय—(तलवार जल्लाद के हाथ में पकड़ा कर) तबियत को कायम रख और दिल में इस्तकलालकर मेरी तरफ न देख बल्कि अपने फ़र्ज की तरफ ख्याल कर:—

हाथ को रख तोल कर, दिल को जरा मजबूत कर।
कदम को साबित कदम तलवार को रख सूत कर॥
मुझको अपनी मौत से बिल्कुल नहीं है इजतराब।
खामखाह तुम पर न हो जाय कहीं कोई अताब॥

जल्लाद—बहुतेरी कोशिश करता हूं, बहुत जोर लगाताहूं, हाथको भी संभालता हूं दिल को भी समझाता है, मगर इन तमाम कोशिशों के बावजूद इजतराबी ज्यों की त्यों मौजूद है:—

बे अक्ल नहीं बे समझ नहीं बे खबर नहीं नादान नहीं।
जिन दिलों में रहम का मादाहै मैं उनमेंसे इन्सान नहीं॥
जुज कत्ल के मेरा कोई भी दीन नहीं ईमान नहीं।

हैं गुनहगार वेगुनाह कौन मुझे इसकी कुछ पहचान नहीं ॥
इस हाथ ने और इस खंजरने नहीं देखा अदना आलाहै। ॥
मगर आज मुझे खुदखबर नहीं, क्या अल्लाह करनेवालाहै।

हकीकतराय–नहीं भाई! नहीं यह तेरी गलती है तेरे हाथ भी चलते हैं और तलवार भी चलती है, मगर शायद तू मेरी कमसिनी पर रहम करता है, और इसलिये तलवार चलाता हुआ डरता है। मगर मैं नहीं चाहता कि तू अपने फर्ज में कोताही करे और मेरे लिये अपने बालबच्चों की तबाही करे (फिर तलवार जल्लाद के हाथ में देकर) ले जल्दी कर वरना तुझ पर एतराज होगा और तेरा अफसर तुझ से नाराज होगा। संभल भाई संभल, रोजगार ऐसी चीज है, और यह जिन्दगी से भी ज़्यादा अजील है:—

गर कजी है तेरी खंजर में और दिल में तेरे खामी है।
यह हतक है तेरे पेशे की और तेरी भी बदनामी है॥
मत हाथों से खोवे रोजी तेरी पुश्तों की आसामी है।
मालिक की हुक्म दूलीभी एक क़िस्मकी नमक हरामीहै
तलवार पकड़, कर हाथ साफ यहझगड़ा जल्द निवटजावे।
तू सुबुकदोश, रूपोश मैंहोऊं गर जल्द से सर कटजावे॥

दरोगा–(दिल में) मैंने अपने जमाने मुलाजमत में

आज तक हजारों को कत्ल करवाया, सैकड़ों को चरखी पर चढ़ाया मगर ऐसा निडर बेखौफ और सख्त जान इन्सान देखने में नहीं आया, यह तो वह ना मुराद जगह है, जहां अच्छे २ दिलावरों के छक्के छूट गये, मकतल को देखा और वहीं घुटने टूट गये होश हवास बिखर गये बल्कि बहुत से तो वक्त से पहले ही गश खाकर गिरगये, मगर सुब्हान अल्लाह यह नौ उम्र लड़का और इस गजब का इस्तकलाल कमाल, कमाल, वाकई कमाल !!:—

क्या किसी को कहूं खुद मेरी अक्ल हैरान है।
कैसी यह हसती है और किस गजब का इन्सान है॥
उसका दिल भी हिल गया जो कौम का जल्लाद है।
यह बशर है या कि मलकुल मौत का उस्ताद है॥

काजी—दरोगा साहब ! आपको क्या फिकर पड़ गया या यहां भी कुछ चढ़ावा चढ़ गया ? यह कैसी लेतो-लाल है, कुछ कानून और अपने फर्ज का भी ख्याल है। अगर मुलज़िम की सजा से पहले मौत वाके हो गई तो इसका कौन जिम्मेदार होगा, आप होंगे जल्लाद होगा या आपका जमादार होगा ?

दरोगा—(चिल्लाकर)जल्लाद ! जल्लाद !! ओ नामुराद !

खबीस के बच्चे ! बुजदिल की औलाद ! तेरा किस तरफ ख्याल है, जल्दी कर वरना मुलजिम के वक्त से पहले मरजाने का अहतमाल* है। अगर तू देर लगायेगा तो इससे पहले तेरा सर कलम कर दिया जायेगा।

जल्लाद—हजूर बाला ! माफ कीजिये मैं मजबूर था, माजूर था, मेरा हुक्म अदूली का क्या मकदूर था, मगर मैं नहीं कह सकता कि यह किसका कसूर था, अगर अब कोताही करूं तो मेरा कसूर जो सजा दो मुझे मंजूर।

रोगा—दिल में इस्तकमाल रख, और अपने फर्ज की तरफ ख्याल रख, एक दो तीन चार !

जल्लाद-(तलवार का एक हाथ मार कर)लीजिये सरकार यह पड़ा है मुलजिमका सिर और यह पड़ी है तलवार न मुझे यह मुलाजमत चाहिये न यह रोजगार, भीख मांगकर खालूंगा, किसी की टोकरी उठालूंगा कुछ न मिलेगा तो भूखा मर जाऊंगा, मगर आज से इस नामुराद काम को हाथ न लाऊंगा।

(चला गया)

* सम्भव

क़ाज़ी—शुक्र है बारी ताला! तेरा हजार२शुक्र है लाख२ अहसान है, रहीम है, तु रहमानाहै अगर तेरा फ़ज़ल मेरे शामिल हाल न होता तो यह काफ़िरज़ादा हरगिज हलाल न होता! तूने इस्लामकी लाजरक्खी अपने नामकी लाज रक्खी मुसलमानोंका बोलबाला किया, कुफ़्फ़ारका मुंह काला किया। तेरे बन्दोंने तो अपने दीन और ईमान को वेवडाला मगर तूने अपने फ़ज़्लो कर्म से इस्लाम के बेड़े को भंवर से निकाला—

शुक्र है सौ बार तेरा शुक्र है परवरदिगार,
दीनका हाफ़िज तूही इस्लाम का तू मददगार।
हो रहे कुफ्फार के हामी थे सारे बरमला,
तेरे फ़ज़्लो कर्म से मैं सुर्खरू होकर चला।

हाज़रीन—गजब! गज़ब!! सितम! अनर्थ अन्याय! जुल्म!

दारोगा—कोई इसका वारिस है या लाश को सरकारी तरीके पर दफन किया जाये।

नगर वाले—हम मरके सब इसके वारिस हैं, जिन्दा की मालिक सरकार, इसकी लाशके हम हकदार, अब न यह आपका मुलजिम है न आपको इससे सरोकार.

जो इन्साफ हुआ है वह तो बे नजीर और ला-जवाब है मगर क्या करें जमाना नाजुक है और वक्त खराब है। आप जबरदस्त हैं हम मासूम हैं, आप हाकिम हैं हम हमकूम हैं, सच पूछो तो आप जालिम हैं, हम मजलूम हैं जो किसी ने कही वह सब सिर पर सही लेकिन अब जब्त की ताकत न रही। दफनाना या उठाना तो दरकिनार, अगर किसी ने इसकी लाश को हाथ भी लगा दिया तो वह होगा कि आप देखते रह जांयगे और यहीं खून के दरिया बह जायेंगे ।

दरोगा–नहीं २ हमें लाश के दिये जाने में कोई ऐतराज नहीं, क्योंकि किसी के मजहब में दस्तअन्दाजी करने के हम मजाज नहीं। अप खुशी से लाश को ले जाइये और जिस तरह तुम्हारा मजहब इजाजत देता है वही रसम करवाइये।

दीनदयाल–मजहब हमारा कहां है, अगर मजहब होतातो यह मनमानी कार्रवाइयां करने देते ? इस मासूम और बेगुनाहको इस तरह मरने देते ! अब तोतुम्हारा मजहब तुम्हारा ईमान तुम फिरश्ते, तुम इन्सान तुम्हारी जमीन तुम्हारा आसमान, तुम्हारी हकूमत

तुम्हारी दुहाई, बल्कि तुमही खुदा और तुम्हारी खुदाई।

दरोगा—खैर कसूरवार था या बेकसूर था तुम भी लाचार थे मैं भी मजबूर था, अब सब्र करो अल्लाह को इसी तरह मंजूर था।

(दारोगा अपने अमले सहित चला गया)

एक मनुष्य—भाई उन मुसीबत के मारों को भी बुलालो ताकि अपने कलेजे के टुकड़े का आखिरी दीदार तो कर लें।

(भागमल और कौरां गिरते पड़ते और रोते पीटते हुये आते हैं)

(बहरे तवील)

कौरां (गाना

मेरे बेटा तू लेटा किधर आन कर,
तू बता तो हकीकत किधर को गया।
क्या बनाऊंगी मैं अब यहां बैठकर,
साथ ले चल मुझे तू जिधर को गया।
मेरे बेटे...

गोद खाली मेरी कर चला लाड़ले,
तू लगा आग मेरे जिगर को गया।

यही ठानी थी दिल में हक़ीकत अगर,
काट पहले न क्यों मेरे सर को गया।
मेरे बेटा...

था किया परवरिश आज के वास्ते,
करके बरबाद मादर पिदर को गया।
कर चला तू तबाह हर तरह से हमें,
और लगा आग सारे ही घरको गया।
मेरे बेटा...

कभी घर से न बाहर निकाला कदम,
कौन से आज लम्बे सफर को गया।
क्या तू मिलने गया अपनी सुसराल में,
या कि लेने वहू की खबर को गया।
मेरे बेटा...

किस तरफको गया और कहांको गया,
किस दिशाको गया किस नगरको गया।
कुछ पता तो बता कोई "यशवन्तसिंह"
वह इधर को गया या उधरको गया।

नाटक

हक़ीकत बेटा ! तू यहां क्यों आ लेटा ! मेरे लाल

किधर को जा रहा है कहाँ की तैयारी है किसको देख रहा है किसकी इन्तजारी है, हाय २ आज मेरा हक़ीक़त आंखें क्यों नहीं खोलता, मुझसे क्यों नहीं बोलता ? मेरे बच्चे ! मेरे इकलौते ! मेरे कलेजे के टुकड़े मेरे हाथ के तोते मेरे आखों के तारे मेरी गोद के खिलौने, आज तूने अपनो स्वभाव क्यों बदल डाला, तू तो कभी भूल कर भी मुझसे नाराज नहीं हुआ फिर मैं किस मुंह से कहूं कि तू मुझसे रूठ गया। आ, आ, बेटा मेरी गोद में आ (उन्माद में) हक़ीक़त ! बेटा हक़ीक़त ! क्या आज तेरी सुसराल को तैयारी है, अपनी सास से मिलने को दिल चाहता है, जाना बड़ी खुशी से जाना उस बेचारी के पास भी तेरे सिवा देखने को और क्या है। मगर मेरे लाल ! ऐसी बेसरौ सामानी की दशा में सुसराल नहीं जाया करते, आ मेरे चांद ! मैं तुझे अच्छे २ कपड़े पहनाऊंगी, तेरे हाथों को मंहदी लगाऊंगी, एक दो खिदमतगार तेरे साथ करूंगी और अच्छी तरह बनाव सिंगार कर ठाठ के साथ भेजूंगी आ मेरे बछड़े ? आ बस बहुत हो चुका अब मुझे ज्यादा न तरसा।

दीनदयाल (बहर तवील)

क्यों तू रो रो के देवी हुई बावली,
क्या बताऊं हकीकत किधर को गया,
उस तरफ को ही जाना है हर एक ने,
तेरा लख्ते जिगर है जिधर को गया।
क्यों तू०...

न वह मिलने गया अपनी सुसराल में,
न वह लेने बहू की खबर को गया,
जिस जगह वह गया है अनोखी जगह,
और अनोखे नगर को शहर को गया।
क्यों तू०...

दे गया रोना सारी उम्र को तुझे,
और लगा आग तेरे जिगर को गया,
जिस जगह होना काजीने एकदिन दफ़न,
देखने उस जगह की कबर को गया।
क्यों तू०...

जिस मरज़ की नहीं है कोई भी दवा,
वह लगा रोग सारी उमर को गया,
रोतो रहना किसी ने नहीं पूछना.

पूछने वाला ईश्वर के घर को गया।

क्यों तू०

जिस सफ़र से न वापिस कोई आ सका,

वह धर्म वीर है उस सफ़र को गया।

क्या बताये पता कोई "यशवन्तसिंह"

वह इधर को गया या उधर को गया॥

क्यों तू०

नाटक

सब्र कर देवी सब्र कर! क्यों रो २ कर मर रही है, किसके साथ बातें कर रही है? किसको बुला रही है, किसको सुना रही है? यह रोना आज के लिये नहीं बल्कि सारी उम्र के लिये है, कहां तक रोयेगी, रोने के लिए भी आंखें नहीं रहेंगी, न आंखों में पानी, किसने तसल्ली देनी किसने धीर बंधानी। तुम्हें पूछने वाला परमेश्वर के घर गया और तुम्हें हमेशा के लिए बरबाद कर गया; उठ सब्र कर बस जाने दे, इस बिचारे की मिट्टी ठिकाने लगाने दे।

भागमल (गाना)

चल दिया लाल मेरे हमें छोड़ कर,
था इसी वास्ते हमने पाला तुझे।
मौत आनी थी जिसको यहीं रो रहे,
कर गई बे रहम वह निवाला तुझे।
चल दिया०…

दोष दूं मैं किसे क्या किसी पर गिला,
मौत के मुंह में मैंने ही डाला तुझे।
वह घड़ी अब मुझे हाथ आती नहीं,
जाके मकतब में जिस दम संभाला तुझे।
चल दिया०…

डरते २ जमीं पर थे रखते क़दम,
कभी घर से न बाहर निकाला तुझे।
रह गये हम यहां देखते देखते,
ले गई मौत बाला ही बाला तुझे।
चल दिया०…

न कफ़न तक भी घरका मयस्सर हुआ,
हाय पड़ा किस कसाई से पाला तुझे।
जान दी बेटा तूने कहां आन कर,

जहाँ पर न कोई रोने वाला तुझे,

चल दिया०...

हम गरीबों का तुझ पर ओ सूबे स.र,

आप समझेगा वह हकलाता तुझे।

झाड़ कर हाथ "यशवन्तसिंह" हम चले,

खा जाये काजिया नाग काला तुझे॥

चल दिया०...

नाटक

आह! बेटा हकीकत तेरी जिन्दगी का यही परिणाम होना था, और हमारा बेड़ा यों मंझधार में डुबोना था। मेरे लाल तेरे बाग जवानी का गुल खिलने भी न पाया कि बेरहम मौत ने तुझे आ दबाया। ले चला, लेचला, मेरे बछड़े तू मेरी लकड़ियां ले चला। खुद बे फिक्र हुआ और मुझे रोना पीटना दे चला। हाय २ जिसको सारी उमर अच्छे से अच्छे और नफीससे नफीस कपड़े पहनाये आज उसको घरका कफन तक मयस्सर न आये,इस परदेश में कोई गमख्वारीभी नहीं जो हमदर्दीके चार आंसू गिराये अन्धेर अन्धेर, परमेश्वर तेरे यहांभी अंधेर,तेरे दरबार में भी किसी मजलूमकी आहोजारी बेकारहै तू भी जबरदस्तका

मददगार है, मज़लूम का दुश्मन और जालिम का तरफ़दार है। आह, मेरे कलेजे के टुकड़े! तेरी यह चांद सी शक्ल देखनी फिर कहां नसीब होगी :—

तू इतना तो बतलाजा हमें किस के सहारे छोड़ चला।
तू नैन हमारे फोड़ चला और कमर हमारी तोड़ चला॥
जीना तो रह गया एक तरफ़ नहीं जान भी सहज निकलती है
दर २ के धक्के खायेंगे नहीं भीख भी मांगे मिलती है॥

दीनदयाल (बहर तवील)

रोलें धोलें चाहे प्राण खोलें यहीं अब,
हकीकत ने वापिस तो आना नहीं।
भागमल आज से भाग फूटे तेरे,
तेरा दुनियां में कोई ठिकाना नहीं।
रोलें धोलें०...

आगे तकदीर के किसका चारा चले,
जोर तेरा न बस कुछ हमारा चले।
बिन सबर के नहीं अब गुजारा चले,
अब हक़ीक़त ने तो चुप कराना नहीं॥
रोलें धोलें०...

जिन्दगी हो गई तेरी बेशक तबाह,

तेरे बरबाद होने में शक क्या रहा।
साथ तेरे जुल्म जिस किस्म का हुआ,
उसको भूलेगा सारा जमाना नहीं।
रोले धोले...

है सबर करना बेशक बहुत ही कठिन,
जानता है वही जिसके दिल में जलन।
वह नहीं दुःख कियाजाय जिसको सहन,
तूने मर कर भी उसको भुलाना नहीं।
रोले धोले...

हम कहें कौन से मुंह से कर तू सबर,
खुद फटा जा रहा है हमारा जिगर;
क्या करे पेश चलती नहीं कुछ मगर,
अब हकीकत ने जिन्दा होजाना नहीं।
रोले धोले...

है सब्र तो क्या सीने पै पत्थर धरो,
भर सको जहर की घूंट जैसे भरो, ।
अब उठो इसके दाहका फिकरभी करो,
रोते रहना किसी ने हटाना नहीं।
रोले धोले...

नाटक

उठो भागमल ! उठो यह रोना कौनसा एक दिन या घड़ी दो घड़ी का है, बल्कि रोने के लिये तो सारी उम्र पड़ी है। एक तुम क्यों रोरहे हो, सारा जमाना रो रहा है, अपना रो रहा है, बेगाना रो रहा है, तमाम शहर के नर नार रो रहे हैं न केवल मनुष्य बल्कि दरोदीवार रो रहे हैं। हिन्दू रो रहे हैं मुसलमान रो रहे हैं, यहां तक कि जमीन आसमान रोरहे हैं मगर कोई कितना ही रोले, हमेशा रोले दिन रात रोलें, एक तुम क्या तमाम कायनात रोले रोले लाख रोले हजार चिल्लाले जमीन आसमान के कुलावे मिलाले, मगर यह किसीकी ताकत नहीं कि हक़ीकत को वापिस बुलाले। इसमें सन्देह नहीं कि सब्रका उपदेश करना इतना मुश्किल नहीं जितना कि सब्रकरना दुश्वार है, वही जानता है जिसका ग़मसे सीना फिगार है, हम किस मुंह से कहें कि सब्र करलो, हां जो जुल्म का पहाड़ तुम्हारे ऊपर गिरा है उसी में से एक पत्थर उठाकर छाती पर धरलो। रोने के लिये इतना अरसा पड़ा है कि खत्म होने में न आयेगा तुम रोना चाहोगे, मगर रोया न जायेगा। किसी ने यह भी नहीं पूछना कि तुम कौन होते हो कहां रहते हो और क्यों रोते हो।

भागमल—चौधरीजी ! आपने जिसक़दर महरबानी फ़रमाई और जितनी तकलीफ़ मेरे लिये उठाई, इसके लिये आपका मशकूर हूं, मगर इस अहसान का बदला देने से मजबूर हूं, अच्छा परमेश्वर आपका भला करे।

दीनदयाल—मैंने कौनसी भलाई आप के साथ करदी, कितनी आपकी झोली भरदी, कौन सा काम संवार दिया, कौनसा बोझ सिर से उतार दिया ? कौनसी तकलीफ़ हटा दी, कौनसी मुसीबत बटादी ? बहुतेरे पापड़ बेले, बहुतेरे यत्न किये, सब कुछ लेकर यहां आये थे और झाड़ कर चल दिये। अगर किसी तरह हक़ीक़त की जान बच जाती, तो सब कुछ भर पाते, सारी तकलीफ़ें भूल जाते, मगर अब सब कुछ अकारथ, न किसी की कोशिश सफल हुई न किसी का पुरुषार्थ। अच्छा परमेश्वर के कामों में किसका जोर चलता है, जो कुछ होना होता है वह होकर ही टलता है, उठो अब इसकी मिट्टी ठिकाने लगानेका फ़िक्र करो।

कौरां (हक़ीकतराय की लाश से चिमट कर)

जाने दूंगी न तुझको अकेला कभी,
छोड मुझको किधर को चला लाडले।

आज मुझसे तू यूं बेरुखी कर चला,
गोद मेरी में अब तक पला लाडले।
जाने दूंगी…
उठ हकीकत जरा देख मेरी तरफ,
माता कह कर मुझे तू बुला लाडले।
क्यों ज़मीं पर पड़ा मेरे लख्ते जिगर,
आ तुझे गोद में लू सुला लाडले।
जाने दूंगी…
खोल कर आंख एक बार तो देख ले,
तू जुबां को जरा तो हिला लाडले।
मेरा इतना तरस भी न आता तुझे,
हाय कब से रही मैं बुला लाडले।
जाने दूंगी…
कर चला तू हकीकत निपूती मुझे,
जिन्दगी खाक में दी मिला लाडले।
नन्हीं दुलहन ने भी बहुत सुख पा लिया,
कर चला रञ्ज में मुबतिला लाडले।
जाने दूंगी…
सोहनी सूरत मुझे फिर दिखायेगा कब,
कब दिखायेगा मुख चांद सा लाडले।

क्यों दीवानी सौदाई मुझे कर चला,
कर मेरे हाल पर कुछ दया लाडले।
जाने दूंगी...
खाक दर दर की तेरे लिये छानली,
सब उतारी हया और शरम लाडले।
घूंट पानी का मुंह में मेरे डाल दे,
हो गया खुश्क मेरा गला लाडले।

नाटक

भागमल—उठो प्रिय! उठो, अपनी तकदीर दगा दे गई किस्मत अपना बदला ले गई। भाग फूट गये, बाजू टूट गये, रोना ही है तो यहां रोकर ही कौनसी झोली भर लेंगे, जहां देखेंगे वहीं बैठकर अपना दिल हलका कर लेंगे, मगर जिस कदर खलकत खड़ी है, इन बेचारों पर ख्वाहमख्वाह मुसीबत पड़ी है। अगर हम इसकी मिट्टी ठिकाने लगायें तो वह बेचारे अपने २ घरों को जायें।

दीनदयाल—दाह संस्कार का और सब सामान तैयार है, एक मुश्किल है कि तमाम विस्वेदारी मुसलमानोंकी है इस लिये इस धर्म की समाधि के लिये जमीन का मिलना सख्त दुश्वार है।

निगाही चौधरी-यह आपका फिजूल ख्याल है, कि इस शहीद की समाधि के लिये जगह का मिलना मुहाल है। अर्चें मैं मुसलमान हूं, इस्लाम का तरफदार हूं, मगर जिस कदर जमीन की आप को जरूरत हो देने के लिये तैयार हूं! बिला शुबा इस महरूम ने शहादत का दरवाजा पाया है, और शहीदोंके नाम की इज्जत करने के लिये खुद अल्ला: ताला ने फरमाया है! जितनी जमीन तुम्हें दरकार हो मुझे इस के देने में मुतलक गुरेज नहीं, इसके अलावा और कोई खिदमत हो तो मुझे उससे भी कोई परहेज नहीं।

भागमल—अच्छा बाबा! परमेश्वर तुम्हारा भला करे, हम फकीरों के पास तो क्या रक्खा है, परमात्मा आपको इस का अजर देगा।

दीनदयाल—आपकी फराखदिली, मुसाफिर नवाजी और बेहद महरबानी का जिस कदर हम शुक्रिया अदा करें थोड़ा है, बिलाशुबा आप जैसी चन्द हस्तियोंने इस्लाम को आज तक जिन्दा रख छोड़ा है।

(धर्मी की लाश को नहला धुला कर विमान में लिटा और शमशान भूमि की ओर लेजाना)

कौरां (गाना)

[बतर्ज—तुझको रोहित कहां पाऊं प्यारे]

कहाँ बेटा कहां की तैयारी,
तेरी चलदी किधर को सवारी।
बेटा मुखड़ा तू अपना दिखाजा,
कहां जाता है कुछ तो बताजा।
मैं कहां जाऊं कर्मों की मारी,
तेरी चलदी···
सौ सौ विपता में अपने को डाला,
लाल मेरे तुझे तब था पाला।
जाने किस किसकी की तावेदारी,
तेरी चलदी···
एक ही आंख थी वह भी फूटी,
हाय परदेश में लाके लूटी।
कौन विपता सुनेगा हमारी,
तेरी चलदी···
कर चला तू हमारी विगानी,
साथ मारी वह बेटी विगानी।
वह ब्याही रही न कंवारी,
तेरी चलदी···

किस तरह से वह सदमा सहेगी,
किस भरोसे पै जिन्दा रहेगी।
मार लेगी कलेजे कटारी,
तेरी चलदी...

सांस गिन गिन के घड़ियां गुजारे,
आयेंगे कब प्यारे दुलारे।
उसको पल पल की इन्तजारी,
तेरी चलदी...

हम चले हार कर अपनी बाजी,
भरले अपने खजाने तू काजी।
करले दुनिया मुसलमानी सारी,
तेरी चलदी...

जाऊं "यशवन्तसिंह" किस ठिकाने,
जिन्दगी खोदी परमात्मा ने।
मौत लाऊं कहां से उधारी,
तेरी चलदी...

नाटक

दीनदयाल—(भागमल का हाथ पकड़ कर) उठो भाई चिता को आग लगा दो।

भागमल–(सिर पीट कर) आह विधाता ! तू उलटे कानन चला रहा है, जो बेटे का कर्म था वह बाप करा रहा है।

(भागमल का चिता को आग लगाना, ज्वाला लपटों का फैल जाना, समस्त उपस्थित जनों का आंसू बहाना और हकीकत के भौतिक शरीर का भस्म हो जाना)

भागमल–(उपस्थित समुदाय से) जहां आप भाइयों इस क़दर महरबानियां की हैं इतना अहसान और कर दीजिये कि किसी आदमी को बटाला भेज दीजिये, ताकि उसकी सास और बहू के सिर में यह मुसीबत का पत्थर मार दे।

नोई—यद्यपि यह सख्त काम है, क्योंकि इस भांति का सन्देशा उनके लिये मौत का पैग़ाम है। तथापि मैं आपका हुक्म बजा लाता हूं और इसी जगह से बटाला को रवाना हो जाता हूं।

दीनदयाल–भागमल जी ! यद्यपि यह कहते हुए जिस्म को लरज़ा चढ़ता है तथापि विवश हो कहना ही पड़ा, कि अब तुम स्यालकोट की राह लो और चल कर अपनी दीवारों को संभालो। इसकी मालूम

विधवा का भी और कौनसा ठिकाना है, उस बेचारी का वक्त भी आपने ही कटवाना है।

भागमल कालिंगड़ा)

गल कफना और हाथ कमण्डल तन पर भस्म रमायेंगे।
जहां ले जायेगी किस्मत अब उसी जगह पर जायेंगे॥
घर किसी का जब नहीं घरवाला क्या देखेंगे घरमें जाकर।
छाती से किसे लगायेंगे बेटा कह किसे बुलायेंगे॥
दुनिया ने हम को छोड़ दिया हमभी दुनिया सेअलग हुये।
दुनिया न रही जब अपनी क्या दुनियामें मुह दिखलायेंगे॥
जिस जगह रात पड़जायेगी घर वही समझ लेंगे अपना।
जिस जगह मौत आजायेगी बस उसी जगह मर जायेंगे॥
सब स्यालकोट के लोगों को कहना यह मेरी जा निब से।
मत जने कोई औलाद नहीं तो मेरी तरह दुःख पायेंगे॥
जिस जगह हकीकतराय गया मेरी भी वहीं तयारी है।
घर पर जाकर"यशवन्तसिंह"हम किससे दिल बहलायेंगे॥

नाटक

चौधरी जी! अब घरमें हमारा क्या पड़ा है, जिसको जाकर संभालना है,वहां कौन बैठाहै जिसको जाकर देखना भालना है। जिसके साथ घर था वह ईश्वर के घर गया

और हमारी यह अवस्था कर गया। अब कैसा घर और किसका घर, दिन भर जंगलोंमें धक्के खायेंगे, थक जायेंगे तो कहीं आंसू बहालेंगे, जहां रात पड़ जायगी वहीं अपना घर बना लेंगे दिन चढ़ जायेगा तो आगे की राह लेंगे। जिस क़दर सांस बाक़ी हैं, इसी तरह पूरे कर जायेंगे, जहां मौत आजायेगा वहीं मर जायेंगे। (कौरां से) ऐ प्रिये! अब इन चीथड़ों को उतार डालो और जो क़ुदरत ने तक़दीर में लिख दिया है वह अपना भेष बनालो।

(दोनों भगवें कपड़े पहनते हैं)

दीनदयाल—हैं! हैं!! क्या करते हो, सौदाई न बनो, परमेश्वर की भावी को धैर्य तथा धन्यवाद के साथ सहो जिस तरह और जितने में वह रक्खे रहो।

भागमल—इसमें न कुछ मीन है न मेख है, परमेश्वर की यही आज्ञा और तक़दीर का यही लेख है, यह हमारे जीवन का परिणाम है, सब हिन्दू मुसलमानों को हमारा अन्तिम प्रणाम है:—

आप सब भाइयों की हमदर्दी के हम मशकूर हैं,
हुक्म में ईश्वर के हम और आप सब मजबूर हैं।
दोष कुछ सबे का इसमें और न क़ाजी पर गिला,

कर्म थे जैसे किये वैसा ही हमको फल मिला ।

दीनदयाल--सब सच और सब कुछ सही, मगर तकदीर किसी की हमेशा एक सी नहीं रही जब तक दुनिया में रहना है, इसके सुख दुःख सभी सहना है । इन विचारों को दिल से निकालो, और चलकर अपने डेरे को संभालो ।

भागमल (बतर्ज—करले सिंगार चतुर अलबेली)

इस दुनिया को समझ न अपनी दुनिया अन्त बिगानी है रे
इस दुनिया को०...

देख चुके इसके सुख इससे बिरथा प्रीति लगानी है रे ।
मन भटकाना नित दुख पाना आखिर नरक निशाना है रे
इस दुनिया को...

साथ न दुनिया आई तेरे साथ न तेरे जानी है रे ।
तज दुनिया की प्रीत ऐ प्राणी दुनिया आखिर फ़ानी है रे ।
इस दुनिया को...

दुनिया के मोह जाल में फंसकर दुनिया हुई दिवानी है रे ।
जितनी की दुनिया की दारी उतनी ही वीरानी है रे ।
इस दुनिया को...

कर्म रेख नहीं मिटे मिटाई भूला फिरे अज्ञानी है रे।
जो कुछ लिखा है पेश'नीपर आखिर वह पेश न आनीहैरे
इस दुनिया...
दुनिया से भर गई तबीयत हर सें लगन लगानी है रे।
आखिर को 'यशवन्तसिंह' यह दुनिया कूड़ कहानी है रे।
इस दुनिया...

(दोनों का भगवें कपड़े पहन कर जंगल की तरफ चले जाना और समस्त उपस्थित गण का आंसू बहाते हुये अपने घरों को विदा होना)

दृश्य ५ सीन २

(कस्बा बटाला हकीकतराय की सुसराल का मकान)

लक्ष्मी (गाना)

कब तक रहेंगे ईश्वर गरदिश में दिन हमारे
कब तक फिरेंगे वापिस मेरे वह प्राणप्यारे।
बैठे बिठाये घर में क्या आ पड़ी मुसीबत,
किस्मत ने किस जन्म के बदले लिये हमारे।

तक़दीर ले गई किस परदेश में उठाकर.
पैदल चलेंगे बुड्ढे सास और सुसर हमारे।
यह भी खबर नहीं है हैं आज कल कहां वह,
वाकिफ है कौन उनका बैठेंगे किस के द्वारे।
दिन रात इस फिक्र में घुल २ के मर रही हूं,
दिन को है रोना धोना गिनती हूं शब को तारे।
जिस दिन से वह गये हैं कुछ भी खबर न भेजी,
एक पल न चैन पड़ती मुझको फिकर के मारे।
जाऊं कहां कहूं मैं किस से मुसीबत अपनी,
हर वक्त चल रहे हैं ग़म के जिगर में आरे।
माता जन्म की दुखिया जब से मरी पड़ी है,
बाप और भाई मेरे जब से स्वर्ग सिधारे।
जब से जन्म लिया है एक दिनभी सुख न देखा,
आहें भरी हमेशा रो धो के दिन गुजारें।
सारे सहारे खोकर यह आश्रम लिया था,
"यशवन्तसिंत लगूं मैं अब कौनसे किनारे।

नाटक

आह ! प्रभो तेरी माया, मुझ बेकस और यतीम को किस मुसीबत में फंसाया ! जिसके सिर पर भाईका हाथ न

बाप का साया, जब से होश संभाला एक दिनभी सुख न पाया, न दिल भर कर खेली न मन भर कर खाया, सब आसरे मिटाकर सिर्फ एकसहारा बनाया, मगर जमानेको वह भी एक आंख नहीं भाया, जब से यहां आई हूं कोई खत भी नहीं आया। राम जाने उनपर कैसे गुजर रहीहै, मैं अलग भुन रही हूं मां अलग फिकर में मर रही है। कल से तो तबियत कुछ ऐसी बिगड़ रही है, कि गोया कलेजा निकला जा रहा है, घरबार खाने को आरहा है। न किसी से बात करने को दिल चाहता है न किसी का बोल सुहाता है जिधर देखती हूं उनका बूटा सा कद सामने खड़ा नजर आता है।

लक्ष्मी की माता—(बाहर से आकर) बेटी! तू हरघड़ी बुरे शकुन न मनाया कर हर समय आंसू न बहाया कर परमेश्वर रखे मेरा हकीकत जल्द वापिस आने वाला है, ईश्वर पर भरोसा रख वही मेरे रंडापे और तेरे सुहाग का रखवाला है। जा तू दो घड़ी बाहर फिर फिराले, और अपने पास पड़ोस में बैठ कर अपना दिल बहलाले।

लक्ष्मी—(आंसू बहाकर) नहीं मां मैं कहीं नहीं जाती आज मेरी तबियत किसी से मिलने जुलने को

नहीं चाहती ।

माता—(अपने दुपट्टे के आंचल से लक्ष्मी के आंसू पोंछ कर) उठ २ बावली ! मेरी बेटी क्यों रोवे, तुझे हंसते खेलते देखती हूं तो मेरा दिल भी खुश रहता है, जरा तुझे उदास देखती हूं तो मुझ में तो उठने बैठने का आसरा नहीं रहता है। राम रक्खे मेरे हक़ीक़त को सोते देर भी न लगे। घड़ी में सोवे पल में जागे, अपनी तबियत को सम्भाल और ऐसे बुरे विचार मन से निकाल।

लक्ष्मी—तबियत को बहुतेरा सम्भालती हूं ख्यालात को दुसरी तरफ डालती हूं। मगर तमाम कोशिशें रायगां जा रही हैं और निगोड़ी आंख ख्वाहमख़्वा भर २कर आ रही हैं।

माता—तू अपने को ज्यादा उदास न कर, परमेश्वर रक्खे मैं कल को पीछे दूसरा काम करूंगी, पहले किसीको लाहौर भेजने का इन्तजाम करूंगी।

कमला—(बाहर से आकर) चाची ! बाहर कोई आदमी खड़ा है जो लाहौर से आया है जाकर पूछ शायद जीजा जी की कोई खबर लाया है।

माता—शुक्र है परमेश्वरने यह चिन्ता मिटाई, तू बाहर क्यों

खड़ा है अन्दर आजा भाई !

नाई—(अन्दर आकर) जिजमाननी की धर्म जय !

माता—सुना भाई कुशल तो है !

नाई (कवित्त)

क्या कहूं जिजमाननी मैं किस तरह वर्णन करूं,
हृदय लाऊं किसका बड़ी दुःख भरी कहानी है।
मिल गया है मिट्टी में तेरा बुढ़ापा माई आज,
और तेरी लाडली की नष्ट हुई जवानी है।
कह दिया हर चन्द और खुशामद बहुतेरी करली,
बात लेकिन काजियों ने किसी की ना मानी है।
हो गये बलिदान हिन्दू धर्म पै हकीकतराय,
कौरां और भागमल की मिट गई निशानी है ॥

माता—(छाती में दुहत्थड़ मार कर) आह मेरी कर्महीन बच्ची मैं तो तुझे छिपाती फिरती थी, जमाने की नजरों से बचाती फिरती थी। अपना तो सबकुछ पहले ही खो चुकी थी, अपने कर्मों को मुद्दत से रो चुकी थी। जमाना मुझको बहुतेरा सता चुका सिर का साया और आगे का सहारा कभी से जा चुका न मालूम किस तरह अपने दिनों को धक्के दे रही थी, सिर्फ तेरी तरफ देखकर जरा ठंडी सांस ले रही थी।

जिन्दगी तो पहले ही तबाह हो चुकी थी, अब मौत भी वीरानी होगई, मेरी बछड़ी तू भी मेरी तरह दुखों की खान हो गई।

लक्ष्मी (सोहनी)

मैं तो कल से कलेजे को मसलती थी,
नजर आते थे बुरे आसार प्रीतम।
जिधर देखती थी खून बरसता था,
मचा चारों तरफ अन्धकार प्रीतम।
बाहर जाऊं तो बाहर से खौफ़ लगता,
आता खाने को गोया घरबार प्रीतम।
डरती फिरती थी हाय जिस बात से मैं,
वही हो गया है आखिरकार प्रीतम।
किसके आने की आस अब करूंगी मैं,
अम्माँ किसका करे इन्तजार प्रीतम।
दोनों घरों का बुझ गया आज दीपक,
धक्के दे गये बीच मंझधार प्रीतम।
मुझ यतीम अनाथ का खबरगीरां,
कोई रहा न बीच संसार प्रीतम।
किया दर्शन न आपका आंख भर कर,
अपनी सूरत दिखा एक बार प्रीतम।

कौन दुःख सुख की लेवेगा खबर मेरी,
कौन बैठा है मेरा गमख्वार प्रीतम।
आज मिट गया राज सुहाग मेरा,
किसे देखूंगी आंख पसार प्रीतम।
घड़ियां आपके आने की गिन रही थी,
कबसी आयेंगे मेरे भरतार प्रीतम।
तरस रही हूं आप के दर्शनों को,
आ पधार प्रीतम आ पधार प्रीतम।

माता (सोहनी)

मेरी लाडली रोके सुनाये किसको,
कौन सुनेगा तेरी फरियाद बेटी।
एक सांस भी सुख न लिया तूने,
ऐसे किये थे क्या अपराध बेटी।
मैं तो पहले ही कर्मों को रो रही थी,
अपनी गर्दिश को कर करके याद बेटी।
मेरी बच्ची! इस बातकी खबर क्या थी,
करना किस्मत ने और बरबाद बेटी।
छोड़ी मौत ने कौनसी कसर पहले,
सर पर खाविन्द न आगे बेटी।

रोऊं कौन से कौन से दुःख को मैं,
नहीं दुखों की कोई तादाद बेटी ॥
भूल गई अपने तो दुःख सारे,
सोना किया था मिस्ल फौलाद बेटी ।
यही मांगती दुआ परमात्मा से,
मेरी रहे सलामत दामाद बेटी ।
तुझे देख कर अपने दिन तोड़ती थी,
रहती घर में अपने आबाद बेटी ।
मैं तो जन्मकी दुखियारी अभागनी थी,
हाय तू भी चली ना मुराद बेटी ॥
अगर बांझ ही कर देता राम मुझको,
तो इन दुखों से रहती आजाद बेटी ।
न औलाद जनती न यह देखती दुःख,
और न होते यह सितम ईजाद बेटी ।

नाटक

रो ले मेरी करम हीन और दुखियारी बेटी रो ले, मैं तुझे क्या तसल्ली दिलाऊं, क्योंकर धीर बधाऊं, किसका नाम लेकर चुप करवाऊं, क्या कहकर समझाऊं तेरे दुःख की दवाई कहां से लाऊं, तेरी सहायता करनेके लियेकिस

को बुलाऊं ! मुसीबत हमेशा हमारे पेश पड़ीरही, मौत हर समय हमारे सिर चढ़ी रही, घर का नाम निशान कभी से मिट चुका, सिर का साया था वह भी जा चुका, जब से होश संभाला यही दुख झेल रही थी, मुसीबतके पापड़ बेल रही थी, अपने दिन न जाने किस किस तरह ढकेल रही थी, मगर अब क्या बनाऊं किधर को जाऊं, मेरी बछड़ी ! तुझे कहां लेजाकर छिपाऊं ।

लक्ष्मी (बहर तवील

अच्छा माता सबर कर न कर तू रुदन,
मेरी किस्मतमें लिखा सो पाऊंगी मैं ।
कौन बैठा है दर्दी मेरा इस जगह,
जिसे रो रो के दुखड़ा सुनाऊंगी मैं ॥
अच्छा माता०...

बाप मेरा नहीं भाई मेरा नहीं,
आसरे जिसके दिलको बहलाऊंगी मैं ।
एक तू है सो मुझसे भी ज्यादा दुखी,
क्या जन्म की दुःखीको दुखाऊंगी मैं ॥
अच्छा माता०...

जिसे सौंपा था तूने वह चलते हुये,

क्या यहां बैठकर अब बनाऊंगी मैं,
दुःख सहूंगी न खुद दुःख न दूंगी तुझे।
साथ अपने प्रीतम के जाऊंगी मैं,
अच्छा माता०...

दोष है माता मेरे प्रारब्ध का,
और इलजाम किसपर लगाऊंगी मैं।
जो किया मेरे ईश्वर ने अच्छा किया,
पर विछोड़े का दुःख न उठाऊंगी मैं।
अच्छा माता०...

हो सती जा मिलूंगी पति देव से,
चरण उनके स्वर्ग में दबाऊंगी मैं।
यही वायदा किया था विवाहके समय,
नहीं अपने वचन को भुलाऊँगी मैं॥
अच्छा माता०...

मिलले अच्छी तरह मेरी जननी मुझे,
फिर शक्ल यह न तुझको दिखाऊँगी मैं।
जिस सफरको चली हूं मैं "यशवन्तसिंह"
लौटकर उस जगह से न आऊंगी मैं॥

माता (बहरे तवील)

मेरी बेटी सबर कर न बन बावली,
किस किस्म की यह बातें सुनाती है तू।
मैं तो पहले ही किस्मत की मारी हुई,
क्यों जन्म की जली को जलाती है तू॥
मेरी बेटी०…

कर दया मुझ मुसीबत ज़दा पर ज़रा,
क्यों कलेजे में खंजर चलाती है तू।
जिस कलेजे पै लाखों ज़ख़्म हो रहे,
क्यों नमक और उनपर लगाती है तू।
मेरी बेटी०…

सब गंवा करके रक्खी तेरी जान थी,
मेरी बच्ची कहां आज जाती है तू।
रह गई कौनसी थी दुखों की कसर,
यह नया और सदमा दिखाती है तू॥
मेरी बेटी०…

ज़िन्दगी का तो सुख जानती ही न थी,
मौत को भी तलख क्यों बनाती है तू।
मेरी क़िस्मत ही बदले बहुत ले रही,

क्यों नया बखेड़ा रचाती है तू।
मेरी बेटी०...

हाथ जोड़ूं तेरे आगे यह हठ न कर,
क्यों दुखे दिल को ज्यादा दुखाती है तू।
मेरी छाती पै जलती चितायें बहुत,
क्यों अनोखी चिता यह जलाती है तू॥
मेरी बेटी०...

मैंने भूले से तुझको रुलाया न था,
बेटी बन कर मुझे क्यों रुलाती है तू।
फूल दामाद के तो चुने भी नहीं,
और गुल यह नया ही खिलाती है तू॥
मेरी बेटी०...

लक्ष्मी (बहरे तवील)

क्या जिऊं और किस के सहारे जिऊं,
बैठने तक को कोई ठिकाना नहीं।
जान ही जब जिस्म से जुदा हो गई,
फिर जिसमने कोई काम आना नहीं॥
क्या जिऊं०...

मेरा दुनिया में अब क्या रहा वास्ता,

काम दुनियां का कोई बनाना नहीं।
इस रंडापे के दुःख की दवा है यही.
मुझे मंजूर जी का जलाना नहीं।
क्या जिऊं...

ले चुकी बहुत आनन्द ससार के,
दिल अब ज्यादा इसमें फंसाना नहीं।
मैं रहूं अब जमाने में किस वास्ते,
जब हमारा रहा यह जमाना नहीं॥
क्या जिऊं...

जल्द करदे माता तयारी मेरी,
वक्त फिर यह मेरे हाथ आना नहीं।
साथ मेरा जो आगे निकल जायेगा,
फिर पता उनका ढूंढे से पाना नहीं।
क्या जिऊं...

कर शकुन अपने घरसे विदा कर मुझे,
मैंने आना न तूने बुलाना नहीं।
हो गये मुझसे नाराज प्रीतम अगर,
फिर उमर भर बुलाना चलाना नहीं।
क्या जिऊं...

माता मेरे ही सर की कसम है तुझे,

मेरे मरने पै आंसू बहाना नहीं ।
मेरी प्रारब्ध में ही है "यशवन्तसिंह"
अब यहां का रहा आबदाना नहीं ॥
क्या जिऊं...

माता (बहर तवील)

देख बेटी तू मेरी तरफ ही जरा,
मैंने क्या २ मुसीबत उठाई नहीं ।
होश जब से संभाला यही दुख भरे,
जान कर जान लेकिन गवाई नहीं ॥
देख बेटा...
आहें भरते ही भरते कटी यह उमर,
नींद सुख की घड़ी भर भी आई नहीं ;
कौन सा दुःख जो मैंने उठाया नहीं,
मैं जमाने ने क्या कुछ सताई नहीं ॥
देख बेटी...
याद किस २ की करके मरूं लक्ष्मी,
तेरा बाबुल नहीं तेरा भाई नहीं ।
मौत हर वक्त पीछे पड़ी ही रही,
एक दिन भी तो उसने भुलाई नहीं ॥

देख बेटी...

मैंने जो दुःख सहे क्या सहेगा कोई,
जातो विपता भी अपनी सुनाई नहीं।
सारा कुनवा खपा कर मैं जिन्दा रही,
पार किस्मत के आगे बसाई नहीं।
देख बेटी...

यह इरादा न कर राम के वास्ते,
सह सकूंगी मैं तेरी जुदाई नहीं।
साथ तेरे मेरे दिन भी कट जांयगे,
आसरा और देता दिखाई नहीं॥
देख बेटी...

रख कलेजे पे अपने सबर की सिला,
कर्म की रेखा मिटती मिटाई नहीं।
सुख मिले हमको "यशवन्तसिंह" किस तरह,
हमने किस्मत ही ऐसी लिखाई नहीं॥
देख बेटी...

नाटक

बेटी! तू क्यों दीवानी हो रही है मुझपर तो मौतकी पहले ही बहुतेरी महरबानी हो रही है। जमाने ने इतनी

सताई हूं कि मरने वालों को रोने भी नहीं पाई हूं। मेरे कलेजे में तो पहले ही बहुतेरी छुरियां चल रही हैं, इस सीने पर आगे ही बेशुमार चितायें जल रही हैं, गरदिशने मोर मार कर भुस भर दिया; मौत ने घर का घर खाली कर दिया। न सिर पर पति का साया रहा, न आगे पेट का जाया रहा। किस २ को रोऊं, किसको याद करूं। जब परमेश्वर ही रूठ गया तो किससे फ़रियाद करूं। जबसे होश संभाला मुसीबत ही मुसीबत सही, सब कुछ गंवा कर एक तेरी जान रही, मगर मुझे क्या मालूम था कि तू भी इन दुःखों के लिये पल रही है, और मेरी छाती पर एक जिन्दा चिता जल रही है अच्छा बेटी ! कलेजा बहुतेरा उबलता है, मगर तक़दीर के आगे क्या जोर चलता है। परमेश्वर के वास्ते अपने इरादे से बाज़ आ, और मेरे कलेजे में यह नया दाग न लगा।

लक्ष्मी—मेरी दुःखिया माता ! मुझसे तेरा रुदन देखा नहीं जाता। अगर मैं पैदा होतेही मर जाती, तो यह नई मुसीबत तो तुझपर न आती। मैंने जन्म लिया और तूने मुसीबतों का सामना किया। ससुर घर गई तो उन पर आफत आई, पति की जान ली और बूढ़े सास सुसर की जिन्दगी खाक में मिलाई अब जीवित

रहूंगी तो न मालूम क्या २ दुख सहूंगी। किस कदर मुसीबतें उठाऊंगी, किस २ को रंजोग़म में फंसाऊंगी, । बहुत दुख देखे हैं, बहुतेरी तकलीफ उठाई, है, अब तो इस मनहूस जिन्दगी का खात्मा कर लेने ही में भलाई है। जब मैं ही इस दुनियां में नहीं रहूंगी, तो न किसी को दुख दूंगी न खुद दुःख सहूंगी।

माता-भला अब रह ही कौन गया है जिसको तू दुःख पहुंचायेगी, या मुसीबत में फंसायेगी, एक मेरी जान है जो पहले ही मुसीबतों का घर और दुखकी कान है। वह भी न मालूम कितने दिन की महमान है! अब कोनसी मुसीबतें बाकी हैं जो मुझ पर आयेंगी, कौनसी विपत्तियां रह गई हैं जो मुझको सतायेंगी। बच्ची! तू ऐसा काम न कर, जिन्दगी का सुख तो तकदीर में नहीं था मगर मेरी मौत तो हराम न कर!

लक्ष्मी-मेरी माता! जीवित रहने को किसका दिल नहीं चाहता, मौत से किसको खौफ नहीं आता मगर जब जिन्दगी के साधन ही नहीं यह जिन्दगी किस काम की दुनियां में रह कर अपनी मौत भी क्यों हराम की। इसके अतिरिक्त जो कुछ भाग में लिखा

है वह होकर ही टलता है, इसमें न तेरी पेश जाती है न मेरा जोर चलता है। जो कुछ हुआ वः परमेश्वर की मरजी थी, जो कुछ हो रहा है वह उसकी इच्छानुकूल है, इसमें किसी का दखल देना बिल्कुल फिजूल है।

माता (कव्वाली)

बनादी पीसकर गर्दिश ने सुरमः हड्डियां मेरी,
कहीं पर रह गई अटकी हुई कम्बख्त जां मेरी।
कहांतक और कब तक मैं सहे जाऊंगी यह सदमे,
छिप गई मौत भी परमात्मा जाने कहां मेरी॥
आज तक रोने धोने में कटी सारी उमर मेरी,
सुनी लेकिन किसी ने भी नहीं आहो फुगां मेरी।
दुहाई हर जगह दी हाथ जोड़े मिन्नतें कर लीं,
न सुनती है जमी मेरी न सुनता आसमां मेरी।
तू बेटी बन के मुझसे क्यों अनहोनी कराती है,
तुझे कहदूं सती होजा यह जल जाये जबां मेरी।
कलेजा फाड़ कर अपना दिखाऊं किस तरह तुझको,
कहूं किससे सुनेगा कौन दुःख की दास्तां मेरी।
न कुदरत ने तरस खाया न किस्मत को रहम आया,

जिस कदर आहोजारी की गई सब रोयेगां मेरी।
अगर परमात्मा तू बांझ ही मुझ को बना देता,
न मैं औलाद जनती और न हों बरबादियां मेरी॥

लक्ष्मी

मेरा दिल घट रहा है तू रुदन मत कर ऐ मां मेरी,
कलेजा कट रहा है लड़खड़ाती है जबां मेरी।
मेरी तक़दीर ही जब हो रही है मुझ से बरगश्ता,
भोगती मैं सुख दुनियांके यहथी क़िस्मत कहां मेरी।
रहूंगी जब तलक जिन्दा मैं दुःखही दुःख उठाऊंगी,
जमाने को जला देंगीं आहें आतिश फिशां मेरी।
तेरे उपकार को माता न मर कर भी भुलाऊंगी,
बहुतेरे सुख दिये और की नाजबरदारियां मेरी।
मगर मैंने दिये जो दुःख तुझे उनको क्षमा करना,
बख़्शदेना खता और मुआफ़ करना गलतियां मेरी।
खता है फ़ैल छोटों का क्षमा शेवा बुजुर्गों का,
न उनको सामने रखना जो बद उनवानियां मेरी।
तेरे घर से घड़ी पल में विदा मैं होने वाली हूं,
गले से लग के मिलले होगई तैयारियां मेरी।
बशर तो चीज क्या है पत्थरों तक को रुला देगी,
किसीने गर लिखी "यशवन्तसिंह" यह दास्तां मेरी।

नाटक

सबर कर मेरी माता ! सबर कर ! परमेश्वरकी रचना इसी तरह थी भावी का चक्र इसी तरह चलना था, तकदीर के लिखे को होकर टलना था। तू रुदन कर रही है मेरा दिल घुट रहा है तू आहें भरती है मेरा कलेजा फट रहा है ! मेरी माता ! मैं तेरे उपकारों को मरकर भी न भुलाऊंगी तुमसी दयालू हृदय माता मैं सात जन्म में भी न पाऊंगी। तूने मुझे बहुतेरे सुख दिये तेरी गोदी में बैठकर बहुतेरे आनन्द लिये, बहुतेरी नाजबरदारियां की हर तरह की खातिरदारियां की; मगर मेरी तकदीर कि तेरी मुहब्बत का ज्यादा लाभ न उठा सकी, तेरी खिदमत तो क्या करनी थी मुसीबत में भी तेरा हाथ न बटा सकी। वास्तव में यह कमबख्त लड़कियां मां बाप को रुलाने के लिये ही आती हैं, जिनकी गोद में परवरिश पाती हैं, सब प्रकार के सुख उठाती हैं, आखिर पराया माल होती हैं और पराये घर चली जाती हैं जब निगोड़ी कुदरत का ही यह असूल है तो फिर मेरे जाने पर तेरा रोना धोना बिल्कुल फिजूल है। सबर की सिला अपने सीने पर धरले जहर की घूंट भरनी है जैसे भरी जाय भरले।

माता—अच्छा मेरी बेटी! मैंने आज तक बहुतेरी मुसीबत सही और तो सब अपना बदला ले चुके थे एक तेरी

कसर रही थी। ले तू भी अपना हौसला मिटाले, खूब जी भरकर सताले, यही दिन देखने के लिए औलाद जनी थी, पिछले जन्म का कोई बदला लेने के लिये तू मेरी बेटी बनी थीः—

मुझ कर्महीनी को कोख से जन्म दिया था क्यों मेरी मैया
कहांजाऊँ सुनाऊं किसकोव्यथाकोईरहानहीं मेरेदुखकासुनैया
नितरुदनकरूं रोरो कर मरूं नहीं पासरहा कोई धीर बंधैया
ईश्वर की गति बेटा न पति बेटी होसती और बहन न भैया

लक्ष्मी-(नगर निवासियों से) धर्मशालाये और सदाव्रत तो भागवान लोग लगाते हैं, जहां अतिथि लोग आराम पाते हैं, भूखे प्यासे अन्न पानी खाते हैं, मगर मुर्दे को कफन और लकड़ियां तो निकम्मी से निकम्मी और छोटी से छोटी बस्तियों में भी मिल जाता है। किन्तु इस नगर का ऐसा दम निकल गया कि इन से मामूली सा काम नहीं हो सकता, और इतने बड़े शहर में दोमन लकड़ियों का इन्तज़ाम नहीं हो सकता अगर हमारे कोई करने वाला नहीं रहा तो मेरी लाश को यों गलियों में रुलाओगे कौवे चील और कुत्तों को खिलाओगे। याद रक्खो मुसीबत और गरदिश किसी विशेष व्यक्ति के लिये नहीं

बनाई है, यतीमी और बेबसी किसी एक के हिस्से में नहीं आई है। धन दौलत और कुनबे के अभिमानियो! जमाने को हमेशा एक जैसा न जानियो। यह हमेशा बदलता रहता है कहीं चढ़ता रहता है कहीं ढलता रहता है, कालचक्र हमेशा चलता रहता है, जिसमें अच्छे अच्छों का कस बल निकलता रहता है। दूर न जाओ जरा अपनी आंखों के सामने ही निगाह दौड़ाओ, कल तक मेरी मां के घर में क्या कुछ न था, रुपया नहीं था जायदाद नहीं थी, कुनबा नहीं था औलाद नहीं थी, जहां आज एक खाक की मुट्ठी भी दिखाई नहीं देती, और एक चिड़िया भी बोलती सुनाई नहीं देती। डरो, डरो परमेश्वर के कोप से डरो और दुनिया के पदार्थों पर इतना अभिमान न करो, जो वक्त आज हम पर आया है वह तुम पर भी आ सकता है जिस जमाने ने हमको मिटाया है तुमको भी मिटा सकता है।

सर्वदयाल-देवी—वास्तव में तू सती है, सत का अवतार है, तू शक्ति है और तमाम शक्तियों का भण्डार है। तेरा तेज और जलाल देखकर हमें खौफ आता है,

कल तक तू हमारी पुत्री थी। किन्तु आजसे हमारी माता है। निःसन्देह यदि तू मुख से कोई दुर्वचन निकालेगी, तो यह नगरी तो क्या तमाम ज़माने को भस्म कर डालेगी। परमेश्वर के वास्ते अपनी जबानको संभालना और इस नगरी को विपत्ति में न डालना। अब तक हम लोग सिर्फ इस कारण चुप थे कि शायद तू अपने इरादे से बाज़ आ जाये, और अपनी बदनसीब माता को यह नया दुःख न दिखाये। किन्तु हमें निश्चय हो गया है कि तू अपने सत्यपन को न तोड़ेगी और जो इरादा कर चुकी है उसको पूरा करके छोड़ेगी। जो कुछ तू आज्ञा दे उसका पालन करने को तैयार हैं, जिस सामान की आवश्यकता हो उसके हम ज़िम्मेवार हैं।

लक्ष्मी—यह मेरे बाप दादा की नगरी है मेरी जन्मभूमि है यहां के अन्न जलमे परवरिश पाई, इन्हीं गलियों में खेली खाई, बुरी या भली आप लोगों की गोद में पली, अब मेरे प्रभू का बुलावा आ गया इसलिये वहां को चली मेरे पिता की नगरी के लोगो; फूलो फलो और आनन्द भोगो मैं आपके लिये कोई दुर्वचन बोलूं मेरी क्या मजाल है, और किसी

सामान की आवश्यकता नहीं; केवल दो चार मन लकड़ियों का सवाल है।

सर्वदयाल—मंजूर, मंजूर माता! तेरा सवाल सिर आंखों मंजूर करके अतिरिक्त और जो आज्ञा होगी उसके पालन में देरी न होगी।

दृश्य ५ सीन ३

शमशान भूमि

[चिता तैयार है शहर के नर और नारियों का हजूम हो रहा है, सती लक्ष्मी सोलह सिंगार किये और अपने प्राणपति के चित्त को विचार नेत्र की आंखों में बसाये अपनी हमजोलियों के साथ आ रही है, अभागिनी और दुखित आत्मा माता अपने विपत्ति के दिनों को याद करके आंसू बहा रही है।]

लदनी (गाना)

करने को विदा मुझको सभी नगरी है आई,
सब लोग लुगाई।
साजन ने बुलाने के लिए भेजा है नाई,
जाती हूं बुलाई॥

पाला था जिन्होंने मुझे आज उनको भी छोड़ा,
पड़ता है विछोड़ा।
और साथ सहेली भी कोई जाने न पाई,
संग खेली खिलाई।

मां बाप ने जब कर ही दिया व्याह मुकलावा,
आता था बुलावा।
हमजोलियों ने आके जभी डोली चढ़ाई,
मिलने भी न पाई॥

जाती हूं मैं उस घर को जिसे देखा न भाला,
अदना है या आला।
यह सूरतें फिर मुझको नहीं देंगी दिखाई,
दूं कितनी दुआई॥

इस नगरी में फिर मैंने लौट कर नहीं आना,
न किसी ने बुलाना।

गर कोई खता हो तो मेरी बख्शना भाई,
मैं थी ही पराई ॥
नर नार बड़े छोटे को प्रणाम है मेरा,
अब कूंच है डेरा ।
हर रोज के ग़म रंजने मैं बहुत सताई,
अब होगी रिहाई ॥
जाने का मेरा रंज जरा दिल में न लाना,
मत आंसू बहाना ।
है रोज़ अज़ल से यही कानून खुदाई,
होती यही आई ॥
दुखिया है मेरी माता जरा धीर बांधना,
मत इसको रुलाना ।
सिर पर है पति इसके न बेटा है न भाई,
गरदिश की सताई ॥
रोये न कोई शख्श तुम्हें मेरी क़सम है,
यह खिलाफ रसम है ।
जिस किस्म की "यशवन्तसिंह" करी मैंने कमाई,
आगे वही आई ॥

नाटक

मेरे बुजुर्गों और भाइयो! मैं आपको धन्यवाद

देती हूं कि आपने मुझ बेकस, लाचार यतीम और अनाथ पर इस भांति महरबानी की, और मेरी यात्रा की तैयारी में बहुत कु. आसानी की। जिस सामान की मुझ को जरूरत थी, आपने बेहद पहुंचाया,.आपकी मौजूदगी में मुझको अपना स्वर्गवासी पिता और मरहूम भाई याद न आया। जरूरत से ज्यादा मेरी सहायता फरमाई यहां तककि मुझको अपनी यात्राकी पहली मन्जिल तक पहुंचाने की तकलीफ उठाई। परमेश्वर आपको इसका अजर दे, दूध दे पूत दे, इज्जत दे, जर दे मैंने आप लोगों की गोद में परवरिश पाई थी आपके घर में खेली खाई थी मगर कोई अनुचित शब्द किसी स य मेरे मुंह से निकल गया हो तो इस का तबियत पर ख्याल न लाना, और मुझे अपनी पुत्री समझ कर मुआफ फरमाना। क्योंकि अब मैं ऐसी जगह जा र ी हूं जहांसे वापिस न आऊंगी, न आप लोगों के दर्शन नसीब होंगे न अपनी शक्ल दिखाऊंगी।

उपस्थितगण—देवी तू धन्य है, माता तू धन्य है, तू शक्ति है, तू सती है तेरे सम्मुख बोलने की हमारी क्या गति, हमें क्षमा प्रदान कर, तू कल्याणकारिणी है हमारा कल्याण कर।

लक्ष्मी—(स्त्री समुदाय से) मेरी माताओ और बहनो।

आपकी यह कर्महीन पुत्री अब आपसे विदा होने को है, और दो चार पल में आपके चरणों से जुदा होने को है आपने जिस कदर लाड़चाव किये जितने आदरभाव किये, उनके लिए जितना आपका धन्यवाद करूं थोड़ा है, मगर अब मेरा आपसे सदैव के लिए बिछोड़ा है। उस जगह जारही हूं जो मेरा असली ठिकाना है, जहां दो दिन आगे पीछे सबको जाना है, इस समय न मुझको किसी वस्तु की इच्छा है न किसी किस्म की अभिलाषा रखती हूं केवल एक कामना है जिसके पूरा होने की आपसे आशा रखती हूं। वह सिर्फ यह कि मेरी दुःखित आत्मा माता बिल्कुल अनाथ है, इसके सिरपर सिर्फ आपका ही हाथ है। इसके हाल पर महरबानी फ़रमाना और जहां तक हो सके इसकी धीर बंधाना। परमेश्वर इसको इन आपदाओं के सहन करने का बल दें, और आपको इन नेकियों का फल दें।

स्त्रियां-देवी! सतियों का बचन कभी निष्फल नहीं जाता है, अब यह मेरी माता नहीं बल्कि तुम्हारी माता है अपनी शक्ति से बढ़ कर इसकी सेवा बजालायेंगी इसको तसल्ली दें, इसकी धीर बंधायेंगी। तेरे सत्यके

प्रताप से इसको अपने दिन काटने में किसी प्रकार का दुःख न होगा, अगर यह हमारे जीते जी दुःखी हुई तो हमें परलोक में भी सुख न होगा।

लक्ष्मी—(सहेलियों से) मेरी सखियो सहेलियो, इस संसार में ज़रा समझ कर खेलियो तुम्हारी जिन्दगी बड़ी दुश्वार गुज़ार है। तुम्हारे जीवन का रास्ता बड़ा खारदार है, तुम्हारे आगे बड़े अलझेड़े हैं, तुम्हारे सामने बहुतसे बखेड़े हैं तुम्हारा जीवन बड़ा पुर-इनकिलाब है पराया माल तुम्हारा पैदायशी खिताब है! तुम्हारी छोटी सी जिन्दगी में बड़ा परिवर्तन आना है नामहरमों+के साथ अपनी जिन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी, सास और ननद की गरम सरद सहारनी पड़ेगी। मेरी हमजोलियो वहां ज़रा सोच समझ कर बोलियो ज्यादा बोलोगी तो बकवासी और बेतमीज कहलाओगी, कम बोलोगी तो मगरूर और खुद पसन्द समझी जाओगी, किसी ने तुम्हारे लिये बिल्कुल सच कहा है—

संभल २ पग धरना री बहनो देश बिगाने जाना होगा।

* परिवर्तन शील है। +अपरचित।

इसघरको मत समझो अपना औरही नया ठिकाना होगा ॥
सास बिगानी ननद बिगानी ससुरा कन्त बिगाना होगा।
सौ सौ दाग दिलों में होंगे जिसको खोल खिलाना होगा ॥

अच्छा मेरा आखिरी नमस्कार हैं नर और नारीको नमस्कार है छोटे बड़े को नमस्कार है बूढ़े जवानको नमस्कार है, हिन्दू मुसलमान को नमस्कार है मुझे आपका एक एक उपकार याद है जिसके बदले में मेरे पास केवल एक आशीर्वाद है परमेश्वर तुम्हारे सब क्लेश दूर करे और सब प्रकारके सुखोंसे भरपूर करे (हाथ जोड़ कर) नमस्कार ! नमस्कार !! नमस्कार !!!

(चिता में बैठ जाती है)

उपस्थितगण—प्रभू तेरी गती ! परमेश्वर तेरी लीला इस चिता में आकर न सूखा रहा न गीला।

लक्ष्मी (प्रभाती)

प्रभूजी कर्मों की गति न्यारी,
कोई दाता है कोई भिक्षुक है कोई दानी कोई भिखारी,
कोई पण्डित कोई ज्ञानी ध्यानी चातुर कोई अनारी।
प्रभूजी०...

कोई निर्धन धनाढ्य कोई है सदाव्रत हैं जारी,
कोई मिटावे लाख किसी को दाने की लाचारी।
प्रभूजी०...

कोई अन्त को सुखी किसीको जन्मसे ही बीमारी.
कोई मौतसे डरे किसी को मिले न मौत उधारी।
प्रभूजी०...

किसी द्वार पै हाथी झूलें पालकी असवारी,
कोई हकूमत करता कोई करता तावेदारी ।
प्रभूजी०...

कोई मगन हो भोगे जिन्दगी बना हुआ घर बारी.
कोई जन्म लेने नहीं पाया आगई मौत हत्यारी।
प्रभूजी०

प्रारब्ध के आगे आकर हारी खलकत सारी,
कर्म रेख "यशवन्तसिंह" नहीं टरे किसीकी टारी।
प्रभूजी कर्मों की गति न्यारी ॥

नाटक

शुक्रहै प्रभू तेरा हरहाल में शुक्रहै, तूधन्य है तेरीरचना धन्य है, परमात्मा तेरी निर-अपराधिनी पुत्री इस संसारको छोड़कर तेरी आनन्दमय गोद में आती है मेरे मन्द कर्म

तो इस योग्य नहीं कि अपने कल्याण के लिये तुझसे प्रार्थना कर सकूं परन्तु आप दया के भंडार हैं दया के सागर हैं, मेरे पापोंको बख्श दें, मेरे अपराधोंको क्षमा करें, औरजिस यात्रा के लिये मैं जा रही हूं उसको सफल करें, कल्याण कारी प्रभू कल्याण करो, कल्याण करो, कल्याण करो !

(अग्नि प्रचण्ड होती है)

उपस्थित गण—धन्य है, धन्य है, सती तु धन्य है, तेरा सत्य धन्य है, तेरा साहस धन्य है, तुझे धन्य है, तेरे माता पिता को धन्य है ।

चिता में से शब्द—जय हो, जय हो, महान् प्रभू ! तेरीजय हो । प्राणनाथ ! अपनी क्षुद्र दासी की तुच्छ सेवा स्वीकार करो, जरा ठहरो थोड़ी देर इन्तज़ार करो ।

(ज्वाला तेज होती है सती अपने पति के प्रेम में मग्न होकर अपने प्राण परमात्मा के अर्पण करती है उपस्थितगण अपने २ घरों को लौटते हैं ।)

माता

निशान मेरा अगर इस तरह मिटाना था,
मुझे भी दुनियां से परमात्मा उठाना था ।
अगर थी मेरे नसीबों में यही बरबादी,

कलम को सख्त ज़रा और भी बनाना था।

लिये थे ऐसे कड़े इम्तिहान पहले ही,

क़सर रही थी यही यूं भी आजमाना था।

कर्म थे ऐसे ही मकद्दम में यही लिखा था,

जहां से मैंने यूं ही ना मुराद जाना था।

मुझ ही पै आनी थी सख्तियां जमाने की,

हरएक के लबपर फ़कत मेरा नाम आना था।

सताया और तो सब ने ही जी भर कर,

औलाद ने भी मेरे से दगा कमाना था।

पतिका और न बेटे का सुख था क़िस्मत में

न पास वह भी रहा माल जो बिगाना था।

मैं रोऊं कर्मों को "यशवन्तसिंह" कहां जाकर,

ठिकाना है नकोई और न कुछ ठिकाना था॥

दृश्य ६ सीन १

शाहजहां का शयनागार

(दिल्ली सम्राट शाहजहा एक रत्न जटित पलङ्ग पर लेटा हुआ है तबियत पर व्याकुलता और बेचैनी के चिह्न दिखाई दे रहे हैं, बड़े यत्न करने पर भी नींद कोसों दूर है, रात आधी से अधिक व्यतीत हो चुकी। सैकड़ों कठिनाइयां व हजारों मुश्किलों से अब जरा आंख झपकी है, एक भयानक स्वप्न देख कर आप ही आप बड़बड़ा रहा है, और स्वप्नावस्था म हकीकतराय की आत्मा उससे वार्तालाप कर रही है।)

शाहजहां—अहा कैसा खूबसूरत लड़का है, किसी खुश नसीब घर का चिराग है, किसी की उमंगों का सामान है कैसा मस्त और बे फिकर हो कर खेल रहा है, न चढ़े की खुशी है न छिपे का ग़म है, इस जिन्दगी के मुकाबिले में एक शाहन्शाह की जिन्दगी भी बिल्कुल हेच है, वाकई यह बादशाह उम्र है। सुब्हानअल्लाह ! कैसी भोलीभाली सूरत है, क्या लाजवाब हुस्नहै शकलसूरत ऐसी दिलफ़रेब और बेनजीर है, गोया कुदरतने ख़ास फुरसत के वक्त बनाई है, या

अल्लाह तआला! क्या तमाम जमाने का हुस्न तूने इसी को दे डाला? दिल चाहता है कि इसे अपनी गोद में बिठा कर प्यार करूं, इसे सीने से लगालूं इसके सर सदके सब कुछ निसार करूं, ताकि किसी बदबख्त और रूसियाह की नजर-बद से यह महफूज रहे। होनहार और खूबसूरत बच्चे! आ जरा मेरी गोद में आ जरा नजदीक आकर मुझे अपनी यूसफी शकल तो दिखा।

आत्मा—नहीं मैं नहीं आऊंगा अगर आप ज्यादा दिक करेंगे तो मैं यहां से चलाजाऊंगा:—

मत बुलाओ तुम मुझे तुम खार हो मैं फूल हूं।
मस्तहो तुम ख्वाब में मैं खेल में मशगूल हूं॥
आपको मेरे से मुझ को आपसे क्या वास्ता।
आपकी मंजिल है दीगर अलग मेरा रास्ता॥

शाहजहां-बेशक मैं खार हूं तू फूल है मगर फूल के साथ खार का होना भी तो लाजिमी और कुदरती उसूल है, इस लिहाज से भी तेरा इनकार फिजूल है।

आत्मा-दलील तो आपकी वजनदार और माकूल है, मगर इसके समझने में थोड़ी भूल है। अगर कांटा फूल की हिफाजत के लिये है तो उसका वजूद फूलके

लिये मुबारिक है, मगर यह कांटा जला देने के लायक है जो खुद ही फूल के लिये हानिकारक है :—

खार वह अफ़जल है जो कि फूल का है गम गुसार,
इसलिये ही खेत का सब बाड़ करते खबरदार।
बाड़ ही खुद उठ के जबकि खेत को खाने लगे,
फूल ऐसे खार के नज़दीक क्यों आने लगे।

शाहजहां-अजब मनतक है, निराला जवाब है, खूब फ़िलासफ़ी है, बच्चे मेरा दिल तुझसे मुहब्बत करने को चाहता है।

आत्मा-यह दिल नहीं बल्कि पत्थर का टुकड़ा है, इस दिल में मुहब्बत की बू नहीं बल्कि नफ़रत का जज़बा* है :—

दिल अगर होता तो इस में दर्द भी होता जरूर।
सख्त गर होता कभी तो सर्द भी होता जरूर॥
आपका यह दिल मगर नापाक और मलीन है।
इसको दिल कहना ही दिल की हतक और तौहीनहै॥

शाहजहां-तोबा २ इतनी गुस्ताखी ऐसी शोखी इस कदर दिलेरी? मगर नहीं, यह बच्चाहै, और हर किस्मके कयूद और पाबन्दियोंसे आज़ाद है, इसलिये इसकी

* आकर्षण, अश।

तमाम हरकात काबिल मुआफी हैं। बच्चे मेरी आंखें तेरी नूरानी सूरत को देखना चाहती हैं।

आत्मा—बकौल आपके अगर मेरी नूरानी ही सूरत है, तो इसके देखने के लिये आंखों में भी तो नूर की जरूरत है, जब तक कि जिलमत का जाला आपकी आंखों से न उतर जायेगा, उस वक्त तक आपको नज़र क्या खाक आयेगा—

आंख हो और देखने की आंख में तासीर हो।
नज़र आये हूबहू जिस किस्म की तसवीर हो॥
नेक बद दिखता नहीं पर आंख तो मौजूद है।
इस किस्म की आंख का रखना महज बेसूद*है॥

शाहजहां—अगर इतनी मुहब्बत का मैं किसी और के साथ इज़हार करता, तो वह मुझपर अपनी जानतक निसार करता। मगर यह उम्र का तकाज़ा है कि बावजूद मेरे इस्तफसार और इल्तिजा के ये बिल्कुल लापरवाह है। बच्चे! क्या तू मेरी मुहब्बत की क़दर नहीं करता?

आत्मा—मुहब्बत और उलफत के नामको बदनाम करने वाली नापाक रूह! मुझे तेरी बातों से धोखा और फरेब

*व्यर्थ

की बू आरही है तेरी एक २ हरकत रियाकारी और मक्कारी का पता बता रही है—

कसाई भी तो बकरे से मुहब्बत ही जताता है,
मुहब्बत से खिलाता है मुहब्बत से पिलाता है।
मगर उसकी मुहब्बत जानता सारा ज़माना है.
कि इस मासूमका उसने खुराक अपना बनाना है।

शाहजहां—या इलाही ! क्या इसरार है, इसकी कुछ असलियत है या महज खयालातका तूमार है। मेरी तबियत को सख्त बेकरारी है, तू सच बता कि यह ख्वाब है या आलमे बेदारी है ?

आत्मा—न ख्वाब है, न आलमे बेदारी है, बल्कि तेरे जुल्म व सितम का आईना है तेरी अंधेरगर्दियों की हूबहू तसवीर है :—

ख्वाब भी देखा है देखी ख्वाब की तसवीर भी।
चन्द दिन में देखलेना इस ख्वाब की ताबीरभी।
गर यही हालत रही रोओगे अपने बख्त को।
हाथ से देलोगे एक दिन ताज को और तख्त को॥

शाहजहां—बच्चोंके ज्यादा मुंह लगना अपनी आबरू रेजी करवाना है, अच्छा बेटा ! जा खेल कूद में तुझे

नहीं बुलाता, तेरे किसी काम में दखल अन्दाज होना नहीं चाहता। मगर हैं ? तूने यह तीर कमान हाथ में क्यों उठाया है, ऐसी खतरनाक चीज तू कहां से लाया है, ऊँह, ओ नादान ! तू इस का चिल्ला क्यों चढ़ाता है, अरे बेवकूफ तू मेरी तरफ शिस्त क्यों लगाता है ? हटा, हटा, इस तीरको मेरे सामनेसे हटा। अरे वह मार गया, अरे नावकार ! मेरा ताज क्यों सर से उतार गया, ? ऐ वह भाग गया, अरे दौड़ियो आइयो।

बेग :—जहांपनाह क्या है, क्या है, क्या होगया कौन भाग गया, किसको पकड़ते हो ? उठो उठो अल्लाह का नाम लो।

शाहजहां (आंखें मलकर)या अल्लाह ! या परवरदिगार !! या जुलजलाल !!! तोबा, तोबा, तोबा।

बेगम–नजर बद दूर मिजाज बखैर किस बात का ख्याल हुआ, तबा मुबारिक पर कैसा मलाल हुआ ?

शाहजहां–न पूछो इसकी वजह न पूछो, कलेजा अभी तक धड़क रहा है दिल बे तरह भड़क रहा है, आंखों में अंधेरा छा रहा है, हाथ पांव में लरजा आ रहा है। तोबा इलाही, तोबा इलाही, यह ख्वाब था या मेरी

तबाही ?

बेगम—यह आपने क्या फ़रमाया, आप के सर पर मेरे अल्लाह का साया ! ऐसा क्या ख्वाब नजर आया, जो मिजाज अक़दस का इस क़दर मुक़द्दर बनाया ?

शाहजहां—क्या बताऊँ ! आज परेशब से ही तबियतपर सख्त बेक़रारी थी, तुम देखती थीं तमाम रात किस तरह करवटें लेलेकर गुजारीथी। आखिर बसद मुश्किल जरा आंख झपकी तो क्या देखता हूं कि एक कमसिन हिन्दू लड़का जो निहायत हसीन और जमील था सामने से आया, उस के खुदादाद हुस्न और दिल फरेब सूरत को देखकर मेरा दिल ख्वामख्वाह उसे मुहब्बत करने को चाहा। मैंने हरचन्द उसे बुलाया, मगर वह मेरे नजदीक न आया, बल्कि गुस्ताखी और सख्त कलामी से पेश आया। फिर आखिर उसने एक तीर अपनी कमान पर चढ़ाया, और मेरे ताजको उसका निशाना बनाया। मैंनेदौड़ो पकड़ो का शोर मचाया, मगर वह फौरन वहांसे भाग गया और इस शोर शराबे में मैं नींद से जाग गया।

बेगम—क्या ख्वाब क्या ख्वाब की बात, जिस पर आपने अपनी तबियत को इस क़दर परेशान किया,

और मुझको भी नाहक हैरान किया ।

शाहजहां—नहीं, नहीं, यह ख्वाब महज खयालात व'ज गश्त की तवहमात नहीं और ताज का सर से उतर जाना कोई मामूली बात नहीं । यह ख्वाब जरूर कुछ न कुछ गुल खिलायेगा, और सलतनत पर कोई न कोई तबाही लायेगा ।

बेगम—दुश्मनों के मुंह में खाक, आप का मालिक मेरा अल्लाह पाक, अगर ऐसाही ख्याल है और तबियत पर कुछ ज्यादा ही मलाल है, तो सुबह अपने सिदके कुछ खैरात कर दीजिये, बराय खुदा ऐसी मनहूस बातों का मेरे सामने जिक्र न कीजिये ।

शाहजहां—जो मेरे अल्लाह को मंजूर, उसके हुक्म में दखल देने की किसे मकदूर । या जुल जलाल ! तू इस मुसीबत को टाल ।

बेगम—दिन निकल आया नमाज अदा कीजिये, और खुदा से दुआ कीजिये वह रहीम है; वह गफूर है, हम नाचीज बन्दों की दुआ उसी के हजूर है ।

नीचे से आवाज [गाना कालिगड़ा]

पुत देवियोग विश तेरे द्वारे आ गया,

लुट गया आलीजाह पै गया अन्धेर शाहा,
तेरे ऐसे राज औत्ते की अन्धेर छा गया।
पुत दे वियोग विच…
काजियोंने जुल्म मचाया, रखनूं भी खासे पाया,
सियालकोट वाला काजी मेरा पुत खा गया।
पुत दे वियोग विच…
इक पुतसी इकलौता, होर नहीं बेटा पोता,
ओहो आज मेरे घरदा दीवा बुझा गया।
पुत दे वियोग विच…
व्याहे नू चरना होया गिन कपर बेटा मोया,
वोहे दे आगे एक चिता सुलगा गया।
पुत दे वियोग विच…
कोई न ठिकानो छड़िया, वोहों घर थी कढया,
मर के हकीकत मेरी जिन्दगी रुला गया।
पुत दे वियोग विच…
घर नहीं बार नहीं, होर परवार नहीं,
गल विच झोली हाथ तुम्बी फड़ा गया।
पुत दे वियोग विच…
तू देख किस्थे जाइये, किहनूं ए दुख सुनाइये,
पुत दा विछोड़ा मेरी हड्डियां नूं खा गया।

पुत दे वियोग विच'''

मर २ के हत्थे पुज्जे, चलदियां दे पैर भी सुज्जे,

भुक्कियां दा कालजा वी मुंह विच आ गया।

पुत वियोग विच'''

शाहजहां—(लौंडी से) नंचे यह कैसा शोर हो रहा है, जरा देख तो कौन रो रहा है ?

लौंडी—(खिड़की मेंसे देख कर) जहांपनाह सलामत ! दो दरवेश जिनमें एक मर्द और एक औरत है महल-सरा के नीचे बैठे रो रहे हैं ।

शाहजहां--उनसे दरियाफ़्त कर कि कौन हैं और क्यों रोते हैं।

लौंडी—(दरीची में से)ऐ खुदा के बन्दो ! तुम कौन हो, क्यों रोते हो ?

भागमल–आह परमेश्वर ! आजतक हमें किसी ने न पूछा अब यह पूछने की आवाज कहां से आई है ?—

पूछने वाला था वह परमात्मा के घर गया।

पूछने वाली हमारी यह अवस्था कर गया ॥

कौन बोला किस तरफ से आरही आवाज है।

क्या हमारा भी कोई दुनियां में मरहम राज है॥

लौंडी-(शाहजहां से)हजूर अनवर ! कोई माकूल जवाब

नहीं देते, घर गया दर गया कर गया कुछ ऐसी ही बकवाससी कर रहे हैं ऐसा मालूम होता है जैसे कोई जनूनी हों।

शाहजहां—ज्यादा बकवास करने की जरूरत नहीं, जा और मुफस्सिल पता ला।

लौंडी—शाह साहब! शाहंशाह का यह इर्शाद है, फरमाइये आपकी क्या फरियाद है?

भागमल—क्या तेरा कहना बिल्कुल सही है, क्या मैं यक़ीन करलूं कि तू सच कह रही है?—

हम तो यह समझे हुए थे शाहंशाह भी मर चुका।
सल्तनत भी मर चुकी और बादशाह भी मर चुका॥
हिन्द में चारों तरफ अब काजियों का राज है।
अदना व आला अब उनके रहम का मुहताज है॥

लौंडी—(शाहजहां से) जहांपनाह सलामत! ऐसा मालूम होता है कि या तो कोई अफयूनी हैं या कोई पागल जनूनी हैं, मुझेना उनकी बातें सुननेका ताबनहीं, और उनके सवालात का मेरे पास कोई जवाब नहीं।

शाहजहां—न यह कोई दुरवेश है न फकीर है, जहांतक मेरा ख्याल है मेरे ख्वाब की ताबीर हैं। जा और उन्हें बुलाकर ला।

(दोनों हाजिर होते हैं)

भागमल—शाहन्शाह सलामत की दुहाई है।

शाहजहां—फरमाइये बाबा साहब आप पर क्या मुसीबत आई है ?

भागमल-(रोकर) ईश्वर ! तेरी माया, आज दुनियां ने मुझको बाबा कहकर बुलाया :—

ईश्वर ने यह दिन दिखलाये हमें बाबा कहो फकीर कहो।
नाचीज़ कहो नादान कहो नालायक कहो हकीर कहो॥
किस्मत गरदिश में आई है कहने वालों का दोष नहीं।
जो दिल चाहो सो कहो हमें इसका मुतलक़ अफ़सोस नहीं॥

शाहजहां—खुदा न ख्वास्ता मैं कोई ऐसा लफ्ज जबान पर नहीं लाया, जिसने आपकी तबियत को इस क़दर रंज पहुंचाया। जब आपने फकीरी जामा पहना है, तो देखने वालों ने आपको फ़कीर ही कहना है।

भागमल—यह सब आपकी महरबानी है, जो हमने फ़कीर बन कर दर २ की खाक छानी है। कभी लाखों के मालिक थे हज़ारों का व्यापार था, इज्जत में इज्जत थी परिवार में परिवार था मगर अब यह नौबत आई है कि गले में झोली और हाथ में कासये गदाई है:—

हो गये दुखी इस जीने से यह जान भी नहीं निकलती है
किस्मत को रोते फिरते हैं नहीं भीख भी मांगे मिलती है,
इक तरफ सताती भूख उधर सरदी के मारे कांप रहे,
इन फटे पुराने कपड़ों से हम तन को अपने ढांक रहे।

शाहजहां—मेरी कैसी महरबानी है यह क्या कहानी है,
तुम्हारा क्या नाम है? कहां मुकाम है, किसने
मुसीबत ढाई है, क्यों फकीरी की नौबत आई है।

भागमल—आलीजाह! मुझ सितम ज़दा का स्यालकोट
मुकाम है, जात खत्री और भागमल नाम है। एक
बेटा था जिसको बगरज़ हुसूल तालीम मकतब में
दाखिल कर दिया, मुल्ला की गैरहाजिरी में मकतबी
लड़कों में आपस में कुछ तकरार हो गई और नौबत
गाली गलौच तक पहुंच गई मुसलमान लड़कों ने
दुर्गा भवानी को गाली दी मेरे बच्चे के मुंह से बीबी
फ़ातमा की निस्बत कुछ बुरा भला निकल गया
मुल्ला ने मुसलमान लड़कों को तो बरी कर दिया मेरे
बच्चे को काजी के पेश कर दिया। काजी ने आगा
देखा न पीछा, मेरे बच्चेको निस्बत कत्लका फ़तवा
देकर उसको हाकिम शहरके सुपर्द करदिया, हाकिम
शहर ने मुकदमे को अपने अखत्यार असाअत से

बाहर तसव्वुर करके सूबा लाहौर के पास भेज दिया और सूबा ने मेरे वेगुनाह बच्चे को कत्ल करा कर मुझको इस हालत को पहुंचा दिया। यह बदनसीब औरत मेरी बीवी है जो मेरे साथ धक्के खाती फिर रही है। अपने मरहूम बच्चे की बीवी को उसकी मां के घर छोड़ आये, परमेश्वर जाने जिन्दा है या मर गई, जब कहीं भी सुनाई न हुई तो गिरते मरते आपके द्वारे पर आपड़े हैं, इसके बाद परमेश्वर के आगे फरियाद है।

शाहजहां–तावा, तोबा, इतना जुल्म! इस कदर अंधेर, बच्चों का तकरार और मौत की सजा!

भागमल–जहांपनाह! जो कुछ मैंने अर्ज किया है अगर इसमें जरा भी झूंठ हो तो मैं आपका कसूरवार, जो सजा दें मैं उसका सजावार।

शाहजहां—नहीं २ मुझे यकीन कामिल है कि तुम्हारा कहना हर्फ बहर्फ सही है, और तुमने एक बात भी झूँठ नहीं कही है यह आलम उलगैब मुझे आपनी कुदरते कामिला से सब कुछ बता गया है, और इस जुल्म व सितम का नकशा हूबहू दिखला गया:–

रात को जो ख्वाब में आई नजर तसवीर थी,

ख्वाह वह सच्चा था और यह ख्वाब की ताबीर थी
मसलता था रात से ही मैं कलेजा दम बदम,
रात काटी करवटें लेले के अल्लाह की कसम ॥

कौरां-परमेश्वर के घर में भी बे इन्साफी है जिसने तुझ जैसे अन्याई को राज का भार संभाला, ऐसा नाजुक और जिम्मेदारी का काम तुझ जैसे आरामतलब के कन्धों पर डाला। जिस राज्यमें इस कदर अँधेर मचा हुआ है, अचम्भा है कि वह नष्ट न होनेसे क्योंकर बचा हुआ है :—

बादशाह है मस्त और बदमस्त जिसके अहलकार ।
बे गुनाहों का कत्ल जिनका हो मामूली शआर ॥
सल्तनत में जब कि है अन्धेर ऐसा मच रहा ।
ग़ज़ब है वह राज अब तक किस तरह से बच रहा ॥

भागमल—शान्ति करो प्रिय! शान्ति करो!! अपनी तबियत को संभालो और जरा सोच समझ कर बात मुंह से निकालो ।

कौरां—तबियत को भी संभाला और ज़बान को भी संभाला और इस शरमा शरमी में अपना सब कुछ नष्ट कर डाला । मगर न अब तबियत को रोकूंगी न जबान को संभालूंगी, कोई ज्यादा बोलेगा तो

मैं अपनी आंतोंका ढेरकर डालूंगी। कोई नाराज होगा तो हमारा क्या लेगा, राजा रूंठेगा अपनी नगरी संभालेगा, सो हम बगैर किसी के कहे सुने ही सब कुछ छोड़ आये, कोई संभाले कोई लूट कर ले जाये। घर बार देदिया जायदाद देदी इज्जत देदी औलाद दे दी, एक मेरी जान रही है, उसे देने को तैयार बैठी हूं अब किसी का क्या डर जब जीने से खुद ही बेजार बैठी हूं। काश कि मैं अपना कलेजा फाड़कर दिखला सकती, अपने दिल की लगी को बतला सकती :—

इन आंखों ने जुल्म देखे जबर देखे सितम देखे।
गजब देखे कहर देखे बहुत रंजो अलम देखे॥
जो दुःख देखे हैं मैंने वह जमाने ने हैं कम देखे।
कसाई तक भी देखे पर न ऐसे बेरहम देखे॥
उठाई हर तरह जिल्लत सही इतनी तबाई है।
गजब है मुझको रोने तक की भी मनाई है॥

शाहजहां—(रोता है)।

भोगमल—हमारे भाग में ऐसा ही लिखा था इसमें इनका क्या दोष है।

कौरां—इनका दोष कौन कहे, दोष हमारा जो ऐसे अन्याई के राज में रहे, जहां इस प्रकार के जुल्मो सितम और

अत्याचार सहे। सब कुछ देखकर सब्र करती रही, सबकी सुनकर ज़हर के घूंट भरती रही। सब कुछ सहा मगर अपनी ज़बान न खोली, लेकिन अब बरदाश्त की हद होली। अब न कि ी के सहूंगी न सब्र करूंगी, बल्कि इस जगह दीवार से टक्कर मार कर मरूंगी :—

भाड़ में जाये वह राजा राज चूल्हे में पड़े।
सलतनतमें जिसके रय्यत बेगुनाह शूली चढ़े॥
लुटगया मुझ बेगुनाह का राज जिसके राजमें।
मूल में बेटा दिया और मैं मरूंगी ब्याज में॥

शाहजहां—सच है। ऐ नेक खातुन! जो कुछ तू कहती है सब सच है। मैं न सिर्फ तेरा क़सूरवार हूं, बल्कि खुदा का भी गुनाहगार हूं, तेरे बेटेके खूनका जिम्मेवार हूं और खुदा की दरगाह में इसका देनदार हूं, न राज का मुस्तहिक हूं न सल्तनत का हक़दार हूं, मेरी गलती मेरी भूल, जो इलजाम दे सब क़बूल, मगर जो बात हाथ से निकल चुकी वह वापिस नहीं आ सकती, इसमें शक नहीं कि तेरी आहोज़ारी खाली नहीं जा सकती। बिलाशुबा अगर तू ज़रा भी ज़बान हिला देगी, तो मुझको और मेरी सलतनत को खाकमें मिला देगी। क्योंकि

तू सितमजदा है इसलिये तेरी ज़बान में तासीर है।
तेरा एक २ लफ्ज जहर में बुझा हुआ तीर है।
मगर बराये खुदा ऐसा न कीजियो, मुझे कोई बद-
दुआ न दीजियो, कम से कम मुझे इन जालिमों से
इस जुल्म का बदला तो लेने दीजियो।

भागमल—सब्र करो सब्र करो, जो हुआ इसे सब्र के साथ सहो, हमारी किस्मत का दोष है किसी को बुरा क्यों कहो। (शाहजहां से) जहांपनाह! मुआफ़ फ़रमाना, और इसके कहने सुनने का तबियत पर ख्याल न लाना। क्योंकि अव्वल तो यह औरत ज़ात जिसकी अक्ल व तमीज महज़ घर की चारदीवारी या ज्यादा से ज्यादा मुहल्ले की औरतों में ही बात-चीत करने तक महदूद है, इसलिये इनसे किसी सन्जीदा गुफ्तगू की उम्मेद रखना महज बे सूद है, नीज इसको भी क्या खता है, इस बेचारी को शाही रस्म व रिवाज का क्या पता है, आजतक कभी घर की चारदिवारी के बाहर कदम न निकाला, बैठे बिठाये परमेश्वर ने यह वक्त डाला, जो मुसीबत उठानी थी वह उठाई दुनिया से बरबाद हुये हया शर्म सब गवाई। अन्यथा एक शरीफ़ घर की बहू बेटी चाहे कितनी मुसीबत

उठाती मगर, इस बेशर्मी से आपके सामने न आती इसलिये इस बदहवासी की हालत में जो गुस्ताखाना अलफाज इसने आपकी शान में कहें, उनके लिये मैं सख्त शर्मसार हूं और मुझसे भी अगर कोई बेअदबी होगई हो तो उसके लिये मैं मुआफी का ख्वास्तगार हूं ।

शाहजहां—किसकी बेअदबी और कैसी गुस्ताखी, इस शरीफजादी के जब्त और तहम्मुल में क्या शक है, वरना जो कुछ यह मुझे कहे इसका कहने का हक है जिस कदर जुल्म और सब्र इस नेक बख्त ने अपने सीने पर सहा, उसके मुकाबिले में तो मुझे कुछ भी नहीं कहा । खैर जो कुछ हुआ अल्लाह की मरजी समझो या मेरा कसूर, जो इलजाम दो मुझे मंजूर । अब तुम इतनी महरबानी फरमाओ कि कल ही यहां से लाहौर को रवाना हो जाओ, तुम्हारे पहुंचने पर मैं वहां आऊंगा और तुम्हारे बेटे के कसास का बदला दिखाऊंगा जब तक उन जालिमों को उनके कैफर किरदारको न पहुंचालूंगा, सिवाय एक मुठीभर सत्तू और दो चार घूंट पानीके कोई चीजअपने मुंह में न डालूंगा । मगर मेरे वहां पहुंचनेतककिसी किस्म

का ज़िक्र अपनी ज़ुबान पर न लाना, न अपने यहां आने का और न मेरे लाहौर पहुंचने का भेद किसी को बतलाना।

भागमल—जैसा इरशाद होगा बजा लायेंगे, खुश-हुक्म कल ही लाहौर को रवाना हो जायेंगे।

दृश्य ६ दूसरा सीन

लाहौर का शाही महल

(शाहन्शाह दिल्ली एक मसनद पर फ़रोकश हैं, सामने एक चोबदार दस्त बस्ता हुक्म का मुन्तज़िर खड़ा है)

शाहजहां—(चोबदार से) जाओ और नवाब साहब को हमारे आने की इत्तला पहुंचाओ, और उन्हें अपने साथ लेकर आओ।

चोबदार—बहुत मुबारिक।

(थोड़ी देर के बाद नवाब हाज़िर होता है।)

नवाब—(हैरानी से) शहन्शाह आलम अस्सलाम अलेकुम!

शाहजहां—वलेकुम अस्सलाम! कहिये नवाबसाहब मिज़ाज बख़ैरियत?

नवाब-खुदा की महरबानी और हजूर की परवरिश,मगर हजूरवाला ! यह राजयेरी अक्ल नाकिस में न आया कि आं हज़रत ने अचानक कैसे कदम रंजा फरमाया न कोई इत्तला न कोई अ'लाम, न कोई मरासला, न कोई प्रोग्राम, इस खाकसार से ऐसा कौनसा कसूर जहूर में आया, जो हजूर अनवरने आने इस्तकबाल से भी महरूम फरमाया।

शाहजहां—नहीं अजीज नवाब साहब ! ऐसा कोई खास बात न थी, न पेशतर से आने का कुछ इरादा था, मगर चन्द याम से देहली की आबोहवा ने ईजानिब की तबियत पर कुछ खराब असर डाला, इस लिये उसको बहाल करने के लिये हमने सफर का शुगल निकाला। नीज आप से मिलने को देरसे दिल चाहता था, मगर मसरूफियत की वजह से कोई मौका हाथ न आता था।

नवाबसाहब-खाकसार की खुश नशीबी और शहंशाह आलम की जर्रा नवाजी है मगर रुखे अनवर से कुछ परेशानी व सरासीमगी के आसार नुमायां हैं अल्लाह मेरा ख्याल गलत साबित करे !

शाहजहां-कोई खास वजह नहीं महज सफर का थकान।

नवाब—अल्लाह का अहसान ।

शाहजहां—सुनाओ नवाब साहब ? आप के इलाके का क्या हाल है ?

नवाब—हजूर के इकबाल से इस इलाके का काम हर तरह से तरक्की पजीर है, इन्तजाम भी हर तरह से बेनजीर है आमदनी ने खर्च का बहुत पीछे डाला हुआ है खास बात यह कि इस अरसा में इस्लाम का बोल बाला हुआ है, और कुफ्फारका मुंह काला हुआ है ।

शाहजहां—वह क्योंकर ?

नवाब—स्यालकोट का रहने वाला एक नौउम्र तिफ्लक हजरत रसूलजादी की शान बेपायान में सख्त कलामी से पेश आया, जिसकी निस्बत काजियान शहर ने क़त्ल का फ़तवा सादिर फरमाया, और उसको क़त्ल करवा कर जहन्नुम में पहुंचाया, जिससे दुश्मन इसलाम बिल्कुल खामोश हो रहे हैं, और राह कुफ्र छोड़ कर इसलाम के हल्का बगोश हो रहे हैं ।

शाहजहां—जजाक अल्लाह ! यह तो आप ने ऐसा काम किया जिससे दुनियां व उक़बा में आप को नेकनाम किया । सल्तनत की जानिब से खिलअत के हक़दार हुए । और अल्लाह की दरगाह से बहिश्त के उम्मेदवार हुए ।

नवाब—आमीन ! यह सब हुजूरका इकबाल है, दस्तरख्वान हाजिर है, खाना तनावुल फरमाइये ।

शाहजहां—दस्तरख्वान को वापिस भिजवाइये, पहले किसी बाद रफतार शुतर सवार को स्यालकोट भेज कर काजी साहब को मय उसके अज़ाज व अकारिबकुनबे कबाइल के यहां तलब करवाइये । जब तक मुनासिब इनाम व इकराम से उनको सर्फराज न बनाऊंगा खाने को हाथ तक न लगाऊंगा । जब अरकानें सल्तनत अहकाम सल्तनत को इस तनदही और नेक नीयती से अंजाम दें, तो हुक्मराने सलतनत का फर्ज है कि उन्हें हर तरह की इज्जत से मुमताज करें और खिलअत फाखरा से सर्फराज करें ।

नवाब—बहुत मुबारिक जैसा इरसाद ।

दूसरा दिन

चोबदार—जहांपनाह सलामत । काजी साहब मय अपने मुताल्लिकीन के तशरीफ ले आये हैं ।

शाहजहां—बुलाओ ।

(क़ाजियों का गौल हाजिर होता है)

काज़ीसुलैमान—शहन्शाह सलामत, सलाम अलेकुम ।

शाहजहां—वालेकुम सलाम, काजीसाहब मिजाज शरीफ ?

काजी सुलैमान—(शाहजहां के हाथ को बोसा देकर) हजूरकी परवरिश, जनाब की इनायत, खुदा की महरबानी।

तमाम काजी—जहांपनाह सलामत, शाहन्शाह सलामत, गरीब परवर सलामत, हुजूर अनवर सलामत !

शाहजहां—काजी साहब ! नवाब साहब की जबानी आप की खिदमत इस्लाम और सलतनत के अहकाम की तामील का हाल सुन कर ईजानिब को हद से ज्यादा मसर्रत हासिल हुई, अल्लाह ताला आपको इससे भी ज्यादा तौफीक अता करे।

काजी सुलैमान—हजूरवाला यह सब जनाबही का इकबाल है, जब आं हजरत का लुत्फो करम हमारे शामिल हाल है, तो दुश्मनों ने इस्लामके गरदन उठाने की क्या मजाल है, मगर इस मुकद्दमे में हम खादमाने दीन व रजाकाराने सल्तनत को जिन मुश्किलात का सामना करना पड़ा, वह न सिर्फ हमारा ही दिल जानता है बल्कि तमाम जमाना हमारी सरगर्मियोंको मानता है। कुफ्फार ने तो मुखालिफत करनीही थी मगर गजब तो यह है कि बहुत से मुसलमान भी उन कीहमदर्दी का दम भरने लगे, और अलानियां ईमान

फ़रोशी करने लगे। मिरज़ा अमीरबेग साहब भी उनसे डर गये और मुक़द्दमे का फ़ैसला करने से कानों पर हाथ धर गये, मगर भला हो नवाब साहब का खुदा इनका ईमान सलामत रक्खे, जिन्होंने सल्तनत की अज़मत को सम्भाला और इसलाम के डूबते हुए बेड़े को भवर से निकाला। वरना अगर खुदा न ख़्वास्ता इस मुक़द्दमे में हमें नाकामयाबी हो जाती तो इस्लाम और सल्तनत इस्लाम के लिये एक बड़ी भारी खराबी हो जाती। कुफ्फ़ार के इस क़दर हौसले बढ़ जाते कि आज बीबी साहिबा को कोसा कलको समेत जूतियों के मसाजिद पर चढ़ जाते।

शाहजहां—क़ाज़ीसाहब! हम आप की इन खिदमात हसनो से बहुत महज़ूज़ हुए हैं, लिहाज़ा हम चाहते हैं कि आपको और आपके मुताल्लिक़ीन को नीज़ उन अशख़ास को जिन्होंने इस मुक़द्दमे में आप का साथ दिया है, खलअत व इनाम इकराम दें ताकि वह लोग आयन्दा भी कार सरकार व खिदमात इस्लाम को तन्दही से अन्जाम दें। क्या आप के अजीज़ व अक़ारिब में से कोई शख़्स जिसने इस मुक़द्दमे में आप का हाथ बटाया हो, ऐसा तो नहीं

रह गया जो यहां न आया हो ?

काजी के तमाम लड़के—अब्बाजान हम सब हाजिर हैं।

काजी के पोते—दादाजान हम भी सब हाजिर हैं।

दूसरे तमाम काजी—चाचाजान हम भी हाजिर हैं, ताया साहब हम भी मौजूद हैं, खालू साहब हमभी आगये हैं, मामू साहब हम भी बैठे हैं।

महरमअली—किबला काजी साहब हमभी पहुंच गये हैं।

सुलैमान—बैठ जाओ, बैठ जाओ ज्यादा गुल गपाड़ा न मचाओ।

शाहजहां—गरमी, ओहो इतनी गरमी ?

नवाब—क्या वजह है जो दुश्मनों की तबियत इस कदर नासाज है।

शाहजहां—कुछ समझ में नहीं आता है कई रोज से आबादी से बहुत दिल घबराता है। मल्लाह को बुलाकर किश्तियां तैयार कराओ, दरिया की सैर से दिल बहलायेंगे, और इनाम व इकराम भी दरिया के परले पार ही दिये जायेंगे।

नवाब—(चोबदार से, तमाम मल्लाहों को हुक्म दोकि अपनी २ किश्तियां तैयार करें और बर लबे दरिया शहन्शाह सलामत की सवारी का इन्तजार करें।

चोबदार--जो इरशाद।

(तमाम क़फिला रावी नदी के किनारे पहुंचता है)

शा जहां—नवाब साहब! सब से पहले आप तशरीफ ले जाइये, और पहले किनारे पर पहुंच कर मुनासिब जगह पर फर्श वग़ैरा का इन्तज़ाम करवाइये।

(नवाब चला गया)

शाहजहां--(क़ाज़ी से) आप आप मय अपने जुमला लवाहक़ीन के किश्तियों में सवार हो जाइये, और परले पार पहुंच कर हर एक को उसके मनसब के लिहाज से नम्बरवार बिठलाइये, ताकि तक़सीम इनाम में किसी किस्म का शोर शराबा न होने पाये, जिसको बुलाया जाय वही आये, हम थोड़ी देर इधर उधर दिल बहलायेंगे और दरियाकी सैर करते हुये वहां पहुंच जायेंगे।

क़ाज़ी—बहुत मुबारिक (अपने साथियों से) जल्दी २ किश्तियों में सवार होओ और अल्लाह अकबर का नारा बोलो।

शाहजहां--अरे मल्लाहो! आओ

मल्लाह—बादशाह सलामत!

शाहजहां—देखो दरिया ज़रा चढ़ाव पर है और क़ाज़ी साहब का तमाम कुनबा तुम्हारी नाव पर है, ज़रा होशियारी से किश्ती चलाना, और जहां तक हो सके धार से बचा कर ले जाना। (कान में चुपके से कुछ कह कर) आगया समझ में, अगर तामील हुक्म में ज़रा भी फ़र्क़ हो गया समझ लो कि तुम्हारा कुनबा इनकी जगह गर्क़ हो गया।

(किश्ती दरिया में चलती है)

काजी सुलैमान—शुक्र अलहम्द लिल्ला हमने दीन की खिद्मत की अल्लाह ने हमें याद फ़रमाया।

दूसरा क़ाज़ी—जी हां शहन्शाह आलम खुद हमारी हौसला अफ़ज़ाई करने आया।

तीसरा—खुदावन्द करीम ने इस्लाम का बोलबाला किया।

चौथा—मेरे मौला ने इस्लाम के दुशमनों का मुंह काला किया।

पांचवां—जिन्होंने कुफ्फार की हिमायत की थी अब उन्हें भी मज़ा चखायेंगे।

छटा—ज़रा आज की कारवाई होले फिर उन्हें भी हाथ दिखायेंगे।

सुलैमान—बेशक उन ईमान फरोशों को ज़रूर सज़ा दिलवायेंगे वरना फिर हमारे रास्ते में काँटे फैलायेंगे। मगर यह उस हालत में हो सकता है जब सब इस बात का हलफ़ उठायें, जो एक बात बोले दूसरा उसकी ताईद में ज़बान खोले।

तमाम काज़ी—हम इस बात का हलफ़ उठाते हैं।

सुलैमान—अगर कोई इसमें फर्क करे

तमाम काज़ी—खुदा उसका बेड़ा गर्क करे।

(किश्ती डगमगाती है)

काज़ी-(मल्लाह से)अरे संभाल, अरे संभाल किश्ती को इस धार से निकाल।

मल्लाह-अब किश्ती का निकालना सख्त दुश्वारहै, क्योंकि पानी की धार बहुत जोरदार है। यह सब तुम्हारी नीयतों का फल है, किश्ती में बैठकर तमाम जमाना यही कहा करता है, या अल्लाह! फजल कर या मौला बेड़ा पार कर, बरखिलाफ़ इसके तुम शुरू ही से यही कहते रहे, उसका बेड़ा गर्क हो, इसका बेड़ा गर्क हो अरे नामुरादो! कभी किश्ती में बैठ कर ऐसी बद दुआयें मांगा करते हैं।

(किश्ती में पानी भर गया)

तमाम काजी-(चिल्लाकर)अरे गई किश्ती, कोई आइयो दौड़ियो, बचाइयो, या अल्लाह! मदद! या ख्वाजा खिजर महर! या जुल जलाल, तूं ही इस बेड़े को निकाल! तोबा इलाही! आ गई तबाही, या मेरे परवरदिगार! लगादे किश्ती को पार। हाय मर गये, मर गये, तोबा, तोबा, तोबा।

शाहजहां-(साइड में) अरे बेहया! अब तुझे खुदा याद आ गया :—

यह मिला इनाम तुझको बेगुनाह के खून का।
बेड़ा भर के डूबता है बेरहम मलऊन का॥
अब दुहाई और तोबा सब तेरी बेसूद हैं।
तेरे साथी और हिमायती सबके सब मौजूद हैं॥

(प्रगट) अरे कोई है तो दौड़ो, काजी साहब बेचारे का तो बेड़ा ही गर्क हो गया।

(किश्ती डूब गई)

नवाब-(वापिस आकर) जहांपनाह गजब हुआ, आखिर किश्ती के डूबने का क्या सबब हुआ?

शाहजहां-अल्लाह की मर्जी, काजी साहब बिचारे किस उम्मेद पर घर से आये थे, और क्या क्या

तमन्नायें साथ लाये थे। मगर यह किसको खबर थी कि यहां और ही गुल खिलने वाले हैं, हमारे मनसूब और इनके इरादे सब खाक में मिलने वाले हैं। अच्छा खुदा उन्हें जहन्नुम-नहीं-नहीं, जन्नत नसीब करे।

नवाब-वह परवरदिगार बड़ा बेनियाज है; हमें उसके कामों में दखल देने का क्या मजाज़ है क्योंकि दुश्मनों की तबियत पहले ही नासाज़ है, इसलिये तबा मुबारिक को ज्यादा मुकद्दर न बनाइये, और वापिस क़दम रंजा फ़रमाइये।

शाहजहां-अफसोस कि हम उनकी कोई इमदाद न कर सके, यहां तक कि बिचारों के जनाजे पर फ़ातिहा भी न पढ़ सके।

नवाब-अच्छा हजूर! जो अल्लाह को मंजूर, तबियत को ज्यादा परेशान न कीजिये, अब वापिसी का हुक्म दीजिये।

(सब वापिस आते हैं और महल के बालाखाने में बैठ जाते हैं)

शाहजहां-सब अराकीन को इजाज़त दीजिये, ज्यादा झमेले से नफरत आती है, तबियत कुछ आराम करने को चाहती है।

(सब चले जाते हैं)

नवाब-जहांपनाह कुछ थोड़ा बहुत तनावुल फरमा लीजिये

ताकि यह कसाफत दूर हो जाये, और आं हजरत की तबियत कुछ मसरूर हो जाये।

शाहजहां-तोबा, तोबा ऐसी हालतमें कौन खाना तनावुल करसकता है, कब लुकमां हलकके नीचे उतर सकता है, मगर हां अजीज खान खाना! यह राज अभी तक हमारी समझ में नहीं आया, कि अल्लाहतआला काजीसाहब पर ऐसा गजब का जवाल क्यों लाया बिचारे का सब कुछ यहीं धरा धराया रहगया, और सारा कुनवा एक आन वाहिद में बह गया।

नवाब—अल्लाह की शान, यह हादिसा किसी को शान न गुमान। वल्लाह-आलम उनसे ऐसा कौनसा कसूर हुआ, जो कहरे इलाहीका ऐसी बुरी तरह जहूरहूआ।

शाहजहां-बिचारे का खाना खराब होने में क्या कसूर है मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि किसी फकीर दुरवेश या मजलूम की बददुआ का असर है।

नवाब—इसकी निस्बत या तो काजी साहब जानते होंगे याउस आलम-उल-गैब को इल्म है, महदू-उल-अक्ल इनसान उसके मुताल्लिकक्या रायजनी कर सकताहै।

शाहजहां—क्या उस मकदूल हिन्दू तिफलक और उसके सितमजदा वालदैन की बद दुआ तो यह रंग नहीं

लाई कि बिचारे काजी साहब की नस्ल भी दुनियां में न रहने पाई ?

नवाब—(कुछ भयभीत होकर) मुमकिन है ।

शाहजहां—अगर हमारा यह ख्यालात दुरुस्त और ठीक है, तो इस जुर्म में तो आप हीं शरीक हैं ।

नवाब—(पसीने में तर-बतर होकर)शराकते जुर्म से तो इनकार नहीं मगर······

शाहजहां—हैं, हैं, जरा देखना यह नीचे से किस के रोने की आवाज आ रही है ।

नवाब—(दरीची से झुक कर) जहांपनाह ! कोई नहीं ।

शाहजहां—(नीचे से धक्का देकर) चल अगर कोई नहीं तो तू भी नहीं :—

अज मकाफाते अमल गाफिल मशो,
गन्दुम अज गन्दुम बरोयद जौ जि जौ*

[चिल्लाकर] अरे कोई दौड़ियो, आइयो, गजब हो गया, नवाब साहब बालाखाने से नीचे गिर गये ।

खिदमतगार—हजूर बाला ! नवाब साहब इस जहान से कूँच कर गये ।

---

*कर्म के फल से असावधान न हो, गेहूं से गेहूं काटेगा जौ से जौ ।

शाहजहां—अच्छा हुक्म ऐज़दी इस तरह था, जनाज़ा उठाओ, और कबरिस्तान में दफ़न करवाओ।

दृश्य ६ सीन ३

दरबारे आम

[बादशाह सलामत ऊंचे मसनद पर तशरीफ़ फ़र्मा] हैं, अराकीने सलतनत अपने करीने और मरतबे के लिहाज़ से बैठे हुए शहर के हर खास व आम को बज़रिये मनादी तलब कराया गया है खलकत का गैर मामूली हजूम हो रहा है, हर शख्स शाहजहां की लब कुशाई का मुतन्ज़िर है।

शाहजहां—अराकीन सलतनत व मुअज्ज़ीज़ शहर !! क़ाज़ी सुलैमान की इबरत खेज़ तबाही और नवाब खाने आज़म की हैरतअंगेज़ मौत से गालिबन आप लोगों के दिलों में मुख्तलिफ़ ख्यालात होंगे, और हर शख्स अपना अक़ल के मुताबिक़ कयास के घोड़े दौड़ाता होगा कोई इनका अम्र इत्तफ़ाकिया ख्याल करता होगा कोई इसको अम्र रब्बी तसव्वुर करता होगा, मगर हम इनकी मौत को सीगे राज़ में रखना नहीं चाहते

बल्कि असलियत को बेनकाब किये देते हैं। वाजह रहे कि काजी सुलैमान की तबाही और नवाब खानखाना की मौत न तो अम्र इत्तिफाकिया है और न मशीते एजदी, बल्कि उनके अपने आमाल का नतीजा और करनी का फल हुआ है, और यहसब कुछ हमारे इशारे से हुआ है। एक बेगुनाह और मासूम हिन्दू तिफ़लक का कत्ल अभी आपको भूला न होगा, इन नाबकारोंने मकतबी लड़कों के तनाजे को मजहबी रंग देकर ऐसी अँधेर गर्दी मचाई कि बज़अम खुदही हुक्मरां बन बैठे, अगर इन जालिमों को करार वाकई सजा देकर अपने कैफ़रे किरदारको न पहुंचाते तो सल्तनत और इसलाम पर यह एक कैसा बदनुमा धब्बा था, जिसको सात समुन्द्र का पानी भी नहीं धो सकता था, और आइन्दा हरकसो नाकस को इस क़िस्म का जुल्म नारवा करने की जुरअत होती। अरोकोन सलतनत जंग कान खोल कर सुनलें कि अगर आइन्दा किसी की निस्बत इस किस्मकी कारवाही ईजानिब के गोश गुजार हुई तो इन दोनों हस्तियों का हश्र*अपनी आंखों के सामने

*अन्त।

रखलें। आप लोग को शक होगा कि दो शख्श क़सूरवार, मगर दोनों की सजा में इस कदर तफावुत क्यों, एक के साथ इस कदर सख्ती कि उसको मय लवाहकीन गर्काब* किया गया, और दूसरे की सजा महज उसकी जात खास तक महदूद। शायद बवजह रिश्तेदारी के हमने सूबा लाहौर के साथ इस क़दर रियायत की है? मगर इस तफावुत की वजह जुर्म की नौईयत है, न कि रिश्तेदारी का इमत्कार। क़ाजी सुलैमान के साथ उसके अजीज़ अकारब और लवाहकीन उसके मनसबा बने हुए थे, और हरएक की कोशिश मज़लूम हक़ीकतराय को क़त्ल कराने की थी, मगर सूबा लाहौर सिर्फ तन तनाह इस जुर्मका मुर्तकिब हुआ है, अलावा अज़ीं उनकी मन्शा भी इस मासूम बच्चे को हरगिजर ऐसी संगीन और बेरहमाना सजा देने की न थी, मगर उस गोला बयाबानी, बलाये आसमानी और मसाइब नागहानी ने उनकी कुछ पेश न चलने दी। डराकर धमकाकर कुफ्र और जिहाद के फ़तवेका खौफ दिखाकर उनको उस मासूम के क़त्ल करने पर मजबूर किया। तिस

*पानी में डबोना।

पर भी सवाल हो सकता है । जब सूबा लाहौर बजात खुद इस जुर्मका मुर्तकिब नहीं हुआ तो उसको सजा क्यों दी गई ? इसका जवाब यह है कि जब उसको इस बात का इल्म था कि वह तिफ़लक बिल्कुल बेकसूर है तो महज काज़ियों के जोर देने पर उसने कत्ल का हुक्म क्यों दिया, उसको वाजिब था कि इस मुकदमे को हमारे हज़ूर में पेश करता, या कम से कम हमारी इजाज़त हासिल करता । हमारे ख्याल में किसी शख्शको अब किसी किस्म के शक व सुबह की गुञ्जायश न होगी ।

हाजरीन–जहांपनाह ! हजूर के इन्साफ नौशेरवानी व तर्जे हुक्मरानी ने हर खासो आम, क्या अहले हिन्द और क्या अहले इस्लाम, सब के दिलों पर ऐसा सिक्का जमाया है, कि हर शख्स सल्तनत की तारीफ और तौसीफ के गीत गा रहा है और आं हजरत की तरक्की उम्र व दौलत के लिये अल्लाह ताला की दरगाह में हाथ उठा रहा है ।

शाहजहां—(आंखों में आंसू लाकर) अगर उस मासूम के वालदैन इस मजमे में हों तो महरबानी करके आगे आजायें ।

भागमल व कौरां—(आगे होकर) खुदा हजूर का साथी सलामत रक्खे !

शाहजहां—(रोते २ घिग्घी बन्ध गई, और एक लफज भी जबान से न बोल सके ।)

भागमल—सब्र करो हजूर वाली सब्र करो, अगर रोने धोने से कुछ बनता, तो हम ही सब कुछ बना ले । कोई इन्सान रूठ जाता तो खुशामद करके मना लेते । मगर किस्मत रूठी का क्या इलाज, अच्छा सब्र करो महाराज !

शाहजहां—(रूमाल से आंसू पोंछकर, भागमल मजलूम भागमल ! ! सितमजदा भागमल ! ! ! निरभाग भागमल ! ! ! तेरी और इस मोअजिज्ज खातून की तरफ देख २ कर मेरा कलेजा निकला जा रहा है, सब्र और इस्तकलाल हाथ से निकला जा रहा है, आंखों में आंसुओं की जगह खून भर रहा है, मगर मुझे तआज्जुब है कि तू किस तरह से सब्र कर रहा है ?

भागमल-क्या करता, बहुतेरा रो लिया पीट २ कर अपना आप खो लिया, जब कुछ बनता दिखाई न दिया, तो आखिर झक मार कर सब्र किया ।

शाहजहां—अच्छा यह समझो कि अल्लाह को इसी तरह मंजूर था उसके हुक्म में दखल देनेकी न मेरी ताकत थी, न तुम्हारा कसूर था। मगर हां जिनका कसूर था, और जिनको अपनी ताकत का जौम और गरूर था उनको ऐसी इबरतनाक सजायें दी हैं कि कबरों में उनके आबा व अजदाद कांपे, और घरोंमें उनकी औलाद कांपे। गो यह सजा काफी होगई और उनके जुर्म की भी तलाफी होगई, मगर तेरे और इस नेक बख्त के कलेजे में जा जख्म हो चुका है उसको मैं किसी तरह नहीं मेटा सकता, यानी तेरे मरहूम फर्जन्द को अपनी इन्तहाई ताकत और बड़ी से बड़ी कुर्बानी करके वापिस नहीं बुला सकता। हां अगर वक्त से पहले खबर हो जाती, तो इन्शाअल्लाह यहां तक नौबत न आती अब इतना कर सकता हूं कि मैं तुम्हारा बेटा बनकर बतौर फर्जन्दा हकीकी के तुम्हारी खिदमत गुजारी करूं, तुम्हारा हुक्म बजा लाऊं और तुम्हारी ताबेदारी करूं।

भागमल-हुजूर ने जिस कदर हमारी दिलजोई तशफ्फी और दस्तगीरी फरमाई है, उसका शुक्रिया अदाकरने के लिये मेरे पास अलफाज नहीं, एक मैं क्या

किसी फर्द बशर को भी आपकी नेक नीयती और मुनासिब मिजाजी पर ऐतराज नहीं। ऐसे अलफाज अपनी जुबान से न कहिये, आप मेरे और नीज तमाम रैय्यत के मां बाप बन कर रहिये।

शाहजहाँ—(कौरां से) मेरी नेक दिल हमशीर, फर्जन्द की मौत का तीर जो तेरे कलेजे में लग चुका है, उसको मैं तो क्या खुदा भी नहीं निकाल सकता, ताहम जो सजा मैंने तेरे बेटे के कातिल को दी है, उससे तो तुझे इतमीनान हो गया होगा?

कौरां—नहीं, हरगिज नहीं, अगर मुझको पहले से ही इस बात का इल्म होता कि आप ऐसी सख्ती को अमल में लायेंगे तो मैं आपको हरगिज ऐसा संगीन और आपत्तिजनक कार्रवाई करने की इजाजत न देती मेरा बेटा तो किसी सूरत में वापिस नहीं आ सकता फिर उन बेचारों की जानें भी क्यों तलफ़ की गईं।

हाजरीन—मरहबा, मरहबा ऐ नेक सीरत व फरिश्ता खसलत खातून! मरहब, तेरे इस्तकलाल को आफ़रीन, तेरे नेक खयालात को आफरीन तेरे पाक जजबात को आफ़रीन, तुझे आफ़रीन तेरे मां बाप को आफ़रीन।

शाहजहां—सद रहमत, सदा रहमत, तेरे इन पाकीजा खयालात को सद रहमत, बेशक अगर मैं तमाम जमाने को भी तहो बाला कर डालूं, तो भी नामुमकिन है कि तेरे नूर नज़र को वापिस बुला लूं। मगर यह सजायें इसलिये दी हैं कि दूसरे इससे इबरत हासिल करके इस किस्म की शरारतों से बाज आयें और सल्तनत के अन्दर ऐसे फितूर न मचायें।

एक अजनबी—होगया, होगया, होगया।

शाहजहां—क्या हो गया।

अजनबी—मजलूमों का इन्साफ, रस्ती का इनकिशाफ
इस्लाम का बोलबाला, बेईमानों का मुंह काला
सच और झूठ में फर्क, ज़ालिमों का बेड़ा गर्क—
मुसलमां भी रह गये और रह गया इस्लाम भी।
सलतनत भी बचगई और सलतनत का नाम भी॥
वरना इन क़ाज़ियों ने जो मचाया था फितूर।
सलतनत को उसका समरा भुगतना पड़ता ज़रूर॥

शाहजहां—तुम्हारा क्या नाम है?

अजनबी—खुदादोस्त।

शाहजहां-ओ खुदादोस्त! वाक़ई तुम इस्मे-बा मुसम्मी हो, हम तुम्हारी अखलाकी जुरअत की बहुत तारीफ सुन

चुके हैं और इसके मावजे में तुमको यह खलअत देते हैं।

खुदादोस्त-अव्वल तो मेरी कोई ऐसी खिदमात नहीं जिन के ऐवज़ में इस इज्जत अफज़ाई का मुस्तहिक समझा जाऊं, अगर होंभी तो मैंने आपका फर्ज मनसब समझ कर उसको अदा किया है, न कि किसी इनाम इकराम या मावजे के लालच से, इसलिये मैं हजूर का यह अतिया निहायत शुक्रये के साथ वापिस करता हूं—

होगया ठण्डा कलेजा मिल गया सारा इनाम,
मिलगया इन्साफ़ मज़लूमों को हजरत लाकलाम।
मौतरिफ हैं आप के इन्साफ के हर खासोआम,
कर दिया इस्लाम को और सल्तनत को नेकनाम।
आपका साया हमारे सिरों पर कायम रहे,
ता क़यामत आपकी यह सल्तनत क़ायम रहे।

शाहजहां—चौधरी निगाही !

निगाही—हजूर वाला !

शाहजहां—क्योंकि तुमने मरहूम हकीकतराय और उसके वालदैन के साथ हमदर्दी और फराखदिली का सबूत दिया है इसलिये हम तुम्हारी इस खुदा तर्सी का ऐतराज़ करते हैं और जिस कदर तुम्हारी जागीर है,

पुश्त दरपुश्त के लिये उसका लगान माफ़ करते हैं।

निगाही—हज़ूर की परवरिश।

शाहजहां—मिरज़ा अमीरबेग!

अमीरबेग—ग़रीब निवाज़?

शाहजहां—तुम्हारी मुनसिफ़ मिजाज़ी और सलतनत की खैरख्वाही के सिलसिले में आज से तुम को सूबा लाहौर का नाज़िम मुकर्रिर किया जाता है।

अमीरबेग—हज़ूर की गरीब नवाज़ी।

शाहजहां—नीम महरूम के मज़ार के लिये जिस क़दर रुपये की जरूरत हो वह शाही खज़ाने से दे दिया जाये और जिस तारीख को यह शहीद हुआ है, हर साल उसी तारीख को उसका याम शहादत मनाया जाये और हर शख्स उसके मज़ार पर अक़ीदत के फूल चढ़ाये।

अमीरबेग—हुक्म हज़ूर को बसरो चश्म तामील होगी।

शाहजहां—भागमल!

भागमल—बन्दा नवाज़?

शाहजहां—आख़िर में मेरी तुम से एक इल्तिजा है मुझे उम्मेद है कि तुम उसको मंज़ूर करोगे?

भागमल—हुक्म अदूली की क्या मकदूर है।

शाहजहां–अब तुम अपने इस जामे दुरवेशी को उतार डालो और जाकर अपना घर संभालो। हकीकतराय तोअब वापिस नहीं आसकता, मुमकिन है वहमाबूद हकीकी अपनी कुदरत कामिलासे कोई दूसरा हकीकत इनायत करके तुम्हारे रंजो अलम को दूरकरे तुम्हारे कलेजेको ठंडक बख्शे, तुम्हारे दिलको मसरूर करे।

भागमल—जहांपनाह :—

वक्त पीरी शराब की बातें
ऐसी है जैसे ख्वाब की बातें.

आगे ही गृहस्थ के बहुतेरे मजे ले चुके, बहुतेरा अपनी जान को दुःख दे चुके, अब घर में जाकर क्या बनायेंगे, इसी तरह फिरते फिरते जहां मौत आ जायेगी वहीं मर जॉयगे।

शाहजहां–नहीं तुम जिद न करो उसकी दरगाह से कभी ना उम्मेद नहीं होना चाहिए, वह कारसाज है, वह रहीम है वह बे नियाज है, जब तक तुम से हां नहीं करा लूंगा, उस वक्त तक खाना पीना अपने लिए हराम बना लूंगा।

भागमल—दिल तो मुतलक न चाहता था मगर आपने कसम बड़ी सख्त उठाईहै, बहुत बहतर, आपके हुकम

की तामील करेंगे।

शाहजहां-जुमला हाज़रीन आने २ अक़ायद के मुताबिक़ बारगाह आली में दस्त बदुआ हों कि वह खालिक़ हक़ीक़ी अपनी बख्शिश और रहमत से इनको एक फ़र्जन्द अता करे।

अहले इस्लाम-(दो ज़ानू होकर)ऐ पाक परवरदिगार। मालिके दो जहान! वालिये कौनो मकान! रहीमो रहमान! तू इन मज़लूमोंका दिल अपने फ़ज़्लोकरम से शाद कर और एक फ़रज़न्द अता करके इनकी गुलशने हस्ती आबाद कर।

शाहजहां—आमीन, आमीन, आमीन।

अहलेहिन्दू-हे सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर! आप दया के भण्डार हैं, दया के सागर हैं, आप निराश्रयों के आश्रय हैं, आप अधीरों की धीर बंधाने वाले हैं। प्रभो! हमारी निष्काम प्रार्थना स्वीकार कीजिये, और इनको एक चिरंजीव पुत्र प्रदान करके इनका उद्धार कीजिये।

शाहजहां—आमीन, आमीन, आमीन।

खुदादोस्तः—

ऐ रहीमो ऐ करीमो ऐ खुदाये जुल जलाल,

बख्श अपनी रहमने कामिल से इनको एक लाल।
मैं तुम्हारी बख्शिशो रहमत की दिल से दाद दूं,
आये वह दिन जल्द मैं इनको मुबारिक बाद दूं।

शाहजहां—आमीन ! मेरा दिल गवाही देता है कि वह किर्दगार जरूर हमारी दुआ मंजूर करेगा और अपनी रहमत से तुम्हारे दिलों को मसरूर करेगा जब अल्ला तआला अपनी कुदरत कामला का करिश्मा दिखलाये, और वह यौम मुबारिक और साअत सईद लाये, तो हमें फौरन खबर पहुंचाना और पहली दफा हमारे यहां से आया हुआ कपड़ा मेरे उस बच्चे को पहनाना।

भागमल व कौरां (गाना भैरवी ताल दादरा)

ईश्वर तुम्हारे कामों का तुमको ही ज्ञान है,
तेरे कार्यालय हैं सब से निराले,
न पाया किसी ने भी भेद।
करता तू ही धरता तू ही,
कुदरत तेरी महान् और रचना महान् है॥
ईश्वर तुम्हारे कामों का...
पल में तू शाह करदे पल में तू गदा करदे,
पल में करे बैनवा,

लीला तेरी जाने तू ही,
भेदों का तेरे जानना क्या आसान है।
ईश्वर तेरे कामों का...
न कुछ कह ही सकते न चुप रह ही सकते,
है गूंगे के गुड़ की मिसाल,
ध्याये तुझे गाये तुझे,
इन्सान के मुंह में कहां इतनी जबान है।
ईश्वर तुम्हारे कामों का...
वर्षों समाधि में आयु घुला दी,
भुला दी सभी सुध बुध,
पाया नहीं उसको कहीं,
"यशवन्तसिंह" तू किस लिये इतना हैरान है।
ईश्वर तुम्हारे कामों का...

* समाप्तम् *।

नोट—कहते हैं कि इतने हृदयों से निकली हुई प्रार्थनायें परमेश्वर ने स्वीकार की और नियत समय के पश्चात भागमल के घर में एक पुत्र रत्न का प्रकाश हुआ। दिल्ली सम्राट शाहजहां ने कुरता टोपी और सुनहरी-पङ्कन की रस्म अपने हाथ से अदा की।

कृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, देहली।